"श्रीनाथोविजयते"

रसिक रस मंञ्जरी

बसंत, होरी, धमार एवं रसियाँ के पद

दासानुदास - विद्यारत्न व्यास (मो. 8875321699)

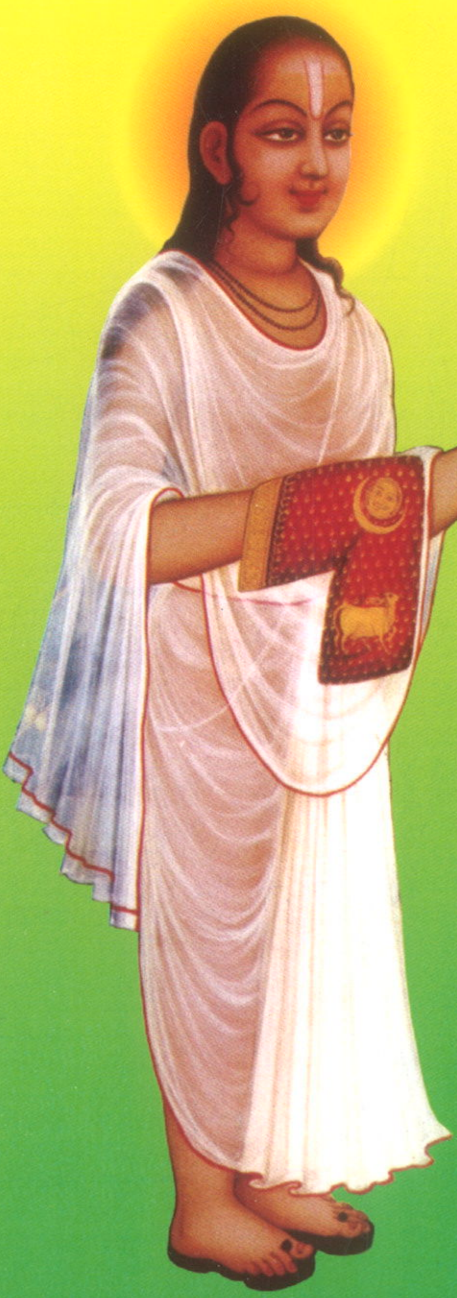

अखिल भूमण्डलाचार्य 108 पू.पा. वल्लभाचार्यजी

श्री गोपीजन वल्लभाय नमः श्री नाथो विजयते श्री कृष्णाय नमः

करार विन्देन
पदारविन्दं,
मुखारविन्दे
विनिवेशयन्तम्।

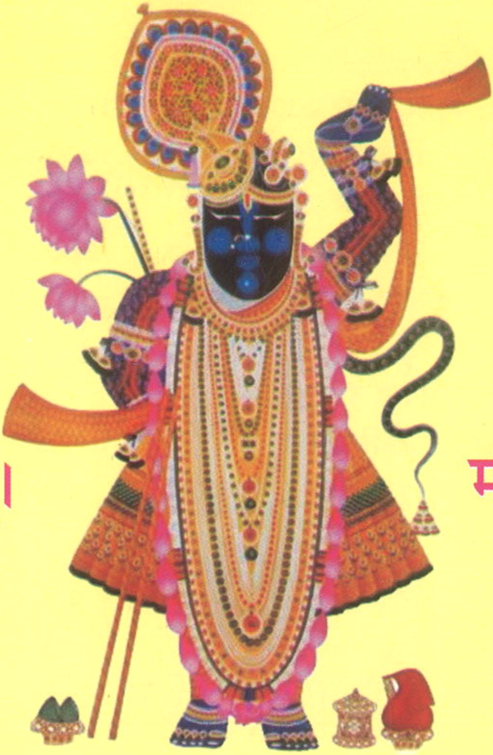

वटस्य पत्रस्य
पुटे शयानं,
बाल मुकुन्दं
मनसा स्मरामि ॥

श्रीपुष्टिमार्गीय कीर्तन एवं रसियाँ संग्रह

रसिक रस मंञ्जरी

वर्षोत्सव क्रम पंचम ग्रन्थ संग्रह

1. चयनकर्त्ता : विद्यारत्न व्यास (श्रीनाथद्वारा) मो.नं. 8875321699
2. सहायक : प्रतिमा व्यास, आत्मजा - आशिता दाधीच (व्यास)
3. ई-मेल पता : vidhyaratanvyash@gmail.com, vrvyas.shrinathji@hotmail.com
4. स्थाई पता : 'ब्रज सौरव' आनन्द नगर, कोठारिया रोड़, श्रीनाथद्वारा (राज.)
5. न्योछावर : 120' श्रीनाथद्वारा से बाहर, डाक या कुरियर खर्च अलग होगा।

।। श्रीनाथो विजयंते ।।

प्रथम अंक	14 दिसम्बर 2005	1000 प्रतियां
द्वितीय अंक	05 सितम्बर 2012	1000 प्रतियां
तृतीय अंक	23 सितम्बर 2014	1000 प्रतियां
चतुर्थ अंक	01 जनवरी 2016	1000 प्रतियां
पंचम अंक	08 मार्च 2017	1000 प्रतियां

प्रकाशक – बृज लीला समर्पण ट्रस्ट
'बृज सौरभ' लाल बाग, कोठारिया रोड़
आनन्द नगर, श्रीनाथद्वारा 313301 (राजस्थान)

न्यौछावर : 120 रु. प्रति ग्रंथ

विशेष :
श्रीनाथद्वारा से बाहर 100 रु डाक कूरियर खर्च अलग होगा

ग्राफिक्स सेटिंग
रमेश कुमार जीनगर,
श्री कम्प्यूटर, श्रीनाथद्वारा, मो.नं. 07737664519

मुद्रक :
न्यू ट्रेक ऑफसैट प्रिन्टर्स, उदयपुर

ग्रंथ प्राप्ति स्थान :

1. विद्यारत्न व्यास, लाल बाग, आनन्द नगर, नाथद्वारा मो.नं. 8875321699
2. अहमद नगर (महाराष्ट्र) प.भ.शैलेष भाई, मो.नं. 09890633811
3. प.भ. विशनलालजी अग्रवाल, श्रीनाथ हवेली मिट्टी का शेर, हैदराबाद मो.नं.09246394872
4. प.भ. विपिन भाई जवैरी, मुम्बई (दहीसर) दूरभाष – 02265736690
5. प.भ. डॉ. चेतना वत्सल परिक, मुम्बई मो.नं. 09820070728
6. प.भ. जगमोहन जी अरोड़ा (हरीप्रिया बुक स्टॉल) विट्ठलनाथजी मन्दिर, श्रीनाथद्वारा (राज.)

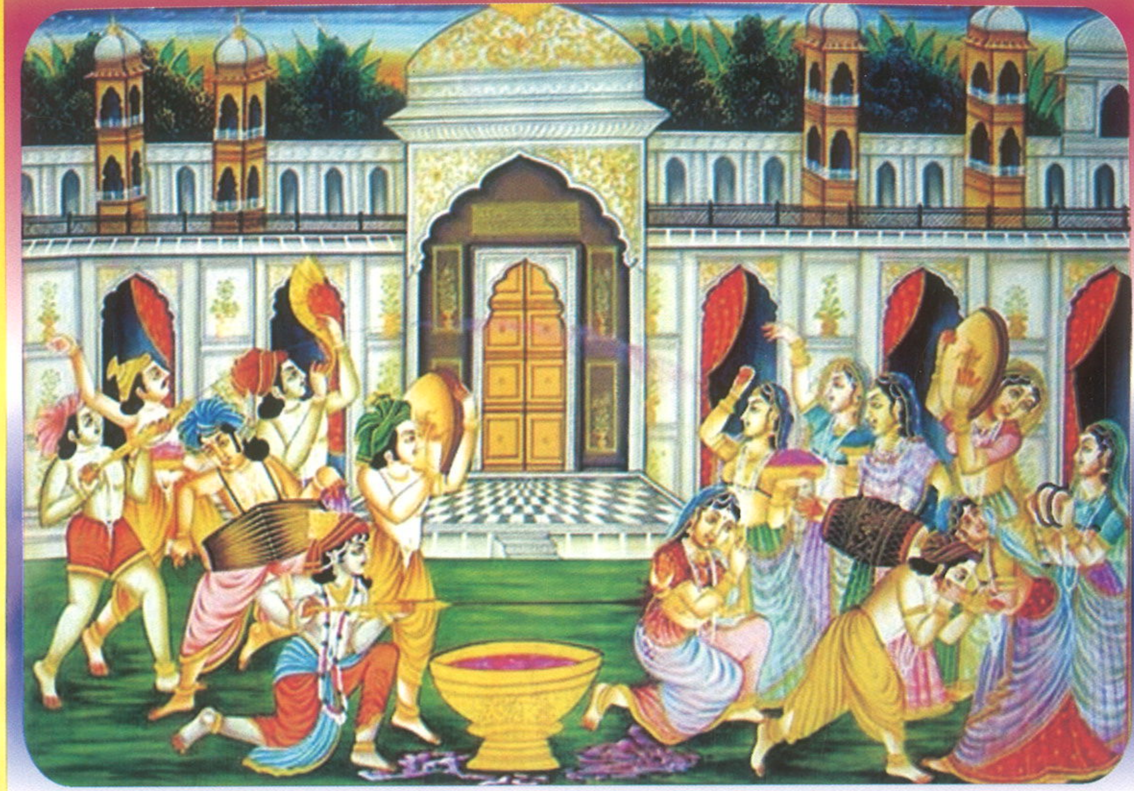

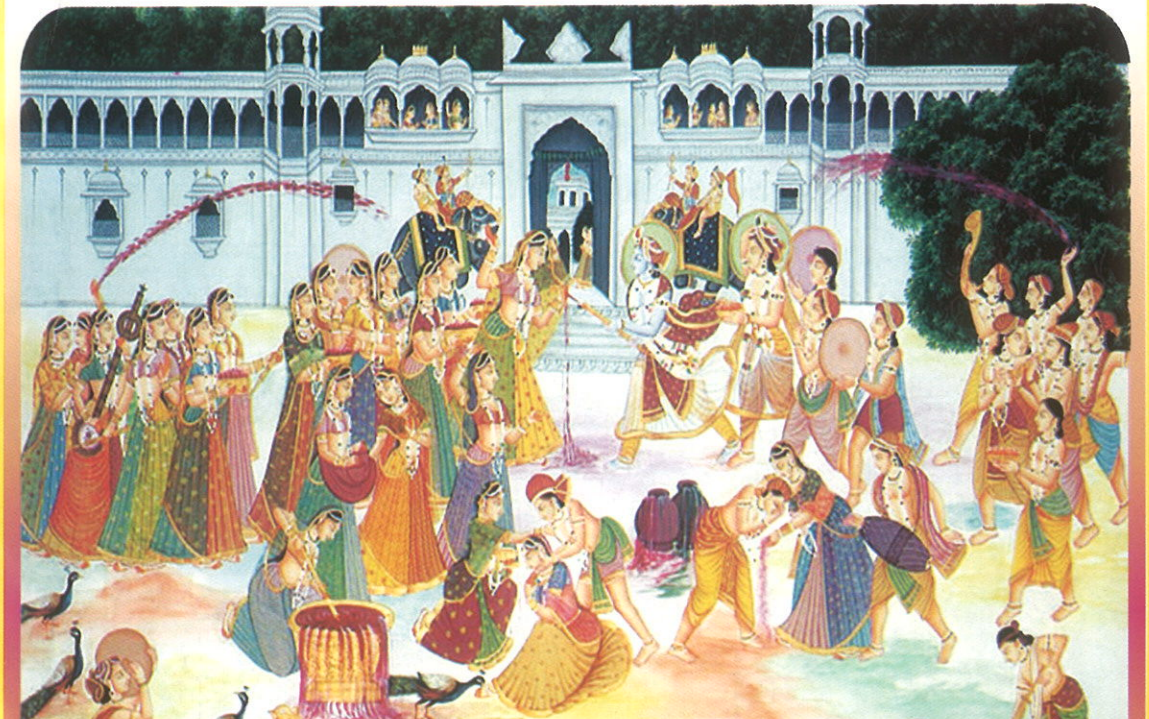

godofindia.com
BRIJBASI
700

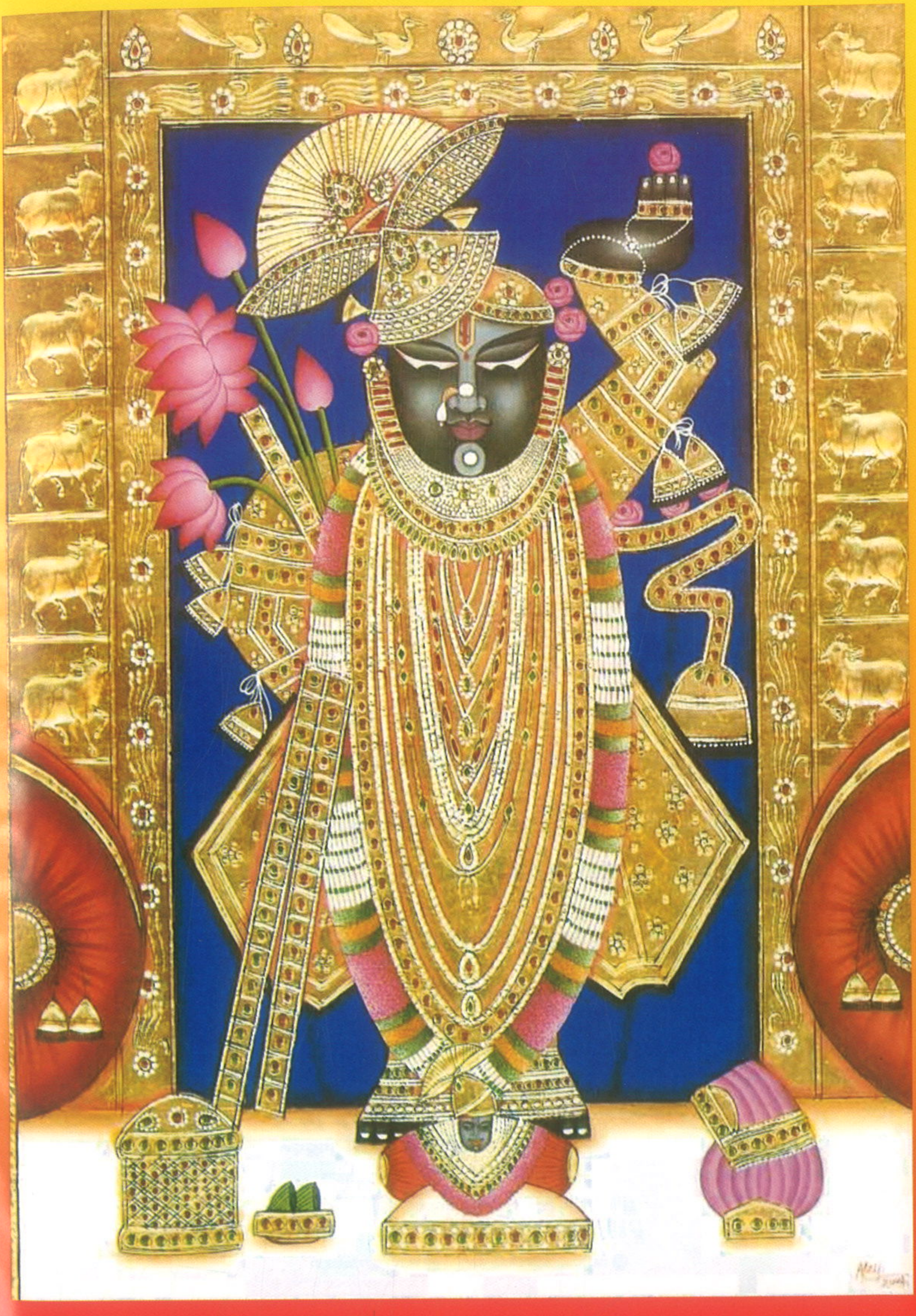

|| श्री गोवर्धनधरः नवनीतप्रिंयौ विजयेते ||

गो.ति.१०८ श्री राकेश जी महाराज

मोती महल
नाथद्वारा,
राजस्थान

क्र. नं. - TRG : 2017 / 963

दिनांक - 12 / 03 / 2017
होलिकोत्सव

श्री विद्यारत्नजी व्यास,

अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि, आप द्वारा पुष्टि मार्गीय सिद्धान्तों के आधार पर बसंत, होरी धमार एवं रसिया ४० दिनों का क्रम वाला ग्रंथ छपने जा रहा है।

"रसिक रस मंञ्जरी" ग्रंथ मौलिक रूप से संकलन किया, यह वैष्णव समाज के लिए श्रेष्ठ उपयोगी सिद्ध होगा।

ग्रंथ संकलन और प्रकाशन के लिए आप साधूवाद के पात्र हो। इसी प्रकार श्रीजी बाबा आपको प्रेरणा देवे।

इसी मंगल कामना के साथ शुभाशीर्वाद !

ति. श्री राकेश

गो. ति. १०८ श्री इन्द्रदमनजी (श्री राकेशजी) महाराज

श्री वल्लभ दर्शन, पोद्दार पथ, सांताक्रुझ, मुंबई ४०० ०५४.
☎ ०२२-२६४९४६४८, २६४९४६५९ ०९८७०२४४०८८
nathdwara@hotmail.com www.nathdwara.in

।। श्री हरि ।।
।। श्री द्वारकेशो जयति ।।

गो. श्री व्रजेशकुमारजी महाराज
(शु.तृ.गृहाधिपति) कांकरोली

स्थान : **वडोदरा**

दिनांक : **10.03.2017**

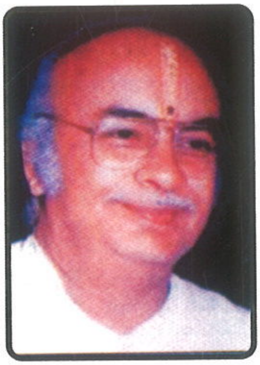

श्री विद्यारत्न जी व्यास
श्रीनाथद्वारा जिला राजसमन्द

बृजलीला समर्पण ट्रस्ट द्वारा पुष्टि मार्गीय सम्बन्धित '**रसिक रस मंञ्जरी**' बसन्त, होरी एवं रसिया के महत्व को समझाने के लिए ऐसे शुभ आशय से आप बसन्त से होरी तक का यह ग्रंथ प्रकाशित कर रहे हो। यह जानकर अति प्रसन्नता का अनुभव हुआ।

प्रस्तुत ग्रंथ में बसन्त, होरी धमार एवं रसिया को सुन्दर ढंग से प्रस्तुत किया है। श्रीप्रभु ब्रजभक्तों के साथ होरी खेले इस प्रकार रसिया के आनन्द से ओतप्रोत होवें। यह ग्रंथ एक विशिष्ट स्थान रखता है। आपका यह प्रकाशन वैष्णवोंपयोगी बने।

ग्रंथ संकलन ओर प्रकाशन के लिए आप धन्यवाद के पात्र हो। आप आपके प्रकाशन के क्षेत्र में सफल होते हुए प्रगति करे। मंगलकामना के साथ शुभाशिर्वाद।

शुभाकांक्षी

गो. व्रजेशकुमार

(तृ.पी. गोस्वामी श्री व्रजेशकुमारजी महाराज)
कांकरोली

पैलेस
श्री द्वारकाधीश मन्दिर
कांकरोली - 313324
फोन : 02952-230001, 230256
फेक्स 02952-231100

श्री राजाधिराज मंदिर
राजाधिराज मार्ग
मथुरा - 281 001
फोन : 0565-2406372

श्री बैठक मंदिर
द्वारकेशबाग,
बडौदा - 390 001
फोन : 0265-2431461

श्री द्वारकाधीश मंदिर
बउआकी पोल, रायपुर चकला,
अहमदाबाद- 380 001
फोन : 079--22141537

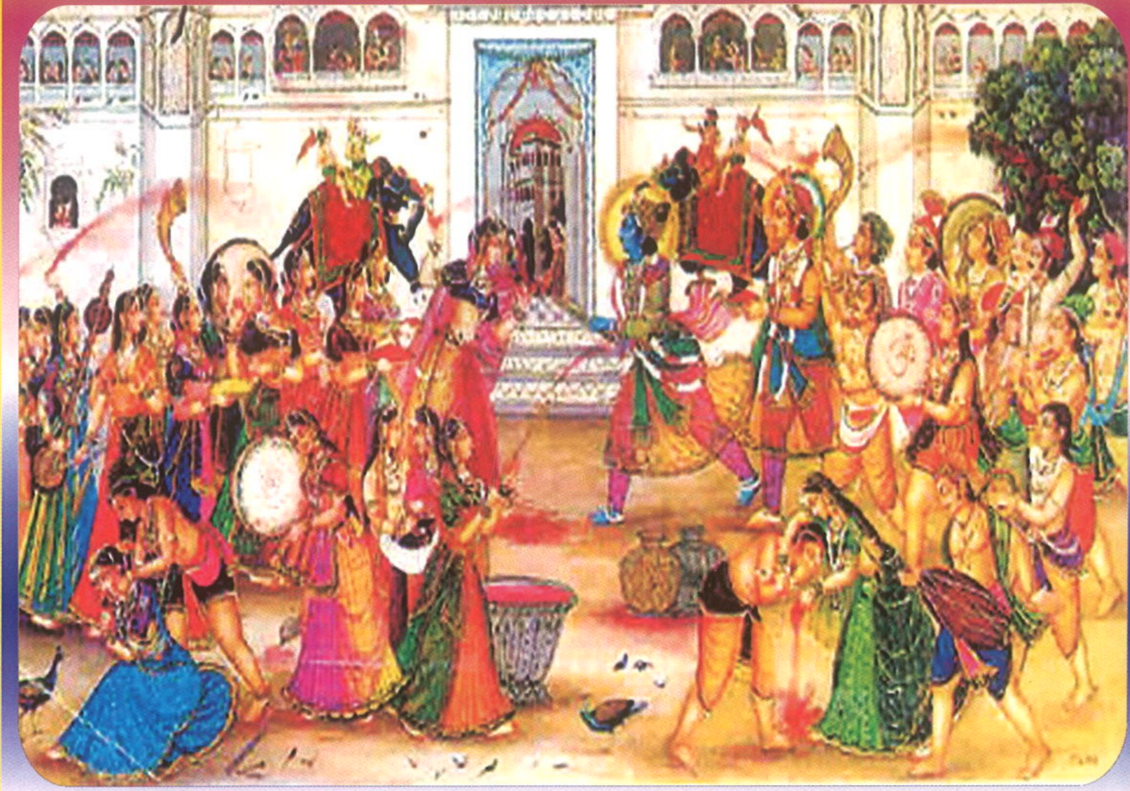

HOTEL Vallabh Darshan

Air Conditioned

A/c Dinning Hall

D.N. Gurjar
Director

Ajay Gurjar
MD
9602740123

A Home Away From Home Fro Royal & Pleasant Stay at Near Shrinathji Temple

Accomodation : All Rooms and Suites Connected with Telephone LED Attached Bath, Running Hot and Cold Water, Lift and backup Generator.

Services : R. Service, Laudary, E-mail, Taxi Facility, Doctor on Call.

Dinning : Break Fast, Sancks, Gujrati Thali, Panjabi Dishes, South Indian, (Capacity 60 Person)

Near Shrinathji Temple, Chopati Bazar, Nathdwara
☎ : 02953-230344, 234935, 230038, 7665816000, 8875025904
E-mail : info@hotelvallabhdarshan.com Web Site : www.hotelvallabhdarshan.com

Chopati
Moti Mahal
ShreeNathJi Temple
Vallabh Darshan

।।श्रीगोपीजन वल्लभाय नमः।। ।।श्रीनाथो विजयते।। ।।श्रीकृष्णाय नमः।।

।। ब्रज लीला हरि पुष्टि सौरभ ।।

।। जानीतं परमं तत्वं यशोदोत्सङ्ग – लालितम्।। (अणु भाष्य)

।। महतां कृपया यद्वत् कीर्तन सुखदं सदा।।

।। श्रीमहाप्रभुजी ।।

चिन्ता संतान हन्तारो, यत्पादाम्बुजरेणवः। स्वीयानां तान्निजाचार्यान् प्रणमामि मुहु र्मुहुः।।
सौन्दर्य निज हृदगतं प्रकटितं, स्त्री गूढ़ भावात्मकं। पुरूपंच पुनस्तदन्तर गतं, प्रावीशत् स्वप्रिये।।
संश्रिलष्टावुभयोर्बभौ रसमयः, कृष्णा हि यत्साक्षिकं। रूपं तत् त्रितयात्मकं परममिघ्येयं सदा वल्भम्।।

।। श्रीगोपीनाथजी ।।

श्रीवल्लभ प्रतिनिधिं, तेजोराशिं दयार्णवम्। गुणातीतं गुननिधिं श्रीगोपीनाथमाश्रे ।।

।। श्रीगुंसाईजी ।।

यदनुग्रहतो जन्तुः, सर्वदुःखातिगो भवेत्। महं सर्वदा वन्दे, श्रीमद्वल्लभनन्दनम्।।
सायं कुंञ्जालयस्थासन मुपविलसत्स्वर्ण पात्रं सुधौंतं। राजद्यज्ञों पवीतं परितनुवसनं गौरमम्भाजवक्त्रम्।
प्राणानायम्य नासा पुटनिहित करं कर्ण राजद्विमुक्तं। वन्देऽर्धोन्मीलिताक्षं मृगमद तिलकं विठ्ठलेशं सुकेशम्।।

।। गुरू वन्दन – प्रभु स्मरण ।।

अज्ञान तिमिरांधस्य, ज्ञानांजन शलाकया। चक्षुरून्मीलितं येन, तस्मै श्री गुरवे नमः।।
नमामि हृदये शेषे, लीला क्षीराब्धिशायिनम्। लक्ष्मी सहस्त्र लीलाभीः, सेव्यमानं कलानिधिम्।।
श्रुति सिद्धं रसाम्बोधि, रास मंडल मंडनम्। गोपिका नयनानन्दम् गोवर्धनर्धरं भजे।।
चतुर्भिश्च चतुर्भिश्च, चतुर्भिश्च त्रिभिस्तथा। षड़भिर्बिराजते यौसो, पंचधा हृदये मम।।
नमामि हृदये शेषे, लीला क्षीराब्धिशायिनम्। लक्ष्मी सहस्त्र लीला भी, सेव्यमानं कलानिधिम्।।

।। प्रातः स्मरण।।

श्रीगोवर्धननाथ पादयुगलं, हैयंगविन प्रियं, नित्यं श्रीमथुराधिपं सुखकरं, श्रीविठ्ठलेशं मुदा,।।
श्रीमद् द्वारवतीश गोकुलपती, श्रीगाकुलेन्दुं विभुं। श्रीमन्मथ मोहनं नटवरं, श्रीबाकृष्णं भजे।।
श्रीमद्–वल्लभ विठ्ठलौ गिरिधरं, गोविंदरायाभिधं । श्रीमद् बालकृष्ण गोकुलपति, नाथंरघुणांतथा।।
अेवं श्रीयदुनाथकं, किल घनश्यामं च, तद्वंशजान्। कालिन्दीं स्वगुरूं गिरिं गुरूंविभुन् स्वीय प्रभुंश्च स्मरेत्।।

बसंत, होरी, धमार एवं रसियाँ के पद

बसंत आगम –माघ सुदी 5

बसंत पंचमी के दिन, मंगला में बसंत आगम के पद, श्रृंगार में नित्य के पद, राजभोग आवे तब गृहभोजन के पद। कलश का अधिवासन होने के बाद, दर्शन खुले तब राग बसंत की अलापचारी करके "व्रज युवती शतसंगे" अष्टपदी, प्रारंभ करते हैं। प्रत्येक दर्शन में माघ सुदी 15 (होरी डांडे तक) केवल बसंत राग के पद गाते हैं। बसंत पंचमी से फाल्गुन सुदी 10 दसमी खेल के समय "व्रज युवती शतसंगे" पद गाते हैं। आज के दिन से शयन के दर्शन होते हैं। मध्यान्ह राजभोग दर्शनानन्तर एक विशेष दर्शन होते हैं श्रीजी के सामने बसंत का कलश स्थापित किया जाता हैं, उसमें खजूर की डाली, सरसों, जौ तथा आम्र मौर रखे रहते हैं। आज से ही श्रीजी गुलाल, अबीर, चंदन, तथा चोबा से खेलना आरंभ कर देते हैं। झाँझो का बजना आरंभ हो जाता हैं। यह कम डोलोत्सव तक चलता रहता हैं आज से बसंत वाली अष्टपदी प्रारंभ हो जाती हैं। पिछवाई – आज से लेकर डोलोत्सव तक एक सफेद पिछवाई पर गुलाल की चिडियां अंकित की जाती हैं।

होरी के पद – फाल्गुन कृ. 1 (एकम्) से 6 (छठ) (होरी)

होरी डांडा पूनम को प्रातः हो तो, प्रातः से, संध्या को हो तो उस समय मे, धमार गोरी राग के पद गाते हैं। "ऋतु बसंत सुख खेलियो हो, आया फाल्गुन मास" से प्रारंभ करते हैं। माघ शुक्ल 15 (पूर्णिमा) आज के दिन शुभ मुहूर्त के अनुसार होली मगरे पर होली डंडा रोपा जाता है जिसमें आचार्य श्री की बैठक से कीर्तन समाज गाता बजाता खर्च भंडारी सहित यहां पहुंचता हैं। डंडारोपण के पूर्व डंडे की मंत्रोक्त विधि से पूजा की जाती हैं। यहां श्रीनाथजी में धमार का आरंभ हो जाता हैं। जिसमे डफ और चंग बजने लगते हैं। पिछवाई– सफेद पिछवाई शोभित होती हैं।

फाल्गुन कृ. 1 (एकम) से 6 (छठ) तक

प्रातः मंगला में खंडिता के पद धमार में, राजभोग आवे तब तक बिलावल राग को धमार, भोग संध्या, शयन तक गोरी राग को धमार विशेष रूप में गाते हैं।

श्रीजी का पाटोत्सव : फाल्गुन कृ. 7 (सप्तमी)

फाल्गुन कृ. 7 (सप्तमी) से सब रागो को धमार ताल में गाते हैं। फाल्गुन कृष्ण 7 (सप्तमी) आज के दिन ही मथुरा में श्रीनाथजी गोवर्धन से पधारे थे। इसी दिन प्रभु नाथद्वारा आकर, पाट पर बिराजे थे। इसके बाद उदयपुर और घसियार जाकर पुनः इसी दिवस पाट पर बिराजमान हुए थे। फाल्गुन मास में श्रीनाथ जी कभी गुलाल, कभी अबीर और कभी चंदन की चोली धारण करते रहते हैं। शिवरात्रि को प्रभु बाघम्बर अंगीकार करते हैं।

मुकुट श्रृंगार

किसी घर में फाल्गुन कृ. 11 ग्यारस को किसी घर में फाल्गुन सुदी 2 से, प्रभु को मुकुट धराया जाता हैं। उस ही भाव तथा श्रृंगार के अनुसार धमार गाते हैं।

फाल्गुन सुदी 11

निंकुज एकादशी इस दिन से खेल के समय गाये जाने वाली अष्टपदी "व्रज युवती शतसंगे" धमार का गायन बंद करके राजभोग दर्शन में (डोलोत्सव) के पद गाते हैं। शयन के समय कल्याण राग के पद अन्य समय में धमार गाते हैं। राजभोग सरने के बाद निज मंदिर में कुंजबनता हैं। श्रीनवनीतप्रिय प्रभु अपने घर से पधारकर श्रीजी की गोद में बिराजते हैं। राजभोग आरती के बाद श्रीनवनीत प्रिय पुनः अपने घर पधार जाते हैं। संध्या आरती में श्रीजी को ठाडे वेत्र धराते हैं तथा वेणु कटि में खोंसा जाता हैं।

फाल्गुन सुदी 15 (पूनम)

इस दिन होरी के भाव का धमार एवं अन्य पद गाते हैं। चैत्र कृ 1 (एकम) से डोलोत्सव तक मंगला से राजभोग तक, धमार गाते हैं प्रभु डोल में बिराजे तब तीन भोग आने तक देवगंधार से सारंग आदि रागों में डोल के पद गाते हैं। जिसमें ओढते समय "गोपी हो नंदराय घर फगुवा मांगन आई" यह पद गाते हैं। डोल से उतरने के बाद निंकुज के पद गाते हैं। शयन में श्रीजी की गुलाल से दाढी रंगी जाती हैं। प्रभु को ठाडा वेत्र धराते है। बडूयला की माला की भावना से प्रभु को इस दिन सोने के ताबीज की माला पहनाई जाती हैं। शयन में भरपूर गुलाल उड़ता हैं।

क्रम	विवरण	राग
1	नई री ऋतु को आगम भयो	सारंग
2	ससक–ससक रही अपने भवन	सारंग
3	आजु कौन अँग तें ब्रज	मालकोस
4	बालापन गयो अब आयो	मालकोस
5	लहेकन लागी री बसंत बहार	मालकोस
6	सघन बन फूल्यो री कुसुमन	मालकोस
7	बसंत आगम सुंदर नंद नंदन	मालकोस
8	सारी हरी री चुन कै पहेरी	मालकोस
9	आली री कर सिंगार सायंकाल	सारंग
10	जागिहो लाल गुपाल गिरि	बसंत
11	कोकिल बोली, बन बन	बसंत
12	कर हु कलेउ मदनगोपाल।	बसंत
13	साँची कहो मनमोहन मो सो,	बसंत
14	देखियत लाल द्रगन डोरे।	बसंत
15	सहज प्रीति गोपाल हि भाव	बसंत
16	श्रीपचंमी परम मंगल दिन	बसंत
17	बसंत बनाय चली ब्रजसुंदरि	बसंत
18	व्रज–युवती–शत–संगे हरि	बसंत
19	ललित–लवग्ङ–लता	बसंत
20	गावत चली बसंत बधावन	बसंत
21	श्रित–कमला–कुच–मण्डल	बसंत
22	बसंत बधावौ, चली ब्रज की	बसंत
23	मदन महोच्छव आजु राधे।	बसंत
24	आइ हें हम नंद के द्वारे।।	बसंत
25	आज बसंत बधायौ है,	बसंत
26	चलि बन बहत मंद सुगंद	बसंत
27	स्याम सुभग तन सोभित	बसंत
28	रिंगन करत कान्ह आंगन	बसंत
29	अति–सुंदर–मणिजटित	बसंत
30	देख सखी री पलनां झुलत	बसंत
31	ऐसौ पत्र पठायौ नृप बसं	बसंत
32	गिरिधरलाल की बानक ऊपर	बसंत
33	एक बोल बोलो नंदनंदन,	बसंत
34	देखि बसंत समै व्रजसु	बसंत
35	बरजो जसुदाजी कान्हा।	काफी
36	जसोदा नहीं बरजे अपना	बसंत
37	बसंत ऋतु बसंत बृंदाबन	बसंत
38	नवल बंसत, नवल बृंदाबन,	बसंत
39	लालन संग खेलन फाग	बसंत
40	जुवतिन संग खेलत फाग	बसंत
41	छींट छबीली तन सुख	बसंत
42	चलि हे भरन गिरिधिरन	बसंत
43	खेलत गुपाल सब सखिन	बसंत
44	चटकीली चोली पहिरे	बसंत
45	खेली–खेली हो लडैती	बसंत
46	खेलत बसंत बल्लभ कुमार।	बसंत
47	श्रीगोवर्धन की सिखर चारू	बसंत
48	हरि जू के आवन की	बसंत
49	मान तजौ भजौ कंत,	बसंत
50	रति पति दे दुःख करि	बसंत
51	खेलि फाग अनुराग भरे	बसंत
52	आज सुभग दिन बसंत पंचमी	बसंत
53	खेलि फागु अनुराग मुदित	बसंत
54	परम पुनीत बसंत पंचमी	बसंत
55	बसंत पंचमी मदन प्रगट भयो	बसंत
56	आई आज बसंत पंचमी खेलन	बसंत
57	नवल बसंत बीच वृन्दावन	बसंत
58	नवल बसंत नवल वृन्दावन	बसंत
59	खेलत खेलत पौढी श्रीराधा	बसंत
60	श्रीवल्लभ प्रभु करुना सागर	बसंत
61	खेलक हैं हरि आनंद होरी	बसंत
62	खेलति खेलति पौढी	बसंत
63	खेली बसंत जाम चारयौ	बसंत
64	बसंत बनाई चली ब्रज सुंदरि	बसंत

क्रम	विवरण	राग
65	खेली फाग अनुराग भरे	बसंत
66	आज बसंत बधायौ है,	बसंत

होरी के पद

क्रम	विवरण	राग
67	जागो कृष्ण खेलो रंग हो	विभास
68	करो कलेऊ बलराम कृष्ण	विभास
69	खिलावन आवेगी ब्रजनारी	विभास
70	जागि कह्यौ जननी सों मो	विभास
71	आज तौ छबीलौ लाल प्रात ही	विभास
72	भोर भये नंदलाल संग	भैरव
73	वृन्दावन बंसीबट के तट	भैरव
74	तुम कौन के बस खेले हो	ललित
75	कुंज कुटीर मिली जमुना तीर	ललित
76	आजु माई! मोहन खेलत ह	देवगंधार
77	हरि सँग होरी खेलनि आँई	बिलावल
78	हो–हो होरी खेलति गिरिधारी	देवगंधार
79	हों तो होरी नंदलाल सो	देवगंधार
80	ग्वालिनी फगुवा माँगनि आई	देवगंधार
81	जिन डारो जू अँखियन	बिलावल
82	व्रजनारी ब्रजराज गोप गृह	बिलावल
83	नवरंगी लाल बिहारी हो	बिलावल
84	घोस नृपति सुत गाइयें जाके	बिलावल
85	नंद सुबन ब्रजभाव ते	बिलावल
86	आगम सुनि ऋतुराज	बिलावल
87	कुंज कुटीर जमुना के लीए	बिलावल
88	श्रीलक्ष्मन कुल गाइयै,	बिलावल
89	अरी ते रंग राख्यो खेलत	बिलावल
90	सौंधे की हैं उठति झकौरै	बिलावल
91	ब्रज नारी ब्रज राज गोप गृह	बिलावल
92	फाग खेलन ब्रज–सुंदरी	बिलावल
93	होरी खेलियै हो सुंदर लाल,	बिलावल
94	नंद गाम कौ पांडे ब्रज	बिलावल
95	गोपी हौ नंदराय घर	बिलावल
96	मोहन वृषभान के आयें	बिलावल
97	हो–हो बोलत डोलत	बिलावल
98	बरसाने की गोपी मांगन	बिलावल
99	गावत धमार आईं ब्रज	धमार
100	श्रीब्रजराज कुंवर वर गाइये,	धमार
101	प्रोहित बृषभानु कौ हो आयो	धमार
102	बरसानैं तैं कुंवरि राधिका	आसावरी
103	धनि–धनि नंद जसोमति हो	आसावरी
104	या गोकुल कै चौहटे रंग राची	आसावरी
105	बरसाने की नबल नारि मिलि	आसावरी
106	अहो पिय लाल लड़ेती कौ	सारंग
107	सुरंगी होरी खेलै साँवरो श्रीब	सारंग
108	तें मोहन कौ मन हर्‍यौं तो बि	सारंग
109	तारी दै गारी गाव हीं।।	सारंग
110	नयनन में जिन डारौ गुलाल,	सारंग
111	आज हरि खेलत फाग	सारंग
112	स्याम सलौने मन हर्यो,	सारंग
113	होरी खेलै री नंदलाल।।	सारंग
114	छाँडो–छाँडो हमारी बाट,	सारंग
115	मोहन खेलत होरी	सारंग
116	माधो चांचर खेल ही खेलत	सारंग
117	स्याम रँगीली चूनरी, रंग रंगी	सारंग
118	अहो पिय! मो सों ही खेलो,	सारंग
119	हौ क्यौं जाऊं री दधि बेचन	सारंग
120	राजत है बृषभान किसोरी	सारंग
121	खेलि फाग घर आयो	सारंग
122	खेलें पिय राधा गोरी	सारंग
123	सुन चली सकल ब्रजनार	सारंग
124	हो प्यारी होरी खेले रस	सारंग
125	होरी खेलति नंद को लाल	सारंग
126	होरी खेलति मोहन	सारंग
127	आजु माई खेलति फागु	सारंग

क्रम	विवरण	राग
128	राधा माधौ खेलैं होरी	सारंग
129	हरि संग खेलन फागु चलीं	धनाश्री
130	हरि संग खेलन जांय अरी	धनाश्री
131	पिय प्यारी खेले फाग बागे	धनाश्री
132	रहसि घर समधिन आई।।	धनाश्री
133	माई मेरो मन मोह्यो साँवरे	धनाश्री
134	खेलो होरी फाग सबे मिलि	धनाश्री
135	खेलत फाग सखा संग	धनाश्री
136	बरसाने तें सजि चली रंग	धनाश्री
137	नेंक मोहोंडो मांडन दै हो	धनाश्री
138	खेलत फाग कुँवर नँदनंदन	धनाश्री
139	होरी के रंगीले लाल गिरधर रंग	धनाश्री
140	दुल्हे श्री ब्रजराज दुलारो	बसंत
141	आज सांवरो घोष गलिन	बसंत
142	हो–हो होरी खेलन जैये	बसंत
143	अनोखे होरी खेलन लागे	बसंत
144	पीतांबर काजर कहाँ लग्यो हो।	काफी
145	बरज्यौ नहीं मानै, अरी वह	काफी
146	माई बरसाने ते नंदगाम	काफी
147	मिल खेलें फाग वन में	काफी
148	सांवरौ अज हुं नहिं आयौ।	काफी
149	नेह लग्यौ मेरौ स्याम सुंदर सौ	काफी
150	तुम चलो सबे मिलि जांय खेलन	काफी
151	श्रीगोकुल राज कुंमार लाल रंग	काफी
152	नंद गामते बन ठन के चले	काफी
153	श्रीवृषभान कुंवरि महा–रंग	काफी
154	राधा माधौ सँग खेली।	काफी
155	होरी कौ है अवसर जिनि को	काफी
156	या ब्रज मैं हरि होरी मचाई।	काफी
157	खेलत जाके रंग रह्यो हो	काफी
158	एरी सखी निकसे मोहनलाल।।	काफी
159	लालन खेलत हें हो होरी	काफी
160	रंग भीनी जोरी होरी खेलें	काफी
161	तुम आवौ री! तुम आवौ।	काफी
162	मनमोहन ललना मन हर्‍यो हो।	काफी
163	माई समध्याने तें ब्राह्मण आयो	काफी
164	या ब्रज में होरी रंग बढ्यो	काफी
165	निकस कुंवर खेलन चले	काफी
166	एसें होरी खेले सांवरो संग	काफी
167	सांवरे मोहि रंग में बोरी	काफी
168	होरी खेलै लाल, ढफ बाजैं ताल	काफी
169	तेरे नैननि में है जु ठगोरी	काफी
170	यों खेलौं रंग फाग री	काफी
171	फागुन मास सुहायो	काफी
172	एक रंगीला रंग डारि	काफी
173	श्री वृन्दावन चंद खेलें	काफी
174	कान्ह कुंवर खेलनि चले	काफी
175	जमुना के तट खेलति हरि–संग	काफी
176	नंद–नंदन बृषभानु–किसोरी	काफी
177	पकड़े ब्रजजन गिरिधारी	काफी

शिवरात्रि (राजभोग दर्शन)

क्रम	विवरण	राग
178	बाघम्बर ओढे साँवरो यामे जो	काफी
179	सखि री नंद नंदन देखु। धूरि	सारंग
180	मोहन मुनि है आये हो।।	सारंग
181	बृज में होरी रँग सुहायो	काफी
182	खेलत हैं नंदलाल फाग।	कान्हरों
183	रंग भर खेलत हैं हरि होरी	कान्हरों
184	मोसों होरी खेलन आयो	कान्हरों
185	भली भई ब्रज होरी, आई, घर	केदारो
186	खेलत मोहन राधा गौरी।	केदारो
187	खेलत गिरिधर फाग अति	कल्याण
188	होरी खेलत मदन गोपाल	कल्याण
189	होरी खेलत कुंज बिहारी	कल्याण
190	जमुना तैं हौ बहुत रिझायौ	कल्याण

क्रम	विवरण	राग
191	नंद कुंवर रंग गहर–	कल्याण
192	श्रीगोवरधनराई लाला अहो प्यारे	कल्याण
193	नवल कुंवरि ब्रजराइ के लाल	कल्याण
194	नागर नंद दा मैनु दै दै	गौरी
195	आज बन ठन ब्रज खेलन फाग	मारू
196	रसिक दोऊ खेलन लागे होरी।।	बिहाग
197	बरसाने की ग्वालिनी खेलति	बिहाग
198	होरी खेलत कुंवर कन्हाई	बिहाग
199	हम तुम मिली दोऊ खेलें	ईमन
200	लाग्यों रे, लाग्यो! मोस	ईमन
201	माई होरी खेले कान्ह	ईमन
202	भर मुठी डार गुलाल।	ईमन
203	लाल रस माँते हो,	ईमन
204	खेलन आये हरि नंद	हमीर
205	अरी होरी खेलन जैये	हमीर
206	मो सों होरी खेलन	हमीर
207	ऊँचौ सौ गोकुल गाँम	रायसों
208	निकसे खेलन होरी	रायसों
209	सकल कुंवर गौकुल	रायसों
210	मिल जु डंडा रसा	रायसों
211	खेलन कों स्यामाजु चली	रायसों
212	होरी कौ सुख अद्भुत	रायसों
213	फागु खेलै राधा गोरी	जेतश्री
214	ऋतु बसंत के आगम हो	जेतश्री
215	खेलत फागु संग मिलि	जेतश्री
216	नंदन कुंवर खेलत राधा	जेतश्री
217	माई आज तो मोहन संग	जेजेवंती
218	होरी खेलन आई आज	जेजेवंती
219	होरी रंग भर गावें सोई	नायकी
220	लाल गुलाल की मार रस	नायकी
221	तुम बिन खेंल न रूचे लगार	नायकी
222	ब्रज में खेले री धमार म	नायकी
223	नारी गारी दै गई वे माई	नायकी
224	खेलत गिरिधरन लाल, परम	नट
225	खेलत हें ब्रज में हरी होरी	नट
226	ए नैना नैननि सौं होरी	अडानो
227	खेलै–खेलै मोहन कुंज गली	अडानो
228	नवरंग पिय नवरंग प्यारी सौं	अडानो
229	गोरी गोरी गुजरिया भोर	गौरी
230	राधा रसिक कुंजबिहारी।	गौरी
231	ऋतु बसंत सुख खेलियें	गौरी
232	सब दिन तुम ब्रज में रहो,	गौरी
233	छैल छबीलौ ढोटा रस	गौरी
234	सब बृजकुल के राई लाल	गौरी
235	गोकुल–राई–कुमार कमल	गौरी
236	होरी खेलनि को चले रंग	गौरी
237	ढोटा दोऊ राई के खेलत	गौरी
238	श्रीवल्लभ कुल मंडन प्रकटे	गौरी
239	चला`सखी मिलि देखन	रामकली
240	बरसानैं तैं बृषभानु पुरा	खट
241	आजु भोर ही नंदे पौरि	खट
242	देखो देखो ब्रज की बीथनि	पंचम
243	स्याम–संग खेलत चलि स्यामा	श्री हठी
244	खेलति फागु फिरति रस	श्री हठी
245	हरि संग खेलति है सब फाग	फाग
246	आज दिन होरी को हे तू	बिहाग
247	पोढे प्यारी पिय के संग	अडानो
248	एरी चलहु सखी तहाँ तहाँ	ईमन
249	प्यारी तू नित्य उठ मान मनावै	बिहाग
250	खेलि फागु मुसिकात चले	बसंत
251	चले पिय भाव ते रस लैन	बिहाग
252	बहुर ड़फ बाजन लागे होली	ताज बेगम
253	खेलन दे मोहे होरी हो रसीया	बिहाग

होली के रसिया

क्रम	विवरण	राग
254	ठाडो रे हे कनुवा ब्रजवासी	रसिया
255	चलो बरसाने खेले होरी।	रसिया
256	बृज की तोहे लाज मुकुटवारे	रसिया
257	डफ बाजै नंद–बाबो घर के,	रसिया
258	दरसन दे निकस अटा में	रसिया
259	बन आयो, छैला होरी को	रसिया
260	बृंदाबन खेल रच्यौ भारी	रसिया
261	ब्रजमंडल देस दिखावौ रसिया	रसिया
262	फागुन में रसीया घर–बारी	रसिया
263	दरसन दै मोर मुकुटवारे	रसिया
264	मृग–नैनी तेरौ यार नवल	रसिया
265	फगुवा दे मोहन मतवारे	रसिया
266	जब तें धोको देके गयो	रसिया
267	गोरी, चले मरोड़ा चाल,	रसिया
268	खेलें श्यामा, श्याम री	रसिया
269	होरी खेलूं श्याम सुंदर सों,	रसिया
270	बहना, कैसे खेली जाय	रसिया
271	नंद को छोना, श्याम सलोना	रसिया
272	अब क्यों दुबक रह्यो	रसिया
273	ह्याम ने रंग में भिजाये	रसिया
274	रँग में रँगन रँगमगी करी	रसिया
275	मैं तो सोये रही सपने में	रसिया
276	रंग में रंग दई बाँह पकरि	रसिया
277	नैनन में मोहि गारी दई	रसिया
278	चुनरिया रंग में बोर गयौ	रसिया
279	आज बिरज में होरी रे	रसिया
280	मत मारे दृगन की चोट,	रसिया
281	मोहन आज गयौ होरी में मेरी	रसिया
282	फाग खेलन बरसाने आये हैं	रसिया
283	मैंने सुनी झनक होरी में खेल	रसिया
284	श्यामा श्याम सलोनी सूरति	रसिया
285	सखी सब जुरि मिल चालौ	रसिया
286	होरी हो ब्रजराज दुलारे।।	रसिया
287	प्यारे करूँ कपोलन लाल	रसिया
288	श्याम सों कहियो कोई	रसिया
289	श्याम सों खेलूंगी होरी।	रसिया
290	कान्हा धरें मुकुट खेलें	रसिया
291	बनि आयौ छैला होरी कौ।	रसिया
292	रसिया को नारि बनावौ री	रसिया
293	नेंक आगें आ श्याम तोपै	रसिया
294	मैं तौ मलूंगी गुलाल तेरे	रसिया
295	गलियन बिच धूम मचावौ	रसिया
296	नन्द के द्वार मची होरी।	रसिया
297	मेरे नैननि में पिचकारी	रसिया
298	हो होरी खेलूंगी श्याम	रसिया
299	श्यामा श्याम सौं होरी	रसिया
300	होली कैसे खेलूँ री या	रसिया
301	आवै अचक मेरी वाखर	
302	गौने आई इकनार बड़ी भोरी ग	
303	चिरजीवौ होरी के रसिया। नित प	
304	छैला यै आज रंग में बोरी री स	
305	डफ बाज्यौ रे छैल मतवारे कौ। ड	
306	वृन्दावन मोहन दधि लूटी। कहाँ	
307	होरी खेलन आयौं श्याम आज या	
308	होली तरे व्रजवासी खेले	
309	गोवर्धनवासी सांवरेलाल	

डोल–झूलनोत्सव

क्रम	विवरण	राग
310	झूलत डोल राधिका संग	सारंग

सगाई व रास लीला, माटी, यमुलार्जुन

क्रम	विवरण	राग
311	मंगाय दै बहू छोटी सी, मैया छी	
312	मैया कर दै मेरौ ब्याह मँगाय दै	
313	दुलहन प्यारी राधारानी जाकौ दु	
314	राधा की छबि देख मचल गयो साम	

क्रम विवरण राग
315 बजाई बंशी मोहन नें, गोपिन
316 कियौ महारास प्रभु वन में,
317 शिव नें महारास देखन कूं

बंसी लीला

318 राधे प्यारी श्री वृषभान–दुलारी

बाल–लीला

319 यशोदा सुन माई, तेरे लाला ने

यमलार्जुन लीला

320 कारज भक्तन के करिवे कूँ
321 मारै मत मैया वचन भरवाय

गिरिराज लीला

322 नख पै धर कें गिरिराज नाम
323 लग रही आस करूं वृजवास,
324 ब्रज में श्री गोवर्धन धाम,
325 राधा कुण्ड राधिका रानी,
326 अति पावन परम पुनीत,
327 ब्रज कौ बास मिलै वाहीं
328 राजत जहाँ मानसी गंग,
329 साँचे भाव भक्ति की परिकम्मा,
330 भारी परी भगत पै भीर, भरोस
331 जै–जै गोवरधन महाराज, नाथ तु
332 ब्रज को राजा श्रीगिरिराज,
333 श्रीगोवर्धन महाराज, महाराज। तेर
334 अरी तेरे सब संकट कटि जाये, पूज
335 रसियानाय माने मेरौ मनुआ मैं
336 तेरौ जनम सुफल है जाय, लगाय लै

दानलीला व माखन चोरी

337 इकली घेरी वन में आय श्याम तैन
338 चंचल चपल चतुर चंद्रावलि, चालै चट
339 हँस के माँगे चंद्रावलि हमारी दे
340 जमुना किनारे मेरौ गाँव सांवरे
341 ग्वालिन करि दै मोल दही कौ मो
क्रम विवरण राग
342 मैंया जब मैं घर से चलूं बुलाम
343 अरे माखन की चोरी छोड़ कन्हैय
344 ग्वालिन मत पकरे तू बैंया। मेरी
345 हरि ने चन्द्रावलि छलि वे को

मिश्रित पद

346 खातिर कर लै नई गुजरिया, रसिय
347 नव हि अंग श्रृंगार के होरी चोर

रसिया नागनाथ लीला

348 निर्मल जमुना जल करिबै कूँ

चीरहरण लीला

349 कोई लै गयौ चीर हमारे, जुलम

गौचारण लीला

350 जसुदा मैया खोल किबरिया,
351 कर लै, धरम धार लै धी

मोर ध्वज लीला

352 अर्जुन और कृष्ण मुरारी,
353 मेरे बारौ सौ कन्हैया काली

मणिहारी व अन्य लीला

354 बन गये नंदलाल लिलहारी,
355 ढोटा, नन्दनन्दन ब्रजचन्द्र,

रंगरेजन लीला

356 बन गये श्याम सुघड़ रंगरेजन

मालिन लीला

357 बन गये मालिन मदन मुरारी,

जोगिन लीला

358 कान्हा ने जोगिन भेष बनायौ,

मनिहारी लीला

359 बन गये नवलनार घनश्याम कि चुरियां

बांकडे बिहारी

360 "भजन" बांकडे बिहारी,
361 बोली सखी सब, फगुवा लेगी

1 सीत विदा सारंग नई री ऋतु को आगम भयो सजनी जब तें बिदा भयो हेमंत। बिरहनि के भागिन तें सजनी आवत चल्यो है बसन्त। तन सिहाय त्रिय चले भर भाव चल्यो ताही को कंथ। 'चतुर्भुज' प्रभु पिय तारी बजावत या जाडे को आयो अन्त।।

2. सारंग ससक–ससक रही अपने भवन में चार मास को कियो बिहार। नंद–सुवन ब्रजराज सांवरो मोह्यो परम चतुर ब्रजनार। कब आवेंगे मेरे घर में बिधना सों मांगू अचरा पसार। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर जाडो चल्यो दोउ कर झार।।

3. मालकोस आजु कौन अँग तें ब्रज–सुन्दरी रसिक गोपाल हिं भाई। सकल सिंगार साजि मृगनयनी अवसर जान आप चली आई। लहेगा लाल, झूमक की सारी कसूंभीं पीत बरनि पिय अति हि रंगाई। नयन रस मय आलस जुत सब अंग–अंग प्रत बहु छबि छाई। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्द्धनधर अपुनी जान हँसि कंठ लगाई।।

4. मालकोस बालापन गयो अब आयो जोबन, रोम–रोम प्रफुल्लित तन। मदन नृपति की फौज आवत सखि भयो हुलास जुवति मन। ठोर–ठोर फूल द्रुम कानन कोकिल लागे कुलाहल करन। कामी–जन उर दाह करन कों सेना सज आये लरन। भरी चलो प्यारी अपनें प्रीतम कों धरो आयुध आभरण। समर संग्राम जीतेंगे 'सूर' प्रभु चाहत तिहारी सरन।।

5 मालकौंस लहेकन लागी री बसंत बहार मानो बनवारी लाग्यो बहकन।। ना जानो जब कहा करेंगे लागे हे पलास द्रुम डहकन।।1।। मदनभर केकी हूक काढत बरण बरण द्रुम पुष्प लागे महेकन ।। आनंद घन तुम कित हो बिरम रहे इत कोकिला लागे कुहुकन।।2।।

6 मालकौंस सघन बन फूल्यो री कुसुमन फूली सब बनराई।। फूल ब्रज जुवती जन फूले सुंदर वर रति आई।।1।। जान पंचमी मिलाप करन वृषभान सुता बन आई।।'रसिक प्रीतम' पिय अति रसमाते डोलत कुंजन माई।।.

7 मालकौंस बसंत आगम सुंदर नंद नंदन जो पाउं कुंवर कपट बनाय जतन सों नीके गिरधरलाल लडाउं।।1।। अति प्रफुल्लित मन हरखत आनंद अपने पिय सों उरन मिलाउं।।'परमानंदप्रभु' या जाडे को देस निकास कराउं।।2।।

-:+:-

8 मालकौंस सारी हरी री चुन कैं पहेरी चोली हरी सब सोंधे भरी।। चूरी हरी अरु पोहोंची हरी री हाथन में मेंहदी गेहरी।।1।। पोत हरी मुख जोत खरी खरी जोबन जोत जडाव जरी।। नव कुंज हरी ब्रज भोमि हरी देखि सखी एसो हमारो हरि।।2।।

9. सारंग आली री कर सिंगार सायंकाल चली ब्रज–बाल पिय दरसन को अति द्विबिध गति गैन। मानो सिसमार चक्र उदय होत गगन मध्य ध्रुव नक्षत्र की परीक्रमा दैन।।1।। मानो बसंत ऋतु आई अंग–अंग छबि छाई दम्पति को समाज मोपै कह्यौ न परत बैन।। "मुरारीदास" प्रभु पिय चित्र अंकित सें भये निरखि पिया छबि ऐसी अद्भूत कोऊ रचि मैन।।2।।

-:+:-

10. जगाइवे बसंत जागिहो लाल गुपाल गिरिवरधरन सरस ऋतुराज बसन्त आयौ। फूले द्रुम बेली, फल फूल बौरे अंब मधुप कोकिला कीर सैन ल्यायो। जाहु खेलन, सबै ग्वाल द्वार टेरत खाओ भोजन मधु घृत मिलायौ। सखी जूथन लियै आई है राधिका मच्यौ गहगह रांग रंग छायौ। सुनत मृदु बचन उठे चौंक नंदलाल, कर लियै पिचकाई सुबल बुलायौ। निरख मुख हरखि हियै वारि तन मन प्रान 'सूर' येहि मिस हि गिरिधरन जगायो।।

11. मंगला बसंत कोकिल बोली, बन बन फूले, मधुप गुजाँरन लागे। सुनि भैया भोर, रोर बंदिनि कौ, मंदन महीपति जागे। ते दूने अंकुर द्रुम पल्लव जे पहिले दव दागे। मानहुँ रति पति रीझि जाचकनि, बरन–बरन दिए बागे। नई प्रीति, नई लता, पहुप नए, नयन नए रस पागे। नए नेह, नव नागरि हरसित, 'सूर' सुरँग अनुरागे।।

12. कलेवा बसंत कर हु कलेउ मदनगोपाल। मधु मेवा पकवान मिठाई। भर–भर राखे कंचन थार। माखन मिश्री सद्य जम्यो दही ओट्यो दूध अरु सरस मलाय। आप हु खाओ ग्वालन संग ले के पाछें खेलो सघन बन जाय। करत कलेउ रामकृष्ण दौउ और ही संग लिये सब ग्वाल। कर हें बात फाग खेलन की 'कृष्णदास' मनमोहनलाल।।

13. (खंडिता) बसंत साँची कहो मनमोहन मो सो, तौ खेलो तुम संग होरी। आज की रैनि कहाँ रहे मोहन, कहाँ करी बर जोरी।।1।। मुख पर पीक पीठि पर कंकन हिये हार बिन डोरी। जिय में ओर, ऊपर कछु और चाल चलत कछु ओरी।।2।। मोहि बनावत मोहन नागर कहा मोहि जानत भोरी। भोर भये आये हो मोहन बात कहत कछु जोरी।।3।। "सूरदास" प्रभु ऐसी न कीजै आय मिलो कहाँ चोरी।। मन माने त्यों करत नंदसुत अब आई हे होरी।।4।।

14. बसंत देखियत लाल द्रगन डोरे। काके संग खेले हो बसंत, करि निहोरे।।1।। सजलताई प्रगट मानों, कुंकुम रस बोरे। अरूनताई भई गुलाल बंदन सित छोरे।।2।। अंजन छबि लगत, मानों चोबा छबि चोरे। बरूनी मानों नूत पल्लव, अधर भये सिंधौरे।।3।। कबहू रस मत्त नाचत, दोऊ कटाच्छ कोरे। गान सुरत भई मगन, बिबिध तान तोरे।।4।। देखियत अति सीथिलताई, मांनों झकझोरे। काहे कों कछु, जानै मन मोरे।।5।। सनमुख व्है कबहु, फिर जात लजोरे। "रसिक प्रीतम" मेरे तुम आये काके भोरे।।6।।

15 बसंत सहज प्रीति गोपाल हि भावै। मुख देखे सुख होइ सखी रे! प्रीतम नैननि नैन मिलावै। सहज प्रीति कमलनि अरु भानै, सहज प्रीति कुमुदनि अरु चंदै। सहज प्रीति कोकिला बसंतै सहज प्रीति राधा नंद–नंदै। सहज प्रीति चातक अरु स्वातैं सहज प्रीति धरनी जल धारै। मन क्रम बचन 'दासपरमानंद' सहज प्रीति कृष्णा अवतारै।।

16. बसंत श्रीपचंमी परम मंगल दिन मदन महोच्छव आज। बसंत बनाय चलीब्रज सुंदरी ले पूजा को साज। कनक कलश जलपूरन पढत रति कांत मंत्र रस मूल। तापर धरी रसाल मंजुरी आवृत पीत दुकूल। चोवा चंदन अगर कुंकुमा नव केसर घनसार। धूप दीप नाना निरांजन विविध भांति उपहार। बाजत ताल मृदंग मुरलिका वीणा पटह उपंग। गावत राग बसंत मधुर सुर उपजत तान तरंग। छिरकत अतिअनुराग मुदित गोपीजन मदन गुपाल। मानों सुभग कनक कदली मध्य सोभित तरुन तमाल। यह बिधि रतिराज बंधावन सकल घोस आनंद। 'हरिजीवन' प्रभु 'गोवर्धन' धर जय जय गोकुल चन्द।।

13. (खंडिता) बसंत साँची कहो मनमोहन मो सो, तौ खेलो तुम संग होरी। आज की रैनि कहाँ रहे मोहन, कहाँ करी बर जोरी।।1।। मुख पर पीक पीठि पर कंकन हिये हार बिन डोरी। जिय में ओर, ऊपर कछु और चाल चलत कछु ओरी।।2।। मोहि बनावत मोहन नागर कहा मोहि जानत भोरी। भोर भये आये हो मोहन बात कहत कछु जोरी।।3।। "सूरदास" प्रभु ऐसी न कीजै आय मिलो कहाँ चोरी।। मन माने त्यों करत नंदसुत अब आई हे होरी।।4।।

14. बसंत देखियत लाल द्रगन डोरे। काके संग खेले हो बसंत, करि निहोरे।।1।। सजलताई प्रगट मानों, कुंकुम रस बोरे। अरूनताई भई गुलाल बंदन सित छोरे।।2।। अंजन छबि लगत, मानों चोबा छबि चोरे। बरूनी मानों नूत पल्लव, अधर भये सिंधौरे।।3।। कबहू रस मत्त नाचत, दोऊ कटाच्छ कोरे। गान सुरत भई मगन, बिबिध तान तोरे।।4।। देखियत अति सीथिलताई, मांनों झकझोरे। काहे कों कछु, जानै मन मोरे।।5।। सनमुख व्है कबहु, फिर जात लजोरे। "रसिक प्रीतम" मेरे तुम आये काके भोरे।।6।।

15 बसंत सहज प्रीति गोपाल हि भावै। मुख देखे सुख होइ सखी रे! प्रीतम नैननि नैन मिलावै। सहज प्रीति कमलनि अरु भानै, सहज प्रीति कुमुदनि अरु चंदै। सहज प्रीति कोकिला बसंतै सहज प्रीति राधा नंद–नंदै। सहज प्रीति चातक अरु स्वातैं सहज प्रीति धरनी जल धारै। मन क्रम बचन 'दासपरमानंद' सहज प्रीति कृष्णा अवतारै।।

16. बसंत श्रीपचंमी परम मंगल दिन मदन महोच्छव आज। बसंत बनाय चलीब्रज सुंदरी ले पूजा को साज। कनक कलश जलपूरन पढत रति कांत मंत्र रस मूल। तापर धरी रसाल मंजुरी आवृत पीत दुकूल। चोवा चंदन अगर कुंकुमा नव केसर घनसार। धूप दीप नाना निरांजन विविध भांति उपहार। बाजत ताल मृदंग मुरलिका वीणा पटह उपंग। गावत राग बसंत मधुर सुर उपजत तान तरंग। छिरकत अतिअनुराग मुदित गोपीजन मदन गुपाल। मानों सुभग कनक कदली मध्य सोभित तरुन तमाल। यह बिधि रतिराज बंधावन सकल घोस आनंद। 'हरिजीवन' प्रभु ' गोवर्धन' धर जय जय गोकुल चन्द।।

17. बसंत बसंत बनाय चली ब्रजसुंदरि रसिकराय गिरधर पिय पास। अंग–अंग बैल फूली, मृगनैनी कुच उतंग, जानो कमल विकास।।1।। कोक–कला बिध कुंज सदन मे गिरिवरधर संग करत बिलास। कुसुम पर्यंक अंक भरे पौढे, निरखत बलि "परमानंददास"।।2।।

-:+:-:+:-:+:-:+:-:+:-:+:-:+:-:+:-:+:-:+:-:+:-:+:-:+:-:+:-:+:-:+:-:+:-:+:-

18. बसंत व्रज–युवती–शत–संगे हरिरिह व्रज–युवती–शत–संगे।। विलसति करिणी–गणावृत–वारण–वर–इव रतिपति–मान–भंगे।।1।। ध्रु.।। विभ्रम–संभ्रम–लोल –विलोचन–सूचित–संचित–भावम्।। कापि दृगंचल–कुवलय–निकरैः अंचति तंकलरावम्।।2।। स्मित–रुचि– रुचिरतरानन–कमलम् उदीक्ष्य हरे रतिकन्दम्।। चुम्बति कापि नितम्बवती– करतल–धृत–चिबुकम् अमन्दम्।।3।। उद्भट– भाव–विभावित–चापल– मोहन–निधुवन–शाली।। रमयति कामपि पीन–घन – स्तन–विलुलित– नव–वनमाली।।4।। निज–परिरम्भ–कृतेऽनद्भुतम् अभिवीक्ष्य हरिंस विलासम्।। कामपि कापि बलाद्–अकरोद्–अग्रे कुतुकेन सहासम्।।5।। कामपि नीवि– बन्ध–विमोकस–संभ्रम–लज्जित–नयनाम्।। रमयति सम्प्रति सुमुखि बलादपि करतल–धृत–निज– वसनाम्।।6।। प्रिय–परिरम्भ– विपुल–पुलकावली– द्विगुणित–सुभग–शरीरा।। उद्गायति सखि कापि समं रस हरिणा रति रणधीरा।।7।। विभ्रम–सम्भ्रम् गलदंचलमल– याञ्चितमंगमुदारं।। पश्यति सस्मितमपि विस्मित–मनसां सुदृशां सविकारं।।8।। चलति कयापि समं सकर–ग्रह मलसत रंसविलासम्।। राधे तव पूरयतु मनोरथ–मुदित–मिदं हरिरासम्।।9।।

19. बसंत ललित–लवग्ङ–लता–परिशीलन–कोमल–मलय– समीरे। मधुकर –निकर–करंबित–कोकिल, कूजित कुंज कुटीरे।। बिहरति हरि–रिह सरस–बसंते, नृत्यति युवति–जनेन समं सखि विरहि–जनस्य दुरंते।। ध्रुव पद।।1।। उन्मद–मदन–मनोरथ–पथिक– बधूजन–जनित –विलापे। अलिकुल–संकुल कुसुम–समूह– निराकुल–बकुल–कलापे।।2।। बिहरति हरि–रिह सरस–बसंते, नृत्यति युवति–जनेन समं सखि विरहि–जनस्य दुरंते।। मृगमद–सौरभ–रभस–वशंवद–नव–दल–माल–तमाले। युवजन–हृदय–विदारण–मनसिज–नख–रूचि किंशुक–जाले।।3।। बिहरति हरि–रिह सरस–बसंते, नृत्यति

युवति–जनेन समं सखि विरहि–जनस्य दुरंते।। मदन–महीपति–कनक–दंड–रूचि –केसर–कुसुम–विकासे। मिलित– शिलीमुख–पाटलि–पटल– कृत–स्मरतूण–विलासे ।। 4।। बिहरति हरि–रिह सरस–बसंते, नृत्यति युवति–जनेन समं सखि विरहि–जनस्य दुरंते।। विगलित–लज्जित– जगदवलोकन–तरूण–वरूण–कृत–हासे। विरहि–निकुंतन–कुंत– मुखाकृति–केतकि– दंतुरि–ताशे ।। 5।। बिहरति हरि–रिह सरस–बसंते, नृत्यति युवति–जनेन समं सखि विरहि–जनस्य दुरंते।। माधविका–परिमल–ललिते वनमालिकयाति–सुगंधौ। मुनि–मन–सामपि मोहन–कारिणि तरूणा–कारण–बंधौ।। 6।। बिहरति हरि– रिह सरस–बसंते, नृत्यति युवति–जनेन समं सखि विरहि–जनस्य दुरंते।। स्फुरदति–मुक्त–लता–परिरंभण–मुकुलित–पुलकित–चूते। बृंदाबन –विपिने परिसर–परिगत–यमुना–जल–पूते।। 7।। बिहरति हरि–रिह सरस–बसंते, नृत्यति युवति–जनेन समं सखि विरहि–जनस्य दुरंते।। "श्रीजयदेव" भणित मिद मुदयति हरि चरण स्मृति सारं। सरस बसंत समय वनवर्णन मनुगत मदन विकारं।। 8।।

20. बसंत गावत चली बसंत बधावन नंदराय दरबार। बानिक बनठन चोख मोख सों ब्रजजन सब इकसार।। 1।। अंगिया लाल लसत तन सारी झूमक नव उरहार।। बेनी ग्रथित लसत नितंब पर कहा कहू बड्डे बार।।2।। मृगमद आड बडे री अंखिया आँजी अंजन पूरि।। प्रफुलित वदन हंसत दुलरावत मोहन जीवन मूरि।। 3।। पग जे हरि केहरि कटि–किंकिनी रह्यो बिथिकि सुनि मार।। घोस–घोस प्रति गलिन–गलिन प्रति बिछुवन के झनकार।। 4।। कंचन कुंभ सीस पर लीने मदन सिंधु तें भरि के।। ढांपे पीत बसन जतनन रचि मोर मंजुरि धरि के।। 5।। अबीर गुलाल अगरजा सोंधो बिधि न जात बिस्तारी।। मेन सेन जोनार दैन कों कमलन कमलनि थारी।। 6।। पोहोंची जाय सिंघ–पौरि जब बिपुल जुवति–समुदाइ। निज मंदिर तें निकसि जसोदा सनमुख आगे आई ।। 7।। भीर भई भीतर भवनन में जहां ब्रजराज किसोर। भरत भाव तें प्रान पिया को घेरि फेर चहुं ओर।।8।। ब्रजरानी जब मुर मुसकानी पकरत भई जब कर की।। ले संग सखी लखी कछु बतिया मिस ही मिस उत सरकी।।9।। कुमकुम रंग सो भरी पिचकारी छिर के जे सुकुमारी।। बरजत छींटे जात द्रगन में धन वे

पोछन हारी ।। 10।। चंदन वंदन चोवा मथि के नील कंज लपटावै।। अलक सिथिल अरू पाग सिथिल अति पुनि वे बांधि बनावे।। 11।। भरत निसंक भरे अंकवारी भुजन बीच भुज मेले।। उनमद ग्वाल बदत नहि काहू झेल खेल रस खेले।। 12।। कियो रगमगो ललित त्रिभंगी भयो ग्वालिनी मन भायो।। टक झुक में झुकि एक ही बिरियां लाल हिं कंठ लगायो।। 13।। ताल मृदंग लिये श्रीदामा पोहोचे आय सहाई।। हलधर सुबल तोक मधु मंगल अपनी भीर बुलाई।। 14।। खेल मच्यो मनि खचित चौक में कवि पें कहाँ कहि जावै।। "चतुर्भुज" प्रभु गिरिधरनलाल छबि देखत ही बनि आवै।।15।।

21. बसंत श्रित–कमला–कुच–मएडल धृत–कुण्डल ए। कलित–ललित–वन–माल जय जय देव हरे!।। ध्रुव पद।।1।। दिन–मणि– मण्डल–मण्डन भव–खण्डन ए। मुनि–जन–मानस हंस जय जय देव हरे! ।।ध्रुव पद।।2।। कालिय–विष–धर–गन्जन जन–रन्जन ए। यदु–कुल– नलिन–दिनेश जय जय देव हरे!।।ध्रुव पद।।3।। मधु–मुर–नर–कवि–नाशन गरूडासन ए। सुर–कुल–केलि–निदान जय जय देव हरे !।। ध्रुव पद।।4।। अमल– कमल–दल–लोचन भव–मोचन ए। त्रिभुवन–भवन–निधान जय जय देव हरे !।। ध्रुव पद।।5।। जनक–सुता–कृत–भूषण जित–दूषण ए। समर–शमित –दश–कष्ठ जय जय देव हरे!।।ध्रुव पद।।6।। अभिनव–जल– धर–सुन्दर धृत–मन्दर ए। श्रीमुख–चन्द्र–चकोर जय जय देव हरे ! ।। ध्रुव पद ।।7।। तव चरणे प्रणताः वय–मिति भावय ए। कुरू कुशलं प्रणतेषु जय जय देव हरे !।। ध्रुव पद ।।8।। "श्रीजयदेव" कवेरिदं कुरूते मुदम्। मंगल–मुज्जवल–गीतं जय जय देव हरे ! ।।ध्रुव पद।। 9।।

22. बसंत बसंत बधावौ, चली ब्रज की नारि, सखि! नंद–पौरि ठाढे मुरारि।। राधा चंद्रभागा चंद्रावलि, भामा ललित सुसीले। संध्याबली कनक–घट सिर धरि, अंब–मौर जब लीले।। नए–नए चीर कसूँभी पहिरें, नव–सत आभरन सजिये। नव–नव सुख मोहन–सँग बिलसत, नवल कान्ह पिय भजिये। चोबा चंदन अगर कुंकुमा, उडत गुलाल अबीरे। खेलत फाग भाग बड गोपी, छिरकति स्याम सरीरे।। ताल मृदंग उपंग बाँसुरी, बाजत बीन रसाल। "कृष्णदास" प्रभु गिरिधर क्रीडत, रसिकराइ गोपाल।।

23. बसंत मदन महोच्छव आजु राधे। मदन गोपाल बसंत खेलि हैं नागरि बोध अगाधे। निसि बुधवार बंसत पंचमी रितु कुसुमाकर आई। जगत बिमोहत मकरध्वज की चहूँ दिसि फिरी दुहाई। रति–पति राज सिंहासन बैठ्यौ तिलक पितामह दीनों। छत्र चमर तूनीर संख धुनि धनुस चाप कर लीनों। चल हु सखी! तहाँ देखनि जैये हरि उपजावें प्रीति। 'परमानंददास' कौ ठाकुर सब जानत हैं रीति।।

24. बसंत आइ हैं हम नंद के द्वारे।। खेलत फाग बसंत पंचमी सुख समाज बिचारे।। 1।। कौऊ ले अगर कुमकुमा केसर काहू के मुख पर डारे। कौऊ अबीर गुलाल उड़ावै आनंद तन न संभारै।।2।। मोहन कौ गोपी निरख सब नीके बदन निहारै। चितवनि में सब ही बस किनी नागर नंदु दुलारे।। 3।। ताल मृदंग मुरली डफ बाजे झांझन की झनकारे। "सूरदास" प्रभु रीझ मगन भयै गोप बधू तन बारै।।4।।

–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–

25 बधाई के दिन बसंत आज बसंत बधायौ है, श्रीबल्लभ राज दुआर। श्रीबिट्ठलनाथ कियौ है रूचि–रूचि, नवल बसंत सिंगार।। बल्लभी सृष्टि समाज संग सब, बोलत जय जयकार। पुष्टि भाव सों पूजत हैं मिलि, बाढ्यो है रंग अपार। प्रेम भक्ति कौ दान करत, श्रीबल्लभ परम उदार। कृपा दृष्टि अवलोकि दास कों, देत हैं पान उगार।। श्रीबल्लभ राजकुमार लाल, व्रज राजकुंमर अनुहार। ऐसौ अद्भुत रूप अनुपम 'रसिक' जात बलिहार।।

26. बसंत चलि बन बहत मंद सुगंद सीतल मलयज समीरे। तुव पथ निहारत सखी! हरि सूरजा तीरे। चहूं दिसा फूले लता द्रुम हरखित सरीरे। तुव वरन सम स्यामसुंदर धरत पट पीरे। बिबिध सुर अलि गुंज कूजित मत्त पिक कीरे। तुव मिलन हित नंद नंदन हैं अति अधीरे। दास 'कुंभन' प्रभु करत तन बहु जतन सीरे। तुव विरह व्याकुल, गोवर्द्धन उद्धरन धीरे।।

27. बसंत स्याम सुभग तन सोभित छीटें नीकी लागी चंदन की। मंडित सुरंग अबीर कुंकुमा ओर सुदेस रज बंदन की ।।1।। "कुंभनदास" मदन तन मन बलिहारि कियौ नँदनंदन की । गिरिधरलाल रची बिधि मानों युवती–जन–मन–फंदन की।।2।।

28. बसंत रिंगन करत कान्ह आंगन में कर लीये नवनीत। सोभित नील जलद तन सुंदर, पहरे झगुली पीत।।1।। रूनझुन–रूनझुन नूपुर बाजत, त्यौ पग ठुमकि धरै।। कटि किंकिनी कलराव मनोहर, सुनि किलकार करै।।2।। दुलरी कंठ कनक दुर कानन, दीयौ कपोल दिठौना। भाल बिसाल तिलक गौरोचन, अलकावलि अलि छौना।।3।। लटकन लटकि रह्यौ भ्रुव ऊपर कुलह सुरंग बनी।। सिंघपौर तै उझकि–उझकि छबि निरखत है सजनी।।4।। नंदनंदन उन तन चितवत प्रेम मगन मन आई।। कंचन–थार साजि घर–घर कै बोहो–बिधि भोजन लाई।। 5।। मनि मंदिर मूढापै सुंदरि आछै बसन बिछावै।। बालकृष्ण कौ जौ रूचि उपजे अपने हाथ जिमावै।।6।। जल अचवाय वदन पोंछत अरू बीरी देत सुधारी।। हियै लगाय वदन चुंबन करि सरवस्व डारत वारी।।7।।नैनन अंजन दै लालन के मृगमद खौर करै।। सुरंग गुलाल लगाय कपोलन चिबुक अबीर भरै।।8।। चौवा चंदन छिरकि अबीर गुलाल फैट भराई।। तनक–तनक सी मोहन कौ भरि देत कनक पिचकाई।।9।। आपुस मांझ परस्पर छिरकत लालन पै छिरकावै।। न्हैनी–न्हैनी मुठी भराई रंगन सौ सैनन नैन भरावै।।10।। निरखी–निरखी फूलति नंदरानी तन मन मौद भरी।। नित्य प्रति तुम मेरे घर आवौ मानौ सुफल घरी।। 11।। देत असीस सकल ब्रज–बनिता जसुमति भाग्य तिहारै। कौटि बरस चिरजीयौ यह ब्रज जीवन प्राण हमारै।। 12।।

–:+:–

29. (पलना) बसंत अति–सुंदर–मणिजटित–पालनो झूलत लाल बिहारी। खेलत फाग सखा संग लीने नाचत दे करतारी।। 1।। घर–घर ते आई बन–बन के पहरे नौतन सारी। तनक गुलाल अबीरन ले के छिरकत राधा प्यारी।। 2।। गावत गारी आंगन में प्रमुदित मानो सुकुमारी। चोवा चंदन अगर कुमकुमा देत सीस ते ढारी।। 2।। लपट रहे तन बसन रंग में लागत हे सुखकारी। देख बिबस

भयै मनमोहन भर लीनै अंकबारी।। 4।। मिस ही मिस ढिंग आय पालनो झुलवन ब्रज की नारी। अबीर गुलाल लगाय कपोलन हँसत दै–दै करतारी।। 5।। तन–मन माली प्रान पिया सों नौतन सोभा बाढ़ी। सिथिल बसन मुकुलित कब री मानो प्रेम सिंधु ते काढ़ी।। 6।। यह सुख ऋतु बसंत लीला में बाल केलि सुखकारी। सरवस दैत बार प्यारे पर जन "गोविंद" बलीहारी।। 7।।

30. बसंत देख सखी री पलनां झुलत सुंदर स्याम सलोनों। चकई भोंरा फिरकनी लट्टू खेलत बिबिध खिलौना।। 1।। करन कनक पिचकाई तनक सी छिरकत नंद ललोनां। अबीर गुलाल उडावत सबहिन नागर नंद ठिठोना।। 2।। भाल तिलक गोरोचन अति छबि चितवन में कछु टोना।। रूप अनूप अलक घुंघरारी मृगमद आड कपोल दिठोना।। 3।। देखी रूप ठगोरी सी लागत अंग–अनंग लजानो। घर में देखे पलना झूलत बाहिर तरून तरोनों। 4।। खटरस व्यंजन स्वाद सलौना इन बिन सब हिं अलोना। रह्यो न परे गृह छिन मेरी आली कुंजन–कुंजन कैल करोना। 5।। श्रीगिरिधरलाल की लीला अद्भुत मुनि जन ध्यान धरत धर मोना। अतुल प्रताप अभय पद दायक सो ये हरि जसुमति को छोना।। 6।। लोक लाज कुल कान तज्यो अब ये होनी होय सो होना।। "दासन" के प्रभु गोवर्धन धर सब सुख फलन फलोनां।। 7।।

–:+:–

31. मान (रूठना) बसंत ऐसौ पत्र पठायौ नृप बसंत। तजहु मान मानिनी तुरंत। कागद नव दल अंबनि पात। देति कमल मसि भँवर सुगात। लेखिनि काम बाने कै चाप। लिखि अनंग कसि दीन्ही छाप। मलयानिल चर पठयौ बिचारी। बाँचत सुक पिक सुनि सब नारि। 'सूरदास' क्यौं होई आन। भजि हरि गोपी तजहु सयान।।

32. बसंत गिरिधरलाल की बानक ऊपर आजु सखी तृन टूटै री। चोवा चंदन अगर कुंकुमा, पिचकांइनि रँग छूटै री।। लाल के नैंन रगमगे देखियतु, अंग अंनगनि लूटै री। ''कृष्णदास'' धनि–धन्य राधिका, अधर–सुधा रस घूँटै री।।

33. बसंत एक बोल बोलो नंदनंदन, तो खेलो तुम संग। परसो जिन काहू कों प्यारे आन अंगना अंग।।1।। बरजति हों बीरी काहु की जसुमति सुत जिन लेहू। परिरंभन–आलिंगन–चुबंन नैन सैन जिन दे हू।।2।। मेरे खेल बिच कौऊ भामिनी, आय लाल को भरि हैं। प्राननाथ हों कहें देत हो मौ पें सहि न परि हें ।।3।। प्रभु मोहि भरे, भरो हों प्रभु कौं, खेलो कुंज–बिहारी। "अग्रस्वामि" सौ कहत भामिनी रंग उपजेगो भारी।। 4 ।।

34. मान मिलाप बसंत देखि बसंत समै व्रजसुंदरी तजि अभिमान चली वृंदावन। सुन्दरता की रासि किसोरी नवसत साजि सिंगार सुभग तन। गई तिहिं देखि–देखि ऊचें द्रुम लता प्रकासित गुंजित आलिगन। 'कुंभनदास' लाल गिरिधर कों मिली कुंवरी राधा हुलसत मन।।

35. (उल्हना) काफी बरजो जसुदाजी कान्हा। में जमुना जल भरन जात ही मारग निकस्यो आना। बरजत ही मेरी गागर फोरी लै अबीर मुख सानो सखी सब दैत है ताना।।1।। मेरो लाल पलना में झूले बालक है नादाना। ये क्या जाने रस की बतिया क्या जाने खेल जहाँना कहाँ तुम भूली भाना।।2।।तुम सांची तुमरो सुत साचो हम हो करत बहाना।। "सूरदास"ब्रजवास न त्यागे ब्रज सो अनत न जाना करो अपना मन माना।।3।।

36. बसंत जसोदा नहीं बरजे अपनो बाल। अपनो बाल रसिया गोपाल ।।1।। स्नान करन गई जमुना तीर। कर कंकन अभरन धरे चीर।। 2।। मेरी जल प्रवाह तन गई दीठ। पाछे ते कान्ह मेरी मलत पीठ।। 3।। यह अन्न न खाय मुख पीवे न खीर। यह केती बार गयो जमुना तीर।। 4।। हों वारी ग्वालिन तेरो ज्ञान। यह पलना झूले मेरो बारो कान्ह।। 5।। बृंदाबन देखे में तरूण कान्ह। घर आय के कैसे भयै अयान।। 6।। उठि चली ग्वाल जिय उपजी लाज।। "सूरदास" ये प्रभु के काज।। 7।।

37. राज भोग आने बसंत बसंत ऋतु बसंत बृंदाबन फूले द्रुम भांति–भांति, सोभा कछु कहि न जाति, बोलत पिक मोर कीर। खेलत गिरिधरन धीर, संग ग्वालवृंद भीर विहरत मिलि यमुनातीर बाढी तन मदन पीर। आई व्रज नवल नारि संग राधिका कुमारि कीने नव सत सिंगार, साजे नव वसन चीर। वदन कमल नैन भाल छिरकत केसरि गुलाल बूका चोवा रसाल सोंधो मृगमद अबीर। बाजत बीना मृदंग बांसुरी उपंग चंग मदन भेरि महुवरि डफ झांझ झालरी मंजीर। निरखत लीला अपार भूली सुधबुध संभार बलिहारी 'कृष्णदास' देखत व्रज चंद धीर।।

38. बसंत नवल बंसत, नवल बृंदाबन, खेलत नवल गोवर्द्धनधीर। हलधर नवल, नवल ब्रजबालक, नवल–नवल बनी गोकुल–भीर। नवल जमुनातट, नवल विमल जल नौतन मंद सुगंध समीर। नवल कुसुम नव साखा पल्लव, संचित नवल मधुप पिक कीर।। नव मृगमद नव कुंकुम चंदन, नौतन अगर सु–नवल–अबीर। नव बंदन, नव हरद कुंकुमा खेलत नवल परस्पर बीर।। नवल बेनु नव बाजे अनुपम, नौतन भूषन नौतन चीर। नवल रूप नव "कृष्णदास" प्रभु नौतन जस गावत मुनि कीर।।

39. बसंत लालन संग खेलन फाग चली। चोवा चंदन अगर कुंकुमा छिरकत घोष गली।।1।। ऋतु बसंत आगमन नवनागरी जोबन भार भरी। देखन चली लाल गिरिधर कों नंद जु के द्वार खरी।।2।। राती पीरी चोली पहरे नौतन झूमक सारी। मुख हि तंबोल नैन में काजर दैत भावती गारी।।3।। बाजत ताल मृदंग बांसुरी गावत गीत सुहायै। नवल गुपाल नवल ब्रज बनिता निकसि चौहटे आयै।।4।। देखो आय कृष्ण जु की लीला बिहरत गोकुल माँही। कहत न बने दास "परमानंद" यह सुख अनत जु नाहीं।।5।।

40. बसंत जुवतिन संग खेलत फाग हरी। बालक बृंद करत कोलाहल सुनत न कान परी। बाजत डफ मृदंग बांसुरी किन्नरि सुर कोमलरी। तिन हूं मिले रसिक नंदनंदन मुरली अधर धरी। कुमकुम वारि अरगजा बिबिध सुगंध मिलाय करी। पिचकारिन परस्पर छिरकत अति आमोद भरी। टूटत हार चीर फाटत गिरि जहां तहां धरनि धरी। काहू नहिं संभार क्रीडा रस सब तन सुधि बिसरी। अति आनन्द मगन नहीं जानत, बीतत जाम घरी। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर सरबस दे निवरी।।

41 बसंत छींट छबीली तन सुख सारी प्यारी पहिरे सोहे। नवल लाल रस रूप छबीलो निरखत मनमथ मोहे।। 1 ।। कैली कला रस कुंज भवन में क्रीडत अतिसुख हौ हे।। "हरिदास" के स्वामी स्यामा कुंज बिहारी उपमा को कहिये को हे।। 2।।

42. बसंत चलि हे भरन गिरिधरन लाल को बनि–बनि अनगन गोपी। सबरि है उबट नवल चपला तन मानो दामिनी ओपी।।1।। पहरे बसन बिबिध रंग भूसण करन कनक पिचकाई चंचल चपल बडे री अखिया मानो अरग–लगाई।।2।। छिरकत चली गली गोकुल को कही न परत छबि भारी। उडि–उडि केसरि बूका बंदन अढ़ गये अटा अटारी।।3।। सखन–सहित सजि सांवरे सुंदर सुनत ही सन्मुख आयै।। मानो अंबुज बनवास दिवस व्है अलि लंपट उठि धायै।।4।। हरि कर पिचका निरखि त्रियन के नैना छबि सों ठहराई। खंजन से मानो उडिव चले हें हरि के मीन हें जाई।।5।। पहले कान्ह कुंवर पिचकाई भरि भरि त्रियन कों मेली। मानौ सोम सुधाकर सींचत नवल प्रेम की बैली।।6।। पिय कै अंग त्रियन कै लौचन लपटे है छबि की सौभा। मानो हरि कमलन कर पूजे बनी है अनूपम सौभा।।7।। दुरि–दुरि भरन बचावन छबि सौ आवनि उलटनि सौहे। घुमड्यौ अबीर गुलाल गगन में जो देखे सो मौहै।।8।। बिच–बिच छूटत कटाक्ष कुटिल सर उचिट हूल को लागी। मुरझि पर्यो लखि मैन महाभट रति भुज भर ले भागी।।9।। कहाँ लौ कहत कहन नहीं आवै छबि बाढी तिहि काला।। "नंददास" प्रभु तुम चिरजीवौ बाल नंद के लाला।।10।।

43. बसंत खेलत गुपाल सब सखिन संग। नव–नव अंबर भरे रंग–रंग ।। ध्रु.।। मुरली बेन डफ नये चंग। मध्य नई कुहुक बाजै उपंग।। सुर समूह नई–नई तरंग।। जहां नई–नई गति उपजत मृदंग।।1।। मृगमद लपटै चंदन सुगंध। केसरि कुमकुम मलय मकरंद। हुलसि जुवति वर बृंद बृंद। लीनै लपेटि आनंद कंद।। 2।। उडी परस्पर अरून रूंदि। दुरत भरत मुख नैन मूंदि।। घूंघट में मुख लसत मंद।। मानो अरूण जलधि में दुरे चंद।।3।। सखी एक तव कियो बंद। चतुर बौलि सिखयौ सुछंद।। पिय नाम टेर कह्यो नंद–नंद। रहौ–रहौ भरी जु नागरनंद।।4।। हाथ झारि हरि कौ दिखाय। चौली में सोंधौ दुराय।। त्रियन अंक हंसि के बताय।। गहे तब ही सब परि हे धाय।। 5।। कौउ निरखत लौचन अघाय। कौऊ आन द्रग आँजत सिराय।। कौऊ मुख पकरि रोरी फिराय। कौऊ कहत भलौ हौ स्यामराय।। 6।। बिबस प्रेम बिबस स्यामलाल। मन भायै सब करत बाल। भरत अंक भरि–भरि गुलाल। "सूरदास" तहां काम पाल।।7।।

44. बसंत चटकीली चोली पहिरे बिच–बिच चोवा लपटानौ। परम प्रिय लागत प्यारी को अपने प्रीतम को बानौ।। 1 ।। देखत सोभा अंग–अंग की मनसिज मन ही लजानौ।। "सुघरराय" प्रभु प्यारी की छबि निरखत मोह्यो गोवर्धन रानौ।।2।।

45. बसंत खेली–खेली हो लडैती राधा! हरि के संग बसंत। मदनगोपाल मनोहर मूरति मिल्यौ भाँवतो कंत। कौन पुन्य तप कौ फल भामिनि! चरन कमल अनुराग। कमल नयन कमला कौ वल्लभ कनक हिं मिल्यो सुहाग। इहि कांलिदी इहि बृंदाबन इहि तरुवर की पाँति। 'परमानंद' स्वामी संग क्रीडत द्यौस न जानी राति।।

46. बसंत खेलत बसंत बल्लभ कुमार। सोभा समुद्र बाढयो अपार।।1।। श्रीगिरिधर गिरिधिरन साथ। रंग भरत कनक पिचकाई हाथ।।2।। श्रीगोविंद बालकृष्ण जु संग। छिरकत डारत बहु भांति रंग।।3।। रस खैलत खैल गोकुल के नाथ।। केसर रंग सौहत पाग माथ।।4।। श्रीरघुपति जदुपति अति सुदेस।। घनस्याम सुभग सुंदर सुवेस।।5।। श्रीकल्याणराय लीला रसाल मुरलीधर दामोदर कृपाल।।6।। श्रीगोपीनाथ बालक बिनोद। सेवकजन निरखत मन प्रमोद।।7।। श्रीगोकुल परम सुदेस धाम।। मिलि गावत गीत बिचित्र वाम।।8।। बाजत मृदंग मुख चंग रंग।। बीणा कठताल पिनाक उपंग।।9।। केसरि चौवा मृगमद फुलैल।। ब्रज–भामिनी छिरकत रैलपैल।।10।। झोरी भरि–भरि उडवत गुलाल।। मुख बोलत हो–हो होरी ग्वाल।।11।। यह सुख सौभा मौपे कहि न जाय।। "जनदास" निरखि बलिहारी जाय।।12।।

47. बसंत श्रीगोवर्धन की सिखर चारू पर फूली नव माधुरी जाई। मुकलित फल दल सघन मंजुरी सुमन सुसोभा बहोत भाई। कुसुमित कुंज पुंज द्रुम बेली निर्झर झरत अनेक ठाई। "छीतस्वामी" ब्रज–जुवती जुथ में बिहरत हैं गोकुल के राई।। 2।।

48 संध्या आर्ति आवनी बसंत हरि जू के आवन की बलिहारी। वासर गति देखति हैं ठाढी प्रेम मुदित व्रजनारी। ऋतु बसन्त कुसुमित बन देखियत मधुप बृंद जस गावै। जे मुनि आय रहत बृंदाबन स्याम मनोहर भावै। नीको भेस बन्यो मनमोहन राजत मनि उरहार।। मोर पीछ सिर मुकूट बिराजत नंद कुमार उदार ।। घोस प्रवेस कियो हैं संग मिलि गौरज मंडित देह। 'परमानंद' स्वामी हित कारन जसुमति नंद स्नेह।।

49. बसंत मान तजौ भजौ कंत, रितु बसंत आयौ। बन सोभा निरखि–निरखि, पथिकन सुख पायौ।।1।। फूली बनराई जाई मधुकर पराग लिपटायौ।। अब मौर ठौर–ठौर, बृंदाबन छायौ।। अति सुगंध बहत वात, सुचि पराग उड़ायौ। उपनद झंकार करत, बिरही जन डरायौ। तिहारे हित कारन प्यारी, सब्द यह सुनायौ।'रसिक प्रीतम' जाय मिलौ, जुबतिन मन भायौ।।4।।

50. बसंत रति पति दे दुःख करि रति पति सों। तू तो मेरी प्यारी प्यारे हू की प्यारी उठ चलि गज गति सों।।1।। दूती के वचन सुनि, मनि मुसिकानी भूसन बसन सोंधो लियो बहु भांतिसों। 'कल्यान' के प्रभु गिरिधर नागर धाय लई उर अति सों।।2।।

51. पोढवे फाग बसंत खेलि फाग अनुराग भरे दोऊ, हँसति चले पोढ़न पीय प्यारी।।नवल कुंज नव धाम मनोहर, नवल बाल नव केलि बिहारी।।1।।नवल सहचरी गान करति नव, नवल ताल बीना कर धारी।। पौढ़े नवल सेज नव "व्रजपति", चांपत चरन नव भानु कुमारी।।2।।

52. बसंत आज सुभग दिन बसंत पंचमी जसुमति करति बधाई।। विविध सुंगध उवटि कें लाल कों ताते नीर न्हवाई।।1।। बांधी पाग बनाय सेत रंग आभूषन पहराई।। तनक सीस पर मोर चंद्रिका दिस दाहिनी ढरकाई।।2।। गृह गृह तें ब्रज सुंदरि सब मिलि नंद पोरि पे आई।। अंब मोर के पुष्प मंजुरी कनिक कलश बनाई।।3।। चोवा चंदन अगर कुंकुमा केसरि रंग मिलाई।। प्रमुदित छिरकत प्रान पिया कों अबीर गुलाल उड़ाई ।।4।। बाजत लाल मृदंग झांझ डफ गावत गीत सुहाई।। तन मन धन नोछावरि कीनों आनंद उर न समाई।।5।। श्रीगिरिवरधर तुम चिरजीवों भक्तन के सुखदाई।। श्रीवल्लभ पद रज प्रताप तें 'हरीदास' बलिजाई।।6।।

53. बसंत खेलि फागु अनुरागु मुदित, जुबती जन देति असीस।। रसिकन की रस रासि श्रीवल्लभ, जीयौ कौटि बरीष।।1।। फिरि आई खेलन कैं कारन, अबला जुरि दस बीस।। 'हरिदास' कै स्वामी स्यामा, खेलौ बसंत, जय जय गोकुल कै ईस।।2।।

54. बसंत परम पुनीत बसंत पंचमी मुरत शुभ दिन साजे हो।। गोपी ग्वाल मुदित मन मांहि खेलत बन वृजराजे हो।।1।। ब्रह्मादिक सनकादिक नारद सुर विमान चढआये हो।। अष्टसिद्धि नव निधि हू ठाडी ले कर कुसुम बधाये हो।।2।। फूल्यो वृंदावन फूल्यो गोवर्धन फूल्यो जमुना तीर ।। 'रामदास' प्रभु गिरीधर फूले नख शिख शोभा स्याम शरीर।।3।।

55 बसंत बसंत पंचमी मदन प्रगट भयो सब तन मन आनंद।। ठोर ठोर फूले पलास द्रुम और मोर मकरंद।।1।। विविध भांत फूल्यो वृंदावन कुसुम समूह सुगंध।। कोकिल मधुप करत गुंजार गावत गीत प्रबंध ।।2।। सारस हँस सरोवर के तट बोलत सरस अमंद।। नाना पहुप परागन के भरी आवत पवन सुगंध ।।3।। बैनु बजाय करी मन मोहित गोपीन को नंदनंद ।। मिल धाई वृषभानु सुता पै परी प्रेम कें फंद ।।4।। गोवर्धन गिरि कुंज सदन में करत विहार सुछंद।। 'दास' निरखि बलि बलि शोभा पै स्यामा गोकुलचंद।।5।।

56 बसंत आई आज बसंत पंचमी खेलन चलो गोपाल।। संग सखा ले हो मन मन मोहन हम ले हें व्रजवाल।।1।। चोवा चंदन ओर अरगजा केसरि माट भराई।। अबीर गुलाल की झोरी भरि भरि ले हो हाथ पिचकाई।।2।। छिरकत हंसत चलत वृंदावन करत कुलाहल देत हें गारी।। ग्वालन संग लिये नंदनंदन सखियन संग श्रीराधा प्यारी।।3।। एक नाचत एक धाय मिलावत एक मृदंग एकताल बजावत।। यह सुख देखि सुर लोक आनंदित 'स्यामदास' बलिहारी जावत।।4।।

57 बसंत नवल बसंत बीच वृन्दावन मोहन रास रचायौं।। सुर बिमान चढि देखन आए निरखि निरखि सुख पायौं।। नाँचति लाल पग नूपुर बाजैं मुरली सब्द सुहायौं।। ताल मृदंग, झांझ, ढफ बाजति सब इक तार मिलायौं।।2।। साँवल, स्याम, गौर हैं प्यारी मिलि रस सिंधु बढायौ ।। गोपी ग्वाल परसपर नाँचति अद्भुत रंग जमायौं।।3।। कहा कहौं लीला राधा बर की किन हुं अंत न पायौं।। या लीला पै वार वारनैं 'रामदास' बलि जायौ।।4।।

58 बसंत नवल बसंत नवल वृंदावन नवल ही फूले फूल ।। नवल ही कान्ह नवल वनी गोपी निर्तत एक ही तूल।।1।। नवल गुलाल उडे रंग बूका नवल बसंत अमूल।। नवल ही छींट बनी केसरि की मेटत मनमथ सूल।।2।। नवल ही ताल पखावज बाजत नवल पवन के झूल।। नवल ही बाजे बाजत 'श्रीभट' कालिंदी के कूल।।3।।

59. पोढवे बसंत खेलत खेलत पौढी श्रीराधा नवललाल गिरिधर पिय संग। चोवा, चंदन अगर अरगजा झारत फिरत सकल अंग–अंग।।1।। बाजत ताल मृदंग अघोटी बीना मुरली तान तरंग। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर छबि पर मोहे कोटि अनंग।।2।।

55 बसंत बसंत पंचमी मदन प्रगट भयो सब तन मन आनंद।। ठोर ठोर फूले पलास द्रुम और मोर मकरंद।।1।। विविध भांत फूल्यो वृंदावन कुसुम समूह सुगंध।। कोकिल मधुप करत गुंजार गावत गीत प्रबंध ।।2।। सारस हँस सरोवर के तट बोलत सरस अमंद।। नाना पहुप परागन के भरी आवत पवन सुगंध ।।3।। बैनु बजाय करी मन मोहित गोपीन को नंदनंद ।। मिल धाई वृषभानु सुता पै परी प्रेम कें फंद ।।4।। गोवर्धन गिरि कुंज सदन में करत विहार सुछंद।। 'दास' निरखि बलि बलि शोभा पै स्यामा गोकुलचंद।।5।।

56 बसंत आई आज बसंत पंचमी खेलन चलो गोपाल।। संग सखा ले हो मन मन मोहन हम ले हें व्रजवाल।।1।। चोवा चंदन ओर अरगजा केसरि माट भराई।। अबीर गुलाल की झोरी भरि भरि ले हो हाथ पिचकाई।।2।। छिरकत हंसत चलत वृंदावन करत कुलाहल देत हें गारी।। ग्वालन संग लिये नंदनंदन सखियन संग श्रीराधा प्यारी।।3।। एक नाचत एक धाय मिलावत एक मृदंग एकताल बजावत।। यह सुख देखि सुर लोक आनंदित 'स्यामदास' बलिहारी जावत।।4।।

57 बसंत नवल बसंत बीच वृन्दावन मोहन रास रचायौं।। सुर बिमान चढि देखन आए निरखि निरखि सुख पायौं।। नाँचति लाल पग नूपुर बाजैं मुरली सब्द सुहायौं।। ताल मृदंग, झांझ, ढफ बाजति सब इक तार मिलायौं।।2।। साँवल, स्याम, गौर हैं प्यारी मिलि रस सिंधु बढायौ ।। गोपी ग्वाल परसपर नाँचति अद्‌भुत रंग जमायौं।।3।। कहा कहौं लीला राधा बर की किन हुं अंत न पायौं।। या लीला पै वार वारनैं 'रामदास' बलि जायौ।।4।।

58 बसंत नवल बसंत नवल वृंदावन नवल ही फूले फूल ।। नवल ही कान्ह नवल वनी गोपी निर्तत एक ही तूल।।1।। नवल गुलाल उडे रंग बूका नवल बसंत अमूल।। नवल ही छींट बनी केसरि की मेटत मनमथ सूल।।2।। नवल ही ताल पखावज बाजत नवल पवन के झूल।। नवल ही बाजे बाजत 'श्रीभट' कालिंदी के कूल।।3।।

59. पोढवे बसंत खेलत खेलत पौढी श्रीराधा नवललाल गिरिधर पिय संग। चोवा, चंदन अगर अरगजा झारत फिरत सकल अंग–अंग।।1।। बाजत ताल मृदंग अघोटी बीना मुरली तान तरंग। 'कुंभनदास' प्रभु गोवर्धनधर छबि पर मोहे कोटि अनंग।।2।।

60. विशेष बसंत श्रीवल्लभ प्रभु करुना सागर जगत उजागर गाइए।। श्रीवल्लभ के चरन कमल की बलि-बलि बलि-बलि जाइए।।1।। वल्लभी सृष्टि समाज संग मिली जीवन कौं फल पाइए।। श्रीवल्लभ गुन गाइए और याहि तैं 'रसिक' कहाइए।।2।।

61 बसंत खेलत हैं हरि आनंद होरी।। करतल ताल बजावत गावत रामकृष्ण की जोरी।।1।। ऋतु कुसुमाकर कामदेव पिय माखन दूध दही की चोरी ।। जाके भवन कछु नहि पावत ताके चले उठि भाजन फोरी ।।2।। देखत गोपी सुंदर लीला घूंघट और हँसि मुख मोरी।। 'परमानंद' स्वामी बहु रंगीसब यों सुख देखि कर पौरी।।3।।

62 बसंत खेलति खेलति पौढी स्यामा नवललाल गिरिधर पिय सँग।। चोवा चंदन अगर कुंमकुमा झारति फिरति सकल अँग अँग।।1।। बाजति ताल मृदंग अघौंटी बीना मुरली तान तरँग ।। 'कुंभनदास' प्रभु यह बिध क्रीडति जमुना पुलिन लजावति अनँग।।

63 बसंत खेली बसंत जाम चारयौ निसि हँसति चले पौढ़न पिय प्यारी।। नवल कुंज नव धाम मनोहर नवल बाल नव केलि बिहारी ।।1।। नवल सहचरी गान करति नव नवल ताल बीना करधारी।। पौढ़े नवल सेज नव 'ब्रजपति' चाँपति चरन नव, भानु कुमारी।।2।।

64 बसंत बसंत बनाई चली ब्रज सुंदरि रसिकराय गिरिधर पिय पास।। अँग अँग बेलि फूलि मृग नैंनी कुच उतंग मनौं कमल विकास।।1।। कोक कला बिध कुंज सदन मैं गिरिवरधर सँग किये बिलास।। कुसम पर्यंक अँक भरि पौढे निरखति बलि 'परमानँद' दास।।2।।

65 बसंत खेलि फाग अनुराग भरे दोऊ हँसति चले पोढन पीय प्यारी।। नवल कुंज नव धाम मनोहर नवल बाल नव केलि बिहारी।।1।।नवल सहचरी गान करति नव नवल ताल बीना कर धारी।। पौढे नवल सेज नव ब्रजपति चांपत चरन नव भानु कुमारी।।2।।

66 बंसतोत्सव बसंत आज बसंत बधायौ है, श्री बल्लभ राज दुआर। श्री विट्ठलनाथ कियौ है रुचि-रुचि, नवल बसंत सिंगार।। बल्लभी सृष्टि समाज संग सब, बोलत जय जयकार।। पुष्टि भाव सों पूजत है मिलि, बाढ्यौ है रंग अपार।। प्रेम भक्ति कौ दान करत, श्री बल्लभ परम उदार।। कृपा दृष्टि अवलोकि दास कों, देत हैं पान उगार।। श्रीबल्लभ राजकुमार लाल, ब्रजराज कुमर अनुहार। ऐसौ अद्भुत रूप अनूपम, 'रसिक' जात बलिहार।।

होरी के पद

67 जगायवे विभास जागो कृष्ण खेलो रंग होरी। अबीर गुलाल लियो भर झोरी।।1।। ब्रज–नव–बधु निकसी खेल को घोख रायजी की पौरी।। कछु खाओं सुगध पेट भर करो रगमगे राम तुम जोरी। संग सखा खेलन को जाओ 'दास निरख' बोलत हो होरी।।

68. कलेऊ विभास करो कलेऊ बलराम कृष्ण तुम मिल ब्रज नारी सिमटि सब आई। चोबा चंदन अगर कुंमकुमा साज काम की सब सज लाई।।1।। कछु खायो कछु धरनि गिरायो उमंग आनंद उर न समाय 'सूर स्याम' होरी रस पागे उठे अचवन करि बीरा खाय।।2।।

69. विभास खिलावन आवेगी ब्रजनारी। जागो लाल चिरैयाँ बोलीं कहि जसुमति महतारी।।1।। औट्यो दूध पान करि मोहन बेगि करि स्नान गुपाल। करि सिंगार नवल बानिक बन फेंटन भरो गुलाल।।2।। बलदाऊ ले संग सखा सब खेलो अपने द्वार। कुमकुम चोवा चंदन छिरको घसि मृगमद घनसार।।3।। लरकन हेरि सुनो मनमोहन गावत आवे गारी। 'ब्रजपति' तब हीं चौंकि उठि बैठे कित मेरी पिचकारी।।4।।

70. विभास जागि कह्यौ जननी सों मोहन। आज कहा मोइ बैगि जगायौ, सो बताय कहियै मोहि सोहन।।1।। जसुमति कह्यौ जु आज परब दिन, पून्यौ सुख की रासी। डाँडों रोपन नंद जाँइगें, संग लियैं ब्रजवासी।।2।। उत बृषभान इत नंदराय जू, होड़ परैगी भारी। उत प्यारी इत प्यारे कौ दल, को जीतै को हारी।।3।। तातें मनमोहन बलदाऊ, सब समाज मिल लीजै। और गोप लीजै रखवारी, गोपी सब बस कीजै।।4।। यह सुनि रमकि उठे गिरिबरधर, मैया मोय ही न्हवाओ। देखों आज खेल होरी कौ, माखन मोहिं खबाओ।।5।। तब जसुमति गोपाल लाल कों, उबटि न्हवाये प्रीत। करत सिंगार परम रूचिकारी, ब्रज बासिन से चीत।।6।। रुचिर पाग बाँधी सिर ऊपर, मोरि चद्रिंका धारी। तब सब बात जानि ब्रजबनिता, चली सिंगार सिंगारी।।7।। सब मिलि एक ठौर व्है आईं, जसुमति गृह के द्वार। भीतर धँसि उर लाइ ललन, मुख हरषे लोचन चार।।8।। सैनन में सब भेद कह्यौ, हँसि मोहि मोहन मन लीन्हों। 'रसिक प्रीतम' जानत अंतर गति, मन भायौ सब कीन्हों।।9।।

71. विभास आज तौ छबीलौ लाल प्रात ही खेलन चल्यौ, सखा संग के लै लिये, प्रेम गारी रह्यौ गाइ कै।। खेलत–खेलत सब, बृषभान जू की पौरि आये, हो हो हो हो बोलें बोल प्यारी मन भाइ कै।। 1।। छबीली प्यारी रचौ उपाइ, स्याम कों लीये बुलाइ, मैया की दृष्टि बचाइ लीन्हे उर लाइ कैं।। अरस परस हरष दोऊ, महा मोद रस भीने, सहचरी सुख पावें महा "रसिक" मुख सो गाइ कें।।2।।

72. भैरव भोर भये नंदलाल संग लिये ग्वाल बाल फेंटन भर्यो गुलाल बोलत हैं मुख होरी। केसरि भरि कलस साथ पिचकारी लिये हाथ छिरकत हैं सोंधो गुलाल डारत ब्रज खोरी।।1।। जुवतिन जूथ माहिं धँसि काढत पकरि बांह मन में कछु सकुच नाहिं लीने भरि कोरी। बाजत डफ मृंदग ताल कूजत मुरली रसाल झुंडन मिलि गावत बिच महुवरि धुनि थोरी।।2।। यह बिधि हरि करत केलि बरन्यो नहि जात खेल अनुरागे पागे सब आये नंद पोरी। निरखत मुख मुसिक्यानी आरति वारत नंदरानी छबि पर वार डारों 'हरिजीवन' तृन तोरी।।3।।

73 भैरव वृंदावन बंसीबट के तट ब्रजभूषण खेलत हे होरी।। अगर अबीर गुलाल उडावत नंदनलाल बृषभान किशोरी।।1।। अपने अपुने गृहतें निकसी आली सास ननन की चोरी ।। ओर सखी सब छांडि स्याम मेरो कर मरोड पहोंची गहितोरी।। 'सूरदास' प्रभु सबसुखदायक कंचन अरु पारसकी जोरी।।3।।

74. ललित तुम कौन के बस खेले हो रंगीले, हो–हो होरियां।। अंजन अधरन पीक महावर नैन रंगे रंग रोरियां।।1।। बार–बार जृंभात परस्पर निकसि आई सब चोरियां।। "नंददास" प्रभु उहांई बसौ किन जहाँ बसै वे गोरियां।।2।।

75. ललित कुंज कुटीर मिली जमुना तीर खेलत होरी रस भरे अहीर।। एक और बलबीर धीर हरि एक और जुवतिन की भीर।।1।। कैकी कीर कंला गुन गुभीर पिक डफ मृदंग धुनि कर मंजीर।। पग मंजीर कर लै अबीर केसरि के नीर छिरकत हैं चीर।।2।। भई है भीर रति पथ के तीर आनंद समीर परसत सरीर।। "नंददास" प्रभु पहिरे चीर तन मिटत पीर, बाढ्यो सुख को सीर।।3।।

76. देवगंधार आजु माई! मोहन खेलत होरी। मोहन खेलत होरी। नौतन भेष काछि ठाढे भये संग राधिका गोरी।।1।। अपने भवन तै आई देखनि श्रीवृषभानु किसोरी। चोबा चंदन और कुमकुमा मुख मंडित लै रोरी।।2।। छूटी लाज तब तन न सँभारति अति विचित्र बनी जोरी। माँच्यो खेल रंग भयो भारी या उपमा कों को री।।3।। देति असीस चली ब्रज बनिता अंग–अंग सब भोरी। 'परमानंद' प्यारी की छबि पर गिरिधर देत अँकोरी।।4।।

77 बिलावल हरि सँग होरी खेलनि आँई । चन्द्रभगा, चंन्द्रावलि भांमा, राधा परम सुहाई।।1।। चोवा चंदन अगर कुँमकुमा सुरँग गुलाल उड़ाई।। रतन–जटित पिचाकाईन भरि भरि छिरकति कुँवर–कन्हाई।।2।। ताल,मृदंग, पटह ढ़फ बाजै, घोष नगारे घाई।। श्रीमंडल सहनाई सुंदर बिच बिच बैनु बजाई।।3।। अरस परस खेलति पिय प्यारी, उपमा बरनि न जाई।।'सूरदास' बलि जाई बदन की निरखि निरखि मुसिकाई।।4।।

78. देवगंधार हो–हो होरी खेलति गिरिधारी।। इत सब बालक उत ब्रज–जुबती सँग वृषभानु दुलारी।।1।। आँई जुरि सब नंद पौरि पै भीर भई अति भारी।। बाजति ताल मृदंग झांझ डफ गावति दै कर तारी।।22।। चोवा चंदन अरू अरगजा केसरि रंग संभारी।। रतन खचित पिचकारी कर लै छिरकति हैं पिय प्यारी।।3।। सुरँग गुलाल अबीर उड़ावति हो–हो सबद उचारी।। बरन–बरन भये बसन सबन के भीजि रही रँग सारी।।4।। सब सखियन मिलि मोहन पकरे कर जु गहे सुकुमारी।। नैंन आँजि छीन लई मुरली, देति भाँवती गारी।।5।। फगुवा देहु हमारो लालन, मोहन मदन मुरारि।। मेवा बसन आभुषण दीनै, देति असीस, ब्रजनारी।।6।। निरखि बिनोद हरखति सुरपति, जिय पुहुप वृष्टि करि भारी।। 'श्रीविट्ठल'' गिरिधरन' लाल की तन मन धन बलिहारी।।7।।

79 देवगंधार हों तो होरी नंदलाल सो खेलोंगी। भरूं भराउं गति उपजाउ जग उपहास सहेलोंगी।।1।। नाचूँ उघरि बजाउं गाउं पतिव्रत पायन पेलूंगी। कृष्ण जीवन लछिराम के प्रभु सों रीझि माल गुलरी मेलोंगी।।2।।

80 बिलावल ग्वालिनी फगुवा माँगनि आई।। आजु चलौ नँद जू की पौरी
अद्भुत खेली मचाई।।1।। सुरँग गुलाल अबीर उड़ावति, करन कनक पिचकाई।।
झाँझ झालरी रबाब किन्नरी बाजे बहुत मँगाई।।2।। भरे अरगजा केसु, केसर सौंधो
बहुत सुहाई।। ताल, मृदंग, उपंग, चँग, रँग, भेरि दमाम बजाई।।3।। या विधि तैं नंद
जू के द्वारे बहु विधि खेल मचाई।। देखि जसोमति मन अति प्रफुलित अंग-अंग सुख
पाई।।4।। सब मिलि आँई धाई महरि पै मोहन देंओ बताई।। सुनि बलबीर आई ठाढ़े
भए चंद्रावलि पकराई।।5।। तब नँद लाल धाई जुवतीन पै चहुँ दिसि तैं जुरि आई।।
मोहन पकरि स्यामा बस कींनौं होरी बोलि सुनाई।।6।। यह संकरषन देखि हँसे मन,
मोहन पकर्‍यों जाई।। एकनु घेरि लेति मुख चुंबन, एकनु, काजर ल्याई।।7।। या बिधि
होरी खेलति हैं, जु भेट परसपर माई।। नंद-नँदन वृषभानु किसोरी गोपी मन हुलसाई।।8।।
अब हीं फगुवा देहु लाल जू तौई छूटन पाई।। तब हीं मान लियौ नँद लाला कियौ सबन
मन भाई।।9।। एक हि नैन आँजि बृजनाथ हि एकनु पान खवाई।। एकु हि बाम भाग
होई ठाड़ी मुरली लेत छिड़ाई ।।10।। एकु हि केसर घोर सुरंगी सौंधो जिस बिध लाई।।
एकुई अंगिया झटकति पटकति तारी दै दै नँचाई।।11।। तब हि नारी को भेख बनायौ
सैंदुर मांगि सुहाई।। सारी सुरँग रँगी बहु रँग तैं पुहुप माल पहिनाई।।12।। श्रीराधा नँद
लाल भई नव सखि एकु लईं बुलाई।। उन बलबीर कौ भेख कियों है श्रीस्यामा मुरली
बजाई।।13।। यह मुख लखि सुर नर मुनि मोहे, कोटि अनंग लजाई।। जोरी अद्भुत
लीला-सागर, 'सूरदास' बलि जाई।।14।।

81 बिलावल जिन डारो जू अँखियन में अबीरा।। रतन जटित पिचकाई कर
लिये भर-भर केसर नीरा ।।1।। ललिता प्रीतम को मुख मांड्यो चरच्यो स्याम सरीरा।।
'सूर' प्रभु रस वस कर लीनो इन हलधर को वीरा ।।2।।

82 बिलावल व्रजनारी ब्रजराज गोप गृह मोहन देखन आई।। शोडष साजि सिंगार
शोडष वरष की एक दाई।।1।। दिव्य वसन भूषन तन गावे गारि सुहाई।। श्रवन सुनत
आनंद मनमोहन दई हे दिखाई।।2।। रग मगों वदन विलोकि के नेन रहे अरुझाइ।। सुंद
श्याम स्वरूप रूप अति वरनी न जाइ।।3।। केसरि साल जवाद कनक कूंडो जो भराई।।
रतन खचित पिचकाइन छिरकत कुंवर कन्हाई।।4।। खेल मच्यो व्रज के बिच अरगजा
कीच मचाई।। ताल मृदंग ढोल डफ मुरली शब्द सुहाइ ।।5।। हो हो हो कहि बोलत
आनंद उर न समाइ।। तिन में मुख्य श्री राधा सेनन देत दिखाई।।6।। सिमिटि सकल व्रज
सुंदरी मोहन पकरे धाई। पीतांबर वनमाला मुरली लई छिनाई।।7।। हँसि हँसि हरि पें माँगत
फगुवा देहु कन्हाई।। लीला ललित मनोहर माधोजन मन भाई।।8।।

83 बिलावल नवरंगी लाल बिहारी हो।।तेरे द्वे बाप द्वे मेहेतारी।।ध्रु।।नवरंगी ले नवल बिहारी।। हम देहि कहा करी गारी।।1।। द्वे बाप सबे जग जाने।। सो तो वेद पुरान बखाने।।2।। वसुदेव देवकी जाये।। सो तो नंद महर के आये।।3।। हम बरसाने की नारी।। तुम्हे देहे हँसि हँसि गारी।।4।। तेरी फूफी कुंतीरानी।। सो तो सूरज देखि लुभानी।। 5।। तेरी बहिन सुभद्रा कुवारी।। सो तो अर्जुन संग सिधारी।।6।। द्रुपद सुता सी तेरी भाभी।। सो तो पांच पुरुष मिल लाभी।।7।। हम जाने जू हम जाने।। तुम उखल हाथ तो बंधाने।।8।। हम जानी बात पेहेचानी।। तुम कब के भये दधि दानी।।9।। तेरी माया ने सब जग ढूंढ्यो।। कोउ छाँड्यो न बारो बूढो।।10।। जन कृष्णा गारी गावे।। तब हाथ धारको लावे।।11।।

84. बिलावल घोस नृपति सुत गाइयें जाके बसियें गाम।। लाल बलि झूमिका हो।। बहोरि सुहागिनि गाइये जा को श्रीराधा नाम।। लाल।।1।। चली हें सकल ब्रजसुंदरी नव सत साजि सिंगार।। गावत खेलत तहाँ गई जहां घोषराय दरबार।।2।। जाय नैन भरि देखिये सुंदर नंदकुमार।। नील पीत पट मंडिता उर गज मोतिन हार।।3।। सखा संग अति रस भरे पहरे बिबिध रंग चीर।। गीत बिचित्र कोलाहला अरू ब्रज–वासिन भीर।।4।। डिम–डिम दुंदुभी झालरी रूंज मुरज डफ ताल।।। मदन भेरि राय गिड–गिडी बिच–बिच बेनु रसाल।।5।। अति रस भरी ब्रज सुंदरी देत परस्पर गारि।। अंचल पट मुख दै हंसी मोहन वदन निहारि।। 6।। पहलो झूमक ताही को जाको श्रीमोहन पूत।। देखि परे सिर मोहनी जुवती जनमत धूत।।7।। दूसरो झुमक ताही को जाकी श्रीराधा नारि।। पिय–प्यारी रोके गहैं मन में चोंप बिचारि।।8।। जुवति कदंब सिरोमनी श्रीराधा वर सकुमारि।। उत ब्रज सिसु–गन नायका बलि अरू गिरिवरधारि।। 9।। एकन कर बूका लिये इक गुलाल अबीर।। प्रमदा गन पर बरख ही कूकें दैत अहीर।।10।। रतन खचित पिचकाइयां नव कुंकुम जल सों घोरि ।। पिय सन सुख व्है छिरक हीं तकि–तकि नवल किसोरि।।11।। स्याम सुभगतन सौह ही नव केसरि के बिंदु।। ज्यों जलधर में देखिये मानौ उदित बहु इंदु।।12।। जुवति जूथ

मिलि धाइयो पकरे बलि मोहन जाय।। नव केसरि मुख मांडि कें छाँडे आंखि अंजाय।।13।। यह बिधि होरी खेल हीं जाति बंधु संग लाय।। पूरन–ससि–निस डह डही पून्यो होरी लगाय।।14।। परिवा सकल घोख जन भानु सुता चले न्हान।। अरगजा अंग चढाइयों बिमल बसन परिधान।।15।। दुतिया बंदन बांधियो सिंघासन युवराज।। छत्र चंवर गोविंद गहे श्रीवल्लभ कुल सिरताज।।16।।

85. बिलावल नंद सुबन ब्रजभाव ते फाग संग मिलि खेलो जू।। आज हमें तुमें जान दीजो जुवती–दल पेलो जु।।1।। रसिक–सिरोमनि साँवरे श्रवन सुनत उठि धाए जु।। बलि समेत सब टेरि कें घर–घर ते सखा बुलाये जु।।2।। बाजे बहु–बिधि बाज हीं ताल मृदंग उपंग।। डिम–डिमि दुंदुभी झालरी आवज कर मुख चंगा।।3।। उत ते नव सत साजि कें निकसी सकल ब्रजनारी।। झुंडन आई झुमि कें कल गावत मीठी गारी।।4।। केसरि कुंकुम घोरि कें भाजन भरि भरि लाई।। छूटी सनमुख स्याम के करन कनिक पिचकाई।।5।। उत हिं समाज गोपाल सों भरे महा–रस खेलें। चौवा मृगमद सानि कें जुवती जूथ पर मेलें।।6।। सोभित बालिक बृंद में हरि हलधर की जोरी।। उत हि चतुर चंद्रावली सब गुन निधि राधा गोरी।।7।। सोंह बदे ललिता कहे कौऊ पगन पिछोंडे डारे। इत नायक उत नायका को जीते को हारे।।8।। टिके परस्पर देखि कें खेल मच्यो अति भारी।। इत उत औट न मान ही चौंकि परे नर नारी।।1।। जुवति जूथ–दल पेलि कें छेकि सुबल गहि लीनो जु।। कंठ उपरना मेलि कें खेंचि आप बस कीनो जु।।10।। सुनौ सुबल साची कहुँ तो भलें छूटन पाओ।। छल बल बानिक बानिकें नेंक हलधर कों पकाराओ।।11।। बहोरी सिमिटि ब्रजसुंदरी संकरसन गहि घेरे।। फेंट गजाय के बोलत हो–हो–होरी जु।।16।। मगन भई ब्रज सुंदरी नव रस भीज्यो हीयो जु।। इत अग्रज उत स्याम पें दुहुं दिस फगुवा लीयौ जु।।17।। परसि परम सुख उपज्यो भयो त्रियन मन भायौ।। सादर चारू चकोर ज्यौ मानौ विधु प्रीतम पायौ जु ।।18।। नागरि अति अनुराग सौ मुदित वदन तन हेरें जु।। सर्वस वारें वारनें एक अंचल हरि पर फेरें।।11।। “चत्रभुज” प्रभु संग खेल हीं यह बिधि घोष कुमारी जु।। सब ब्रज छायौ प्रेम सों सुख सागर गिरिधारी जु।।20।।

86. बिलावल आगम सुनि ऋतुराज कौ फूली सब ब्रजनारी जू।। बरन–बरन सिंगारि कियें चंदन चरचित सारी जु।।1।। नव नवलासी फूल की फूल लिये भरि झोरी।। अरगजा चंदन वंदन अरू घसि लीनी रोरी।।2।। मंगल साज सबै सजे तब निकट कुंवरि के आई।। प्रथम हि द्योस बसंत है मन हरखित दैत बधाई।।3।। गांवें गारि सुहावनी अति प्रमुदित नवल किसोरी।। संग ब्रज कुसल समाज सों फिरि आई फागुन होरी।।4।। ताल मृदंग बजावहीं रूंज मुरज सहनाई।। डफ दुंदुभी अरू झालरी जनु बाजत मदन दुहाई।।5।। सुनि सु घोख कोलाहल जिय सबहिन कौ सरसानों।। गिरधर के अनुराग सों भीजि रह्यो बरसानों।।6।। यह बिधि साज समाज लै मिलि चली राय जु की पौरी।। श्रीराधा जु के लेन कों उठि नंदरानी दौरी।।7।। प्रथम ही केसरि नीर ले अंग चीर सबन के बोरे।। केसरि अरगजा घोरि कें सिर भरि–भरि गडूवा ढौरे।।8।। सोंधो सुरंग गुलाल लै बहु साखि जवाद मिलायौ। आनि अचानक लाडिली हंसि महरि वदन लपटायौ।।1।। दिरक्यौ सब मिलि धाइ कें छल बल सों उठि दौरी।। जानि कुंवरि बृषभान की तब महरि लई भरि कौरी।।10।। चुंबत चांपति प्रेम सों पुनि–पुनि कंठ लगावै। जो कछु आनंद जीय कौ मुख कहत कह्यौ नहीं आवै।।11।। मनिमय नाना भांति के भूषण बसन मंगायै। तब हम इन कों लेंइगी कहौ गिरिधर कहाँ दुरायै।।12।। कछु एक ओचक चाहि कें तब महरि बदन मुसिक्यानी।। नागरि सब गुन आगरी बात हिये की जानी।।13।। तब जुवती जन धाई कें चढी जाय चित्रसारी।। सकुचत वदन दुरावहीं हँसि गहे जाय गिरधारी।।14।। घेरि लिये चहुं–ओर तें अब छूटो कहाँ पलायै।। क्यौं जुवतिन के बस परे तुम कहीयत अधिक बलायै।।15।। काहू बातें भेद की कहि कानन में उठि दौरी।। काहू अचानक आनि कें लाल लिये भरि कौरी।। 16।। काहू नाना–भांति सों रंग चित्र कपोलन कियो।। काहू मरूबट मांडि कें मधिबेंदा रोरी दीयो।।17।। काहू नीकि भांति सों अंजन नैन बनायै। सहज ही चपल कुरंग सें ढरि कानन लों आये।।18।। काहू गहि बेनी गुही रचि मोतिन मांग सुढारी।। तन–सुख की सोंधे सनी सुठि सारी सरस संभारी।।19।। चंपकलता चली धाइ कें तब चिबुक दिठोना दीनों।। मोहि रही सब मोहनी ब्रज–रूप मोहनी कीनों।।20।। नाना बरन अबीर लै मनमोहन वदन लगायौ।। पूरनचंद मानो घन में नव इंद्र धनुस सो छायौ।।21।। केसरि ढौरी सीस तें बहि चले खार पनारै।। अरगजा अरू गुलाल सों भरे घरन के द्वारै।।22।। सनमुख मुख हि नीहारते सुख निरखत कौऊ न अघानी।। गारी देत सुहावनी अति रस सौ लपटानी।।23।। आगें व्है मोहन लिये हँसत–हँसत सब आई।। घूंघट सों मुख ढांकि कें, पगन महरि के लगाई।।24।।

यह कन्या काहू राय की सो आप समर्पन कीनी।। रूप बेस गुन स्याम के यह बिधाता दिनी।। 25।। हरखत मन आनंद सौ तुम बांटो आज बधाई।। बिधि ते रूप उजागरी हम कौन बधू लै आंई।।26।। बिंहसि बधू को नाम लै तब महरि गोद बेठारी।। प्रमुदित अति आनंद सों बिधितन गोद पसारी।। 27।। घूंघट औट उतारि कें तब जुवती मुरि मुसिक्यानी।। हँसी परस्पर नागरी तब देखत महरि लजानी।।28।। हो–हो–होरी बोल ही नाचें दे कर तारी।। प्रमुदित कर हिं कुलाहल गावै मीठी गारी।। 29।। यह ब्रज होरी खेल कौ सब सुख ते सुख न्यारो।। यह समाज नित माधुरी के टरत न हिय ते टारयो।।30।।

87 बिलावल कुंज कुटीर जमुना के लीए तीर खेलत होरी रस भरे अहीर। एक और बलबीर धीर हरि एक और युवतिन की भीर।। 1।। कैकी कीर कंला गुन गंभीर पिक डफ मृदंग धुनि कर मंजीर । पग मंजीर कर लै अबीर केसरि के नीर छिरकत चीर।। 2 ।। भई है भीर रति पथ के तीर आनंद समीर परसत सरीर। "नंददास" प्रभु पहिरे चीर तन मिटत पीर बाढयों सुख को सीर।।3।।

88. बिलावल श्रीलक्ष्मन कुल गाइयै, श्रीवल्लभ सुबन सुजान।। लाल मन मोहना हो।। सोम बंस सुख दैन कुँ प्रकटे द्विज कुल भान।। गुन निधि गोपीनाथ जु निर्गुन तेज निधान।।1।। पुरूषोत्तम आनंद में श्रीविठ्ठल ब्रज के भूप।। कौटि मदन विधु वारनें मुख सोभा सुख रूप।।2।। भूतल द्विज बपु धारि कें श्रुति पथ कियौ प्रचंड।। मारग पुष्टि प्रकासि कें माया मत कियौ खंड।। 3।। श्रीगिरिधिर गुन आगरे।। पूरन परमानंद।। राज सिरोमनि लाडिले करूनामय गोविंद।।4।। श्रीबालकृष्ण मुख चंद्रमा पंकज नैन बिसाल।। श्रीवल्लभ गोकुलनाथ जु प्रिय नवनीत दयाल।।5।। श्रीपति श्रीरघुनाथ जु जगजीवन अभिराम।। रूप–रासि जदुनाथ जु कमला पूरन काम।।6।। नव किसोर घनस्याम जु अंग–अंग सुखदाय।। बालक सब ब्रह्म जानि कें बेद विमल जस गाय।।7।। बिंद्रा विपिन सुहावनों ब्रजलीला सुखसार।। "मानिकचंद्र" प्रभु सर्वदा श्रीगोकुल करत बिहार।।8।।

89 बिलावल अरी ते रंग राख्यो खेलत हरि संग होरी।। छबिसों गई लपटाय छबीली पिय मुखचन्द चकोरी।।1।। हँसि के छिरक्यो छेल छबीलो भर-भर कनक कमोरी।। रंग अनंग नगन रंग बाढ्यो हँसत ओट मुख मोरी।।2।। धन तेरो भाग सुहाग लाडिली धन वृषभान किसोरी।। कृष्णजीवन 'लछीराम' के प्रभु प्यारे चिरजीयो यह जोरी।।3।।

90 बिलावल सौंधे की हैं उठति झकौरें, मोहन रंग-भरे।। चोवा, चंदन, अगरु कुंकुमा, सोहैं माट भरे।।1।। रतन जटित पिचकारी करगहि, बालक बृंद खरे।। भरि पिचकारी रस सौं डारी, सो मन प्रान हरे।।2।। सब सखियनि मिलि मारग रोक्यौ, अरु मोहन पकरे।। अंजन आँजि दियौ अँखियन मैं, हा हा करि उबरे।।3।। फगुवा बहुत मँगाई साँवरे, कर लै अरज करे।। धनि धनि सूर, भाग ता के, प्रभु जा कैं सँग बिहरे।।4।।

91. बिलावल ब्रज नारी ब्रज राज गोप गृह मोहन देखन आईं।। सोडस साजि सिंगार सोडस बरस की एक दाई।। 1।। दिव्य बसन भूषन तन गावै गारि सुहाई।। श्रवन सुनत आनंद मन मोहन दई हें दिखाइ।।2।। रग–मगो वदन बिलोकि के नैन रहे अरूझाइ।। सुंदर स्वरूप रूप अति बरनी न जाई।।3।। केसरि साख जवाद कनक कुंडो जो भराई।। रतन खचिन पिचकाइन छिरकत कुँवर कन्हाई ।।4।। खेल मच्यौ ब्रज में अरगजा कीच मचाई ।। ताल मृंदंग ढोल डफ मुरली सब्द सुहाई।।5।। हो हो–हो कहि बोलत आनंद उर न समाई।। तिन में मुख्य श्रीराधा सैनन दैत सिखाई।।6।। सिमिटि सकल ब्रज सुंदरि मोहन पकरे धाई।। पीतांबर बन–माला मुरली लई है छिनाई।।7।। हँसि–हँसि हरि पें माँगत फगुवा देहु कन्हाई।। लीला ललित मनोहर "माधो" जन मन भाई।।8।।

92. बिलावल फाग खेलन ब्रज–सुंदरी नंदराय घर आई।। जसुमति अति आदर देत रोहिनी लेत बुलाई।।1।। गावत गीत सुहावने हँसि–हँसि दै तन गारी।। दुरि ये न होरी खेलिये नंद कुँवर गिरधारी।।2।। सुनि मृदु बचन त्रियन के निकसे हें मोहन लाला।। मन हुं कनिक कमल ढिंग आवत मधुप रसाला।।3।। ताल मृदंग उपंग चंग बीना डफ राजे।। दुंदुभी डिमि–डिमि झालरी बिच–बिच मुरली बाजे।।4।। कनिक कलस केसरि भरे संग लिये सत गोरी।। चोवा मृगमद गोर चंदन वंदन रोरी।। अरगजा भरि–भरि पिचकाई फेंटन सुरंग गुलाला। छिरकत भरत परस्पर हो–हो बोलत ग्वाला।।6।। मोहन गोपिन छिरकत केसू केसरि नीरा।। इत त्तें तकि–तकि दृगन भरत मुठी

अबीरा।।7।। घिरि आई ब्रजनारी नंदलाल गहि लीने।। एक अधर रस पीव ही एक आलिंगन दीने।।8।। प्यारी काजर देत है ललिता गहै कर दौऊ।। चंद्रावलि मुख मांडत हँसत सखी सब कौऊ।।9।। हरद कपोल लगावत उड़वत पीत पिछोरी।। हँसत दे–दे कर तारी बोलत हो–हो–होरी।।10।। यह बिधि पिय संग खेल हीं आनंद उर न समाई।। देखत देव थकिन भये पोहोपन वृष्टि कराई।।11। न्हान चले जमुना सब सोभा अति बनि आई।। राधा गिरिधर देखि कें "सूरदास" बलिजाई।।12।।

93 होरी डांडा (महासुदी 15) सोरठ बिलावल होरी खेलियै हो सुंदर लाल, चंचल नैन बिसाल।। ब्रज जन के प्रतिपाल, लीला नर गोपाल।। गहि ठोड़ी जसुमति कहै, तुम सँग लेहु सकल ब्रजबाल।।1।। होरी॰ बिबिध सुगंधन उबटनौं, सब अंग बैठि उबटाऊं।। चंदन अंग लगाइ के सुख ताते नीर न्हवाऊँ।।2।। अंग–अंगोंछो प्रीति सों घसि, मृगमद तिलक बनाऊं।। अंजन नैनन आंजि कै, भौंह मसि बिंदुका लगाऊँ, अलकावलि अति मोहिनी मोतिन लर सरस गुँथाऊँ।। मधि लटकन लटकाइ कैं, हौं देखत अति सुख पाऊँ।।4।। पगिया पेच सँभारी कै, खिरकिन दार सीस बराऊँ।। मोर चंद्रिका तनक सौं, हौं दिसि दाहिनी धराऊँ।। झीनी झंगुलिया अति बनी, सो तौ स्याम अंग पहिराऊँ।। अति सुगंध पुहुपन बस्यौ, तापर फुलेल चुपराऊँ।।6।। सूथन गाढे अंग की हो, लाल चरन बिरचाऊँ।। फेंटा कटि तट बांधिकैं, और सुरंग गुलाल भराऊँ।।7।। आभूसन बहु भाँति के, अंग तुमहि पहिराऊँ।। फूलन की माला गरें धरि, देखत सुख न अघाऊँ।।8।। घर–घर ते सब गोप गन, लरिकन पठै बुलाऊँ।। केसर के मटुका भरों, पिचकारी हाथ दिवाऊँ।।9।। सिंहद्वार ठाड़े रहौं, तुमें संग दै हों बलदाऊँ।। आगे व्है मेरे लाड़िले, ब्रज ललना रंग छिरकाऊँ।।10।। बड़रे गोपन बोलि कै, रखवारे संग रखाऊँ।। मन मानें त्यों खेलियै सब ब्रज–रस सिंधु समाऊँ।।11।। बिबिध भांति ब्रजराज सों कहि, बाजे बहु बजवाऊँ।। फगुआ दैवे कों अबहि, नव भूषन बसन मँगाऊँ।।12।। सब ब्रज–जुबतिन कों अब हि, घर–घर तें बेगि बुलाऊँ।। मेरे लालन के चाउ सों, फगुवा के गीत गवाऊँ।।13।। रंगमँगे बागे देखिकै, अपने दोऊ दृगन सिराऊँ।। मुक्ता फल थारी भरों, हौं लै आरती उतराऊँ।।14।। आंकों भरि–भरि गोद लै, घर भीतर हौं चली जाऊँ। ब्रज–जुबतिन के जुथ मे, हौं फूली अंग न समाऊँ।।15।। माय मनोरथ यों करै, जाकौ श्रीजसुमति है नाँऊँ। दिजै यह फल "रसिक" कों, श्रीबल्लभ गुन गाऊँ।।16।।

94. बिलावल नंद गाम कौ पांडे ब्रज बरसाने आयौ।। अति उदार बृषभान जानि सनमान करायौ।।1।। पांडे जू के पायन कों हँसि–हँसि सीस नवायौ।। पाय धुवाय न्हवाय प्रथम भोजन करवायौ।।2।। धाय आई ब्रज–नारी जिन यह सूधो पायौ।। भानु–भवन भई भीर फाग कौ खेल मचायौ।।3।। सीसी सरस फूलेल अंग–अंगन झलकायौ।। हनूमान की प्रतिमा मानौ तेल चढायौ।।4।। काजर सों मुख मांडि बदन बिंदा जु बनायौ।। कारे कलस श्रवत मानों चपरा–चिपकायौ।।5।। गज–गामिनि गोंछन सों तुक मैया लपटायौ।। देह धरें मानौ फागुन खेलन ब्रज में आयौ।। 6।। कहुं चंदन कहुं बंदन कहुं चोवा लपटायौ।। ऋतु बसंत जानों केसू को द्रुम नव फूलन छायौ।।7।। काहू गूलरी माला काहू झंगला पहरायौ।। मानो गज घंटान बीच गज गाह बनायौ।।8।। रंग रह्यौ चहोंटियन अंग रातों व्है आयौ।। गुंजन कौ गहनो मानौ प्रोहित पहरायौ।।1।। माथे तें मोहनी नें छाछ कौ माट ढरायौ।। मानो काँचे दूध सौ गिरि गौवर्धन न्हायौ।।10।। चोर भोर भई खोर मानौ गंगा–जल ढायौ।। महादेव की जटा चूरि चरनोदिक आयौ।।11।। लगत दंत सों दंत गिडि–गिडी अंग लगायौ।। मानो हौ सुघर संगीत ताल कठतार बजायौ।।12।। श्रीराधा राधा कहि अपनों बोल सुनायौ।। अरी भान की कुंवरि सरनि हौ तेरी आयौ।।13।। सुनि कें प्रेम बचन गरो राधा भरि आयौ।। बाबा जू कौ दगला ले प्रोहित पहरायो।।14।। कीरति जु पांय लागि तातो पय प्यायौ।। तो लो खेलत होरी ब्रज में दूल्हे आयौ।। 15।। साचे स्वांगन सजि कें सबे समूह सुहायौ।। तपा व्यास को पूत धूत सुकदेव बनायौ।।16।। सनकादिक चारयों निस ज्यों संयास सुहायौ।। घूमत आयो इंद्र स्वांग उन्मत्त नचायौ।।17।। ब्रज की बीथनि बीच–कीच में लौट पुटायौ।। चारि वदन को स्वांग चतुर चतुरानन लायौ।।18।। पंचानन पांचों मुख सों संगीत बजायौ।। हरि को व्है जु बावरों नारद नाचत आयौ।।19।। देखि नंद के लाल जंत्र धरि गाल बजायौ।। महादेव पट तार दैत यह पट प्रभु भायौ।।20।। हो हो–हो होरी हरि हाँसीन हँसायो।। माया निपुन भई सो नारद हल हुलरायौ।।21।। काम कामनी भयौ सबन कौ चित्त चुरायौ।। ललिता जोरी गांठि लाल को व्याह रचयौ।।22।। गठ जोरो बृषभान कुंवरि सों जाय जुरायौ।। नवल अंब के मोर कौ मोरी मोर बनायो।।23।। पीत–पिछोरी तानि छबीलों मंडप छायौ।। फागुन की गारिन कौ सखा चार पढ़ायौ।।24।। होरी की अग्यारी करि दूल्हे परनायौ।। होरी को पकवान सो भरि–भरि झोरिन खायौ।।25।। फूलि फाग की फाग फल्यो जिन यह जस गायौ।। "जन हरीया" घनस्याम बास बरसानें पायौ।।26।।

95. बिलावल गोपी हौ नंदराय घर माँगन फगुवा आई।। प्रमुदित कर हिं कुलाहल गावत गारि सुहाई।।1।। अबला एक अगमनी आगें दई है पठाई।। जसुमति अति आदर सौ भीतर भवन बुलाई।।2।। तिन में मुख्य राधिका लागत परम सुहाई।। खेलों हँसो निसंक संक मानों जिन काई।।3।। बहु मोली–मनिमाला सबन देहुं पहराई।। मनि माला लै कहा करें मोहन दै हु दिखाई।।4।। बिनु देखें सुंदर मुख नाहिन परत रहाई।। मात पिता पति सुत गृह लागत री बिस माई।। 5।। सुनि कें प्रेम बचन दामोदर दई दिखाई।। घर मे तें घनस्याम भुजा भरि भामिनि लाई।।6।। नव सिख सुंदर सींवा रूप लावन्य अधिकाई।। रही ब्रज–बधू निहारि रंक मानों निधिपाई।।7।। अरगजा चंदन वदन चहुं दिस तें लै धाई।। भरति भांव ते लाल करन कनिक पिचकाई।।8।। दरस–परस पिय अतिसय सुंदरि सब लपटाई।। कुच भुज बीच किच मची अति श्रम की झपटाई।।9।। मंडित कर हिं कपोल एक लै काजर आई।। आलिंगन चुंबन रस नहीं सुरझत सुरझाई।।10।। अंचल सों पट–जोरें रीझि सकुच सिरनाई।। दंपत्ति सौभग संपति कौऊ पीवत न अघाई।।11।। यह लीला अति ललित सौ तो नंदरानी भाई।। हरषित उदित मुदित सबहिन की करत बडाई।।12।। पट दुकूल आभूसन चोली दिव्य मँगाई।। जसुमति अति प्रफुलित मन सुंदरि सब पहराई।।13।। यह मेरे आंगन गृह आवो री नित माई।। नैन श्रवन सुख भयौ लाल जु की कीरति गाई।। 14।। निकसी देत असीस जियो तेरो मोहनराई।। यह ब्रज "माधोदास" रहौ नित नंद दुहाई।।15।।

96. बिलावल मोहन वृषभान के आयें जु।। तहाँ अति रस न्योति बुलायें जुं।।1।। बृषभानु पुरा की गोरी श्रीराधा कृष्ण पियारी।।2।। चढ़ि दूल्हे ब्याहन आये ।। सिंहासन दे बैठाये।।3।। नाना बिध भई है रसोई।। तहाँ जेवत अति सुख होई।।4।। तहाँ मिलि जुवती बडभागी ।। गावे कृष्ण चरित्र अनुरागी।।5।। तहाँ बोली एक ब्रजनारी।। आवौ देहि कृष्ण को गारी।।6।। इने गारी कहा कही दीजे ।। गुन औगुन रस लहीजै।।7।। द्वै–बाप सबे कौऊ जाने।। जिन बेद पुरान बखाने।। 8।। बसुदेव कें सुत जो कहाये ।। तुम नंद गोप के आयै।।9।। तेरी मैया आन–आन जाती ।। वे हिल–मिल बैठे पांती ।।10।। तेरी फूफी पंच भरतारी ।। जाको जस पावन कारी।।11।। पति पांडु सबै जग जाने।। सुत आन–आन कैं आनै।।12।। तेरी द्रुपदी सुतासी भाभी ।। वह पंच पुरूष मिल लाभी।।13।। जाकी जग बदत बडाई।। सो ता भक्त सिरोमनि गाई।।14।। तेरी बहिन सुभद्रा कुमारी ।। सौ तौ अरजुन संग सिधारी ।।15।। श्रीकृष्ण

तेरी महतारी।। वह तो पहिरे तनसुख सारी।।16।। रानी रातो लेहेंगा सोहें ।। तेरी चितवनि में जग मौहें।।17।। तुम कहियत तौ ब्रह्मचारी ।। जाके सोरे–सहस्र ब्रजनारी।।18।। तुम कहियत हौ दधि –दानी ।। जिन कुबजा सौ रति मानी ।।19।। कृष्ण जु तेरौ बल बीरा ।। जिन करष्यो कालिंदी तीरा ।।20।। तुम बन–बन धेनु चराई। भयै घोष सकल सुख दाई।।21।। बृंदाबन बेनु बजायौ।। ब्रज–सुंदरी रास खिलायौ।।22।। सूने भवन पराये आयै ।। चोरी करि माँखन खायै ।।23।। गारी गावै हरि जु की सारी ।। वे हँसि–हँसि दे हे तारी ।।24।। गारी गावै हरि जु की सासू ।। वे ढरति प्रेम के आसू ।।25।। गावो–गावो सबै मिल गारी ।। तुम सुन हु लाल बिहारी ।।26।। वे हँसि–हँसि गावे गारी।। पट ओट हँसी मुख मोरी।।27।। छाँडे दुर्योधन सें राजा ।। तेरे कुल हु न आवै लाजा।।28।। ललिता यह मंगल गायौ।। सुनि "सूरस्याम" सचु पायौ।।30।।

97. बिलावल हो–हो बोलत डोलत मोहन खेलत होरी।। सुन धुनि सुनि ब्रज–सुंदरि गृह–गृह तें सब दौरी।।1।। नागरि गुन आगर रस सागर बेस किसोरी।। तिन में सरस सुहागिनि राजत राधा गोरी।।2।। उत बलि मोहन गोहन गोप–कुंवर लख कोरी।। सब ही तन–तन रूप बेस भूसन सतनो री।।3।। ताल मृदंग उपंग चंग सब ही डफ होरी।। डिम–डिम दुंदुभी मदन भेरि नाहिन धुनि थोरी।।4।। चंदन वंदन बूका भरि–भरि लीनै झोरी।। भरत भरावत गावत मुख लपटावत रोरी।।5।। मृगमद मलय कपूर कुँडी सत केसर घोरी।। अरगजा सोंधे सींचि सुगंध करी ब्रज खोरी।।6।। लाज गई सब भाजि सो गावे गारिन भोरी।। इत राधा ललितादिक उत बलि मोहन जोरी।।7।। भामा चंद्रभगा बलि जु पकरे भरि कोरी।। पकरि पेंज सों आय करी झक–झोरा झक–झोरी।।8।। कुच कपोल कर परसत रज आरज की चोरी।। गहे गिरिधर श्रीराधा जु भुज–बल बाँह मरोरी।।9।। छीनी मुरलि माला अरू कटि पीत पिछोरी।। गोपिन गोप हराय गहे बलि मोहन जोरी।।10।। बंस लिये गोपी हाथ भरे रंग भाजन फोरी।। मार परी मुरी आय टिके ब्रजराज की पौरी।।11।। बलि कौ बल जो बिगोबे कौऊ बरज्यो न रह्यौ री।। स्वांग सबै जु बनावें न पावें जान गहों री।।12।। नैन आँजि मुख मांडि स्याम सिर गूँथी मोरी।। हो–हो–हो–हो व्है रही उडवत पीत पिछोरी।।13।। मोहन कों पहरावत अपने भूसन छोरी।। बागो आप बनाय पाग बांधी तजि डोरी।।14।। भूलि रह्यो सब गोकुल लोचन लगी है ठगोरी।। पलटे तन, मन, सुख अंग सब दीसत नोरी।।15।। रह्यो रस खेलत फाग जुगल वर कैलि कर्यो री।। संतत "माधो" को मन मदनगुपाल हर्यो री।।16।।

98. बिलावल बरसाने की गोपी मांगन फगुवा आई।। कियो है जुहार नंद जु कों भीतर भवन बुलाई।।1।। एक नाचत एक गावत एक बजावत तारी।। काहे मोहन राय दुरि रहे मैया दिवावत गारी।।2।। आदर दैत ब्रजरानी अब निज भागि हमारे।। प्रीतम सजन कुल बधू पाये दरस तिहारे।।3।। सुन कुंवरि मेरी राधे अब ही जिन मुख मांडो।। जेंवत स्याम सखन संग जिन पिचकाई छाँडो।।4।। केसरि बहोत अरगजा कित मोहन पर डारो।। सीत लगे कोमल तन तुम ही चित्त बिचारों।।5।। अंचल ऊपर दै रही दौऊ मैया त्रन तोरी।। बरजत भर कुंकुमा निर्भय नवल किसोरी।।6।। कहत रोहिनी जसोदा ओली ओडति आगें।। जाय भरो ब्रजराजे मोहन दीजे मांगें।।7।। मोहन मांगे पैयें तो दिन दस हम हिं दै हो।। गोप कुंवर के पलटें जो चाहो सो लै हो।।8।। सुबल सुबाहु श्रीदामा सुनत अचानक आये।। कंचन माट भरे दधि लें गोपिन सिर नाये।।9।। ग्वाला गुपाल सखा सब हँसत करत किलकारी।। दूध लीयो भीतर ते छिर कीं सब ब्रज–नारी।।10।। जो सुख सोभा बाढी कहत कहा कहि आवै।। ललिता कुंवरि कुंवर कौ अंचल गहि–गहि लावे।।11।। भये निरंतर अंतर तजि वल्लभ ब्रजबाला।। गिरि–गिरि परत गलिन में हार तोरि मनि माला।।12।। प्रभु मुंकुद ब्रजवासी अटक कौन की माने।। कहत भैया "माधोजन" चलो भरो वृषभाने।।13।। इतनो मांग्यो पांऊं देहु बृंदावन बासा।। कुंवर कुंवरि तहाँ विहरत चरन कमल की आसा।।14।।

99. धमार गावत धमार आईं ब्रज की सुकुमार नार।। चित्र अंकित डफ संवार तृण टकोर अंगुरी ढार बजवत रिझवार ग्वार।।1।। सुनि निकसे सुघरराय अर्भक लीने बुलाय शंख शृंग चंग उपंग महुवर बंसी सहनार।। घुघरू, घंटा, घडियाल, कंस, ताल, कठ–ताल, दुंदुभी, मृदंग राग–रंग होत नंद–द्वार।।2।। चौवा मृगमद गुलाल मुख मंडित किये गोपाल केसर पुंज कंचन कर सीसवार।। पिचकाई करन लाई धारा छूटत सुहाई सहचरी समीप आय, छिरक रही हार–हार।। 3।। अति बिचित्र बाल मित्र बिरहत मिल जुवति जुथ गावत है सुर संयुत, होरी के गीत–गार।। "मुरारी दास" प्रभु गोपाल, फगुवा दीनों संभार, दें असीस उलट चली, रूप माधुरी निहार।।4।।

100. धमार (धमार के प्रारम्भ की अलापचारी ऐसे गाई जाय है।) श्रीव्रजराज कुंवर वर गाइये, आनन्द की निधिवर गाइये। भक्तन को मनभामती गाइये। श्रीलाडिले ललनवर गाइये। श्रीबालकृष्णलाल चरन चित लाइये। श्रीनवनीतपियाजी को रिझाइये। श्रीमथुरेशजी को धाइये। श्रीगोकुलनाथ प्रभु को रिझाइये। श्रीविट्ठलनाथ चरन सिर नाइये। श्रीद्वारकाधीश गुन गाइये। श्रीमुकुंदरायजी ध्यान लगाइये। श्रीमदनमोहनलाल चरन चित लाइये। श्रीवृंदावन निधिवर गाइये।।

101 धमार प्रोहित बृषभानु कौ हो आयौ नंदराई दरबार ।।ध्रु०।। सिंघ पौरि खेलैं ब्रज-बाला छिरकति कुंमकुम नीर।। ब्रज की बीथिनि खेल मच्यौ हो भई परसपर भीर।।1।। घेरि लयौ ब्राह्मन चहुँदिस तैं लीने बसन उतारि।। नैन आँजि कैं दयौ दिठौंना बैंनी गुही सँबारि ।।2।। तन सुख चीर, लाह कौ लहिंगा, अँगिया बनी कटाब।। कंठ पोति, कर पौहौंची सोहै, बाजूबंद जड़ाब।।3।। तिया-भेष अद्‌भुत जु बन्यौ है कहति सबैं ब्रजनारि।। दै पट तार नचावैं पांडे, गावति हैं मिलि गारि।।4।। उत तैं आवति हैं नंद-नंदन, गोप सखा संग जोरि।। प्रोहित की गति देखि साँवरो हँसति, मुदित मुख-मोरि।।5।। तब मोहन जुवतिन मधि आए पांडे दियौ छुड़ाई।। फगुवा बहुत मँगाई सबन कौं देति है हरखि बुलाई।।6।। देति असीस चलीं ब्रज-बनिता, चिर जियौ ब्रजराई।। जाके राज सदाँ इहि बिधि सौं, खेलति है हम आई।।7।। तिहिं औसर पांडे कौं दींने, नौतन बसन मँगाई।। चल्यौं बहुरि बृषभान-पुरा कौं फूल्यो अंग न माई।।8।। ब्रह्मादिक, सनकादिक, नारद, रहे बिमानन छाई।।यह छबि निरखि बारि तन, मन, धन, 'विष्णुदास' बलि जाई।।9।।

102 आसावरी बरसानैं तैं कुंवरि राधिका होरी खेलनि आँई हो।। सँग सखी बृंद लीए बहु नागरी उड़गन चंद सुहाई हो।।1।। गावति गारी बनी ब्रजनारी नंद भुवन में आई हो।। पकरि लये स्याम सुंदर, धन दामिनि देति दिखाई हो।।2।। तब सखी भेख बनाई मोहन कौं सारी सुरंग सुहाई हो।।अति बहु मोली अरगजा चोली केसरि रँग रँगाई हो।।3।। नख सिख भेख बनाई स्याम कौं उपमा कहत न जाई हो।। जुबति बृंद में जुबति भेख धरि बैठेंकुंवर कन्हाई हो।।4।। तब नंद रानी अति सरसानी मेवा बहुत मँगाई हो।। चिरजीयो नट नागर जुगजुग 'सरस रंग' गुन गाई हो।।5।।

103. आसावरी धनि–धनि नंद जसोमति हो धन्य श्रीगोकुलगाम।। धन्य कुंवर दौऊ लाडिले बलि मोहन जाको नाम।।1।। छबीले हो ललना।। श्रीवल्लभ राजकुमार छबीले।। श्रीगिरिवरधारी लाल छबीले।। तुम या गोकुल के चंद छबीले।। ध्रु०।। सखा नाम लै बोलियो सुबल तोक श्रीदाम।। श्रवन सुनत सब धाइयौ बोलत सुंदर स्याम।।2।। भेस बिचित्र बनाइयो भूसन बसन सिंगार।। मंदिर तै सब सजि चले बालिक बलि बनवारि।।3।। गिरिवरधर अति रस भरे मुरली मधुर बजाय।। श्रवनसुनत सब ब्रज बधू जहाँ–तहाँ ते चलिं धाय।।4।। रूंज मुरज डफ झालरी बाजे बहु बिधि साज।। बिच–बिच भेरि जु बाज ही रह्यो घोख सब गाजि।।5।। पिचकाई कर कनिक की अरगजा कुंकुम घोरि।। प्रान–पिया को छिरक हीं तकि–तकि नवल किसोरि।।6।। एक ओर जुवती भई एक ओर बलबीर।। कमलन मार मचाईयो रूपे सुभट रनधीर।।7।। उलटि आई ठाडी भई अपने–अपने टोल।। झूमक चेतबगाब ही बिचबिच मीठे बोल।।8।। हँसत–हँसत सब आइयो लीनों सुबल बुलाय।। हा–हा काहू भांति सों नेक मोहन कों पकराय।।9।। बोहारि सिमिटि सब धाई यो मोहन लीने घेरि।। नैनन अंजन आंजि के हँसत बदन तन हेरि।।10।। यह बिधि होरी खेल ही सकल घोष संग लाय।। गोवर्द्धनधर रूप पे "गोविंद" बलि–बलि जाय।।11।।

104. आसावरी या गोकुल कै चौहटे रंग राची ग्वालि।। मोहन खेलें फाग नैन सलोने री रंग–राची ग्वालि।। नर–नारी आनंद भयो।। सामल के अनुराग नैन।।1।। दुंदुभी बाजे गह–गहे।। नगर कुलाहल होय।। उमड्यो मानस घोख को।। भवन रयो नहीं कोय।।2।। डफ बांसुरी सुहावनी।। ताल मृदंग–उपंग।। झांझ झालरी किन्नरी।। आबज कर मुखचंग।।3।। उत हि समाज गोपाल के।। बलियुत नंदकुमार।। इतगोपी नव जोवना।। अंबुज लोचन चारू।।4।। गारी देत सुहावनी प्रमुदित गोप कदंब।। जुवति जूथ एकत्र भये।। गावत मदन विटंब।।5।। रतन जटित पिचकाईयां।। कर लीये गोकुलनाथ।। तकि छिरकें बनिता बृंद कौ।। जे राधा के साथ।।6।। केसू कुसुम निचोय कें।। भरत परस्पर आनि।। मृगमद चोवा कुंकुमा।। चारू चतुर सब सानि।।7।। सुरंग गुलाल उडावहीं।। बूका बंदन धूलि।। चढि विमान सुर देख हीं।। देह दिसा गई भूलि।।8।। खेल मच्यो अति गहगर्यो। । चितवत ब्रज बधू धाय।। राधा रसिक गुपाल की।। "आसकरन" बलि जाय।।9।।

105. आसावरी बरसाने की नबल नारि मिलि होरी खेलनि – आंई हो।। बरबट धाय जाय जमुना तट घेरे कुँवर कन्हाई।।1।। अति झीनी केसरि रंग भीनी सारी सुरंग सुहाई।। कंचन बरन कंचुकी उपर झलकत जोबन झांई।।2।। केसरि कस्तुरी मलयागर भाजन भरि–भरि लाई।। अबीर गुलाल फेंट भरि भामिनि करन कनिक पिचकाई।।3।। उत तें गोप सखा सब उमंगे खेल मच्यो उदमाई।। बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मुरली मधुर बजाई।।4।। खेलत–खेलत रसिक सिरोमनि राधा जु निकट बुलाई।।"ऋषिकेस" प्रभु रीझि स्यामघन बन–माला पहराई।।5।।

106. सारंग अहो पिय लाल लड़ेती कौ झूमका, सरस सुर गावति मिलि ब्रजबाल। अहो कल कोकिल कंठ रसाल।। ध्रु.।। लाल बलि भूमिका अहो० ।। नव जोबना सरस ससि बदनी, जुबति जूथ जूरि आई।। नख सिख साजि सिंगार सुभग तन, कनक करन पिचकाई।। जुर मिलि सबन जूथ नवला सी, दामिनि सी दरसाई। एक सुगंध संभार अरगजा, भरन नवल कों आई।।1।। पहैरें बसन बिबिध रंग–रंगन, अंग महारस भीनी।। अतरौटा अँगिया अमोल तन, सुख सारी अति झीनी।। गज–गति मंद मराल–चाल, झलकत किंकणी कटि छीनी।। चौकी चमकि उरौज जुगल पर, आनि अधिक छबि लीनी।।2।। मृगमद आढ़ ललाट श्रवन, ताटंक तरनि दुति हारी। खंजन मान हरन अँखियाँ, अंजन रंजित अति भारी।। इक बानिक जिन संग सखी, लीन्ही वृषभान–दुलारी।। एक टक दृष्टि चकौर चंद ज्यों, चितिये लाल बिहारी ।।3।। ररकत हार सुढ़ार जलद, मानों पोत–पुंज अति सोहैं।। कंठसरी दुलरी दमकनि, चौका चमकन मन मोहै।। बेसर थरहरात गज मोतिन, रति भूली गति जोहै।। सीस फूल सीमंत जटित नग, बरन सकत कवि को है।। 4।। नव–निकुंज रस पुंज भरे, महलन प्यारी पिय खेलें।। केसर और गुलाल कुसुम जल, घोरि परस्पर मेलै। मधुकर जूथ निकट आवत झुकि, अति सुगंध की रेलें।। प्रीतम स्रमित जानि प्यारी तब, स्याम भुजा भरि झेले।। 5।। बहु बिध भोग बिलास रास रस, 'रसिक' बिहारिन रानी।। नागर नृपति निकुंज बिहारी संग सुरति रति मानी।। जुगल किसोर भोर नहि जानत यह सुख रैन बिहानी।। "प्रीतम" प्रान प्रिया दौऊ बिलसत, ललितादिक गुन गानी।।6।।

107. सारंग सुरंगी होरी खेलै साँवरो श्रीबृंदाबन मांझ। ब्रज की नवल जु नागरी, घिरि आई सब सांझ।। सरस बसंत सुहाबनो, रितु आई सुख देनु। माते मधुपा मधुपनी कोकिल–कुल कल बेनु। फूले कमल कलिंदजा, केसू कुसुम सुरंग। चंपक बकुल गुलाब के सोंधे सिंधु –तरंग।। सुबल सुबाहु श्रीदामा पठयौ सखा पढाइ। बाजे साजे नवरँगी लीने मोल मढाइ।। रूंज, मुरज, डफ, बांसुरी, भेरिनि कौ भरपूरि। फूंकनि फेरी–फेरि के ऊंचे गई स्रुति–दूरि।। ब्रज कौ प्रेम कहा कहों ? केसरि सों घट पूरि। कंचन की पिचकाइयां मारत हैं तकि दूरि।। ऑधी अधिक अबीर की, चोबा की मची कीच। फेली रेल फुलेल की चंदन वंदन बीच।। ब्रज की नचल जु नागरी सुंदर सूर उदार। खेलन आईं सब मिलीं श्रीराधा के दरबार।। फूल–डंडा गहि आपने मारत बाँह उठाई। चंचल अंचल फरहरै पैने नैन चलाइ। श्रीराधा की प्रिय सखी ललिता लोल सुभाइ। छल करि छैले छिरकि के हँसि भाजी डहकाइ। नारी कौ भेष बनाइ के पठयौ सखा सिखाइ। अति ही अधिक कहा बनी ललिता भेंटें जाइ।। गेंदुक कीनी फूल की लीनी श्रीराधा हाथ। आइ अचानक औंचका तकि मारे ब्रजनाथ।। ब्रज की वीथिनि साँकरी उत जमुना कौं घाट। बल करि सहाइ सवै जुरी दीनें गाढे कपाट।। हलधर बीर महाबली तुम सांचे बलरासि। बल कौ बल जु कहा भयौ ? गहि बांधे भुज–पासि।। नैननि अंजन आंजि कै सोंधौ ऊपर ढारि। पांइ परि द्वार पठै दए रस की रासि बिचारि।। हँसि भाजी सब दै दगा आवन दीनें औरि। मदनगोपाल बुलाइ के गहि लीने बरजोरि।। गिरिधास्यो कर वाम सों, खर मारयौ गहि पांइ। तन कौ भार कहा भयौ, ललिता लैत उठाइ।। घर में घेरि सबै चलीं राधा कौ सँग लेत। दोउ जन खेलि, मिलाइके नैननि कों सुख दैत।। तब ललिता हँसि यों कह्यौ श्रीराधा कों सिर नाइ। नीलांबर मुख ढांपि के रही मोहों मुसिकाइ।। इत श्रीदामा अचगरौ, उत ललिता अति लोल। बीच बिसाखा दै मुरली मांगत ओल।। ब्रजवासी वृषभान कौ मदनसखा वाकौ नाँउ। स्याम मते कौ मिलनिया बस कीनों सब गांउ।। पठयो मदन बंसीठ ही ढीठ महामद लोल। छिन ओर छिन ओर सों छाक्यौ छैल दुछोल।। मदना! मदनगोपाल कों हलधर कों लै आइ। श्रीराधा के दिसि जाइ के चाँप्यौ है हँसि पांइ।। श्रीदामा हँसि यों कह्यौ मेवा देहु मँगाइ। नैकु हमारे स्याम कों आनन कौ मधु प्याइ।। भाग सुहाग सबै बढ्यौ खेलत फाग विनोद।। राधा माधौ बैठारे ब्रजरानी की गोद। भूसन देति जसोमति पहुँची, पांच पचेल। टीका, टीकी, टिकावली, हीरा–हार हमेल।। 'श्रीविट्ठल' पद–पद्म की पावन रेनु–प्रताप। 'छीत–स्वामी' गिरिधर मिले मैटे तन के ताप।।

108. सारंग तें मोहन कौ मन हर्यौं तो बिन रह्यो न जाइ, री प्यारी।।ध्रु०।। कुंज महल बैठे पिया नव पल्लव तलप संवारि, री प्यारी।। बीच जुही बिच सेवती अरू बिच–बिच नवल निवारी, री प्यारी।।1।। तुव पंथ बैठि निहारी कें नव कुंज कुटी के द्वार, री प्यारी।। लोंचन भरि–भरि लेत हैं सुंदर ब्रजराज कुंवर, री प्यारी।।2।। अपनें कर नख गूथ हीं हो बिबिध कुसुम की चोली, री प्यारी।। तेरे उर पहिरावहीं चलो बेगि उठि बोली, री प्यारी। कबहुँक नैननि मूँदि कें करत तुव बदन ध्यान, री प्यारी।।3।। तन पुलकित भुज भेंट ही करत सुधा रस पान, री प्यारी।।4।। चंद देखि आंनद ही तुव मुख की उनहार, री प्यारी।। इह छबि वाहि न पूज हीं निरख कलंक बिचार, री प्यारी।।5।। जदपि सकल ब्रज सुंदरी कबहुँ न मन अरूझाइ, री प्यारी। चातक जलधर बूँद ज्यों भुव जल तृषा न जाइ, री प्यारी।।6।। पिय कौ प्रेम सखी मुख सुन्यो तबै ही चली उठि धाइ, री प्यारी। 'गोविंद' प्रभु पिय सों मिली रहसि कंठ लपटाइ, री प्यारी।।7।।

109. सारंग तारी दै गारी गाव हीं।। एक तै एक बनी ब्रज– वनिता, नाना रंग बरसाव हीं।।1।। बाजत ताल मृदंग झांझ डफ, मोहन बेनु बजाव ही ।। चोवा चंदन अगर कुंकुमा, सुरंग गुलाल उडावही।।2।। इत मोहन उत सखी समूह मिल, खेलें हँसे हँसाव ही।। "सूरदास" प्रभु तुम बहुनायक, फगुवा दै घर आव ही ।। 3।।

110. सारंग नयनन में जिन डारौ गुलाल, तिहारे पाँय परत नंदलाल।। हौत हें अंतर पिय दरसन में बिन दरसन बेहाल।।1।। कनक बैलि बृषभान नंदिनी, प्रीतम स्याम तमाल।। ऋतु बसंत बृंदावन फूल्यौ, नाचत गोपी ग्वाल।।2।। ब्रज के लोग सबै जुर आयै, करत कुलाहल ख्याल।।'रामदास' प्रभु गिरिधर नागर पीक रंग सौहें गाल।।3।।

111. सारंग आज हरि खेलत फाग बनी ।। इत गौरी रोरी भर झोरी, उत गोकुल कौ धनी ।। 1।। चोवा को ढोबा कर राख्यो, केसर कीच घनी।। अबीर गुलाल उडावत, गावत सारी जात सनी।।2।। हाथन बनी कनक पिचकाई ग्वालन छूटी घनी ।। "नंददास" प्रभु संग होरी खेलत, मुर–मुर जात अनी।।3।।

112. सारंग स्याम सलौने मन हर्यो, श्रीबृंदाबन के चंद ललना।।ध्रु।। मोहन मेरे द्वार व्है, उझक चले जब भोर।। ललना।। झलकत श्रीमुख देखिये चिते लियो चित चोर ।।1।। मस्तक पंख मयूर के, गरे गुंजा के पुंज।। बेनु बजायो है सखी, नागर–नवल निकुंज।।2।। सुंदर श्याम सुहावनो, अरू सुंदर बनमाल। औढे सुंदर पट–पीयरो, सुंदर– नयन–बिसाल।।3।। हिये परी जो तालाबेली, सुन मुरली की घोर। चल सखी देखन जाईए, नागर–नवल–किसोर।।4।। मन न रहे क्यों राखियै, राखत नहि रहाय।। कोटि यत्न जो कीजिये, जहाँ प्रीतम तहाँ जाय।।5।। कैसे राखो क्यों रहे, कैसे कें बन जाय।। कैसे के गिरिधर मिलै, सौ मिस कौन कराय।।6।। कैसे संग मिल खेलीये, सास ससुर की लाज।। लाज किये दुख पाईये, बिन मिले होय अकाज।।7।। ऊंचे जो गिरिधर बसे, जो नीचे घर होय।। बिना बुलाये बोलिये, नयन निरख सुख होय ।।8।। बन बपुरी हरनी भली, अपने पतिन समेत।। निस–दिन श्रीमुख देख ही, नैननि को फल लैत।।9।। लटकन लटके फूल कें, घूघर–वारे केस। गाय गोप के बृंद में, बलिहारी यह बेस ।।10।। सांझ समें घर आव ही, मुदित सकल ब्रज बाल। मदन मोहन के बारने बल–बल "दास गोपाल"।।11।।

113. सारंग होरी खेलै री नंदलाल।। नंदमहल की पोरी ठाडौ, संग लिए ब्रज बाल ।।1।। बेनु बजावै मधुरें गावै, और उघटावै ताल।। हरे–हरे जुबतिन में धंसिके, दै भुज चुंबत गाल ।।2।। बदन उघारे बिहँसि निहारै, तिलक बनावै भाल।। कबहुक आलिंगन दै भाजै, आइ मिलै ततकाल।।3।। कबहुक ढिंग व्है अचरा ऐंचै, छ्वावै नीरज नाल ।। कबहुंक आपु बलैयाँ लै कै, पहिरावै बनमाल।।4।। कबहुंक नाचै भाव दिखावै, कबहू दिखावै चाल।। कबहु अँबीर अरगजा डारै, कबहु उड़ात गुलाल।। 5।। कबहुं हाथ जोरि मंडल मधि, नाचै सुर प्रतिपाल।। श्रीबल्लभ पद कमल कृपा तें, गावै "रसिक" रसाल।।6।।

114. सारंग छाँडो–छाँडो हमारी बाट, लँगर साँवरे ।। जिन फोरो ढोरौ मेरी–गागर, भरन दे हु यह घाट।। 1।। जिन पकरौ झगरौ मेरौ अचरा, देख बिचारौ ठौर।। तुम होरी के राते माते, बोलत और की ओर।।2।। लै हो घेर निवेर सबन पै, कर हों न काहू की कान।। "श्रीविट्ठल" गिरिधरनलाल तुम, जीतो तो हो मुसकान।।3।।

115. सारंग मोहन खेलत होरी ।। ध्रु.।। बंसी बट जमुना तट कुंजन, तर ठाडे बनवारी।। उत ही सखिन को मंडल जोरै, श्रीवृषभान दुलारी।। होडा–होडी करत परस्पर, दैत है आनंद गारी ।। भरे गुलाल कुंकुमा केसर, करन कनक पिचकारी ।। 1 ।। बाजत बेणु बाँसुरी किन्नरि, महुवर अरू मुख चंगा ।। आवज अमृत कुंडली अधवट तातै सरस उपंगा ।। ताल मृदंग झांझ डफ बाजत सुर कै उठत तरंग। नाचत गावत करत कुतूहल, केसर छिरकत अंग ।। 2 ।। तब हि स्याम सब सखा बुलायै, सबहिन मतौ सुनायौ।। अरे भैया तुम चौकस रहियो, मत कौऊ पाय गहायौ।। जो काहू कौ पकर पाय हैं कर हैं मन कौ भायौ।। तातै सावधान व्है रहियौ, मैं तुम को समुझायौ।। 3।। तब ही किसोरी राधा गोरी, मन में मतौ जु किनौ।। एक सखी तहाँ बोल आपनी, भेख सुबल कौ दीनौ।। ताकौ मिलन चलै उठ मोहन, सखा न कौऊ चीनौ।। नेकसी बात लगाय लाल कौ, पाछें तै गहि लीनौ।।4।। आई सिमिट सकल–ब्रज–सुंदरि, मोहन पकरे जब ही।। माँगत हुती यही बिधिना पै, दाव जौ पायौ अब ही।। तब तुम बसन हरे जु हमारे, हा–हा खाई सब ही। अब हम बसन छीन कै लै है, हा–हा खे हो तुम ही ।। 5।। एक कहै नैक वदन उघारौ, हम हूं देखन पावै।। एक कहै मुख मांड स्याम कौ, माथे बेंदा लावै।। श्रीमुख कमल नयन मेरे मधुकर, तिन की तृषा बुझावै।। एक कहै नैक इन हि नचावौ, हम सब ताल बजावै।।6।। एक सखी मधुरै स्वर गावै, मुख तै गारी भाखै।। एक जु हँसत दूर भई ठाडी, घूंघट पट मुख ढ़ापै।। एक सखी हरि कौ मुख चितवत, तन की दसा न ताकै।। श्रीहरि चरित्र अंत कौ पावै, सबहिन की दिस ताकै।।7।। एक जु सखी आय पाछ तें, मोर पंख गहि लीनौ।। एक अचानक आय लाल कौ, पीतांबर गहि छीनौ।। एकन आंख आँज मुख मांडयौ, ऊपर गुलचा दीनौ।। मानत कौन फाग में प्रभुता, मन मान्यो सौ कीनौ।।8।। एक कहै बोलो बलभैया, तुम ही आन छुडावै।। सखा एक पठवौ तुम घर लो, जसुमति कौ लै आवै।। छल–बल सौ छूटयौ चाहत हौ गहे न छूटन पावै।। श्रीराधा जु की करौ बिनती, सौ तुम भले छुडावै।। 9।। दूर ही ते दैखे बल आवत, एक सखी उठ धाई।। छल–बल कर जैसे तैसे कर, उन हूं को गहि लाई।। आन पकर इक ठोरे कीनै हरि हलधर दौऊ भाई।। उन हूँ की आंख आंज मुख मांडयौ, श्रीराधा जु सैन बताई।। कर जौरे हरि हलधर ठाडै, आज्ञा हम को किजै।। जो कछु इच्छा होय तुमारी, फगुवा हम सौ लीजै।। हँस–हँस बात कहत मन मोहन, बोलत सुख कै बीजे।। करौ बिदा जाय अपने घर पीतांबर मेरो दीजै।।11।। देख–देख ब्रह्मा सिव नारद, मन हीं मन पछिताई।। ए बड भागि सकल ब्रजवनिता, हम मुख कही न जाई।। जा कारन हम ध्यान

करत है, ध्यान हुँ आवत नाहीं।। सौ देखो ब्रज युवतिन आगै, ठाडे जोरे बाहीं।।12।। तब ही स्याम सब सखा बुलायै, फगुवा बहुत मँगायौ।। जो जाकै जैसो मन मान्यो, सौ ताहि पहरायौ।। श्रीजगन्नाथराय चिरजीयौ, सब कौ भलौ मनायौ।। बाढ़ो बंस नंदबाबा कौ, "माधोदास" जस गायौ।।13।।

116. सारंग माधो चांचर खेल ही खेलत री यमुना के तीर।।ध्रु०।। बीच–बीच गोपी बनी बिचबिच री वे बने है मुरारि।। मरकत–मनि कंचनमनी माला री जानों गुही संवारि।।1।। कुंकुम बरनी गोपिका केसो री घनस्याम सरीर।। नील पीत पट मंडिता नाचत री वे प्रेम गंभीर।।2।। कर तल–ताल बजाव हीं गावें री वे गीत रसाल।। मदनमोहन मन हस्यो लीला–सागर–गिरिधरलाल।।3।। किंकिनी नूपुर बाज ही शब्द वरी कोलाहल कैलि।। क्वणित बेनुमधिनायका लटकत लाल भुजा गल मेलि।।4।। एक जु पान खवाव ही एक जु मांगे देहु उगार।। एक जु मुख चुंबन करे एक जु बीने टूटे हार।।5।। चंद भूल कौतुक रह्यौ हरनी री वे मोहे नाद।। थाक्यो रथ कैसें चले ब्रज–जुवतिन री बिरमायौ बाद।।6।। चढ़ि बिमान सब देवता बरखन री वे लागे फूल।। जय–जय–जय–जदु नंदना रास रच्यो रतिनायक भूल।।7।। जो प्रसाद उन कों भयो हरि परि रंभन बाहु पसारि।। "परमानंद" प्रभु श्रीपती पुण्य पुंज कृत गोकुल नारि।।8।।

117. सारंग स्याम रँगीली चूनरी, रंग रंगी हैं रंगीले बिहारी हो। अति सुरंग पचरंग बनी पहिरे श्रीराधा प्यारी हो।।1।। चंपक तन कंचुकी खुली स्याम सुदेस सुढारी हो। माँडनि पिय पट पीत की ता ऊपर मोतिनि हारी हो।।2।। प्यारी के सीस फूल सिर सोहें हो मोतिनि माँग सँवारी हो। बिबिध कुसुम बेंनि गुही चंपक बकुल निवारी हो।।3।। श्रवननि झलमली झूल ही सिर सटकारे केस हो। कठुला खुंभी जराय की मृगमद आड सुदेस हो।।4।। नकबेसरि अति जगमगे दूरि करें रवि जोति हो। कंठसरी मोतिसरी बीच खंगाली पोती हो।।5।। चौकी हेम जराय की रतन खचित निरमोला हो। नोगरी अरू कर पोंहचियां हो भये नबरा अति गोला हो।।6।। कटि किंकिनी रूनझुन करें पग नूपुर झलकारा हो। चलत हंस गति मोहियो सोभा करत अपारा हो।।7।। इहि बिधि बनी ब्रज सुंदरी चली रसिक पिय पासा हो। कुंज महल मोहन मिले पूजी मन अभिलासा हो।।8।। ब्रज बृंदाबन भूपति पिय प्यारी की जोरी हो। 'गोविंद' बलि–बलि जाइ नवल किसोर किसोरी हो।।9।।

118. सारंग अहो पिय! मो सों ही खेलो, हौं खेलों तुम संग।। जो कौऊ ओर खेलि हें तुम सौ, कर हौं तामे भंग ।।1।। हौं ही आँजो तुम्हारे नयना, जाने न ओर गमार।। तुम मेरे मुख मृगमद मांडो हौं भेटों अंकवार।।2।। तुम डफ लै हे, अपने ही कर, हौं गावुँगी गार।। कुमकुम अरगजा छिरको, भर–भर रत्न जटित पिचकार।।3।।तुम सौ कहै लैत फगुवा में, हौ आलिंगन लै हो।"ब्रजपति"आज आन बनिता कौ, लाग न लागन दै हो।।4।।

119. सारंग हौ क्यौं जाऊं री दधि बेचन माई नंदलाल खेलत होरी।। बिन होरी होरी सी खेलत, अब तो होरी कर पाई।।1।। गोरस की मटुकी लै सीस तें, दौर कहत तू मौको लाई। कृष्ण जीवन "लछिराम" के प्रभु सों पकर पाये हें तो कर हे आप मन भाई।। 2।।

120. सारंग राजत है बृषभान किसोरी।। ब्रज के आंगन में खेलत पिय सौ, ऋतु बसंत के आगम होरी ।।1।। ताल मृदंग बेनु चंग बाजै, राजत सरस बांसुरी ध्वनि थोरी।। अगर जवाद कुंकुमा केसर, छिरकत स्याम राधिका गोरी।।2।। जब ही रवक पीत–पट पकरत, यह रसिकन दैत झकझौरी।।"परमानंद"चरन रज वंदित, राधास्याम बनी है जौरी।।3।।

121. सारंग खेलि फाग घर आयो लाडिलो जसुमति करत बधाई। बिबिध भाँत उपहार लिये सब ब्रजजन मंगल गाई। कंचन थार भरि मुक्ताफल लै आरती उतराई। नंदनंदन की या छबि ऊपर 'सूरदास' बलि जाई।।

122 सारंग खेलें पिय राधा गोरी।। नंद नंदन वृषभान नंदिनी बोलत हो हो होरी।।1।। कंचन की पिचकारी लीयें अबीर भरें भर झोरी।। छुटत मुठी गुलाललाल कीभरत नयन की कोरी।।2।। पकरे लालभई झक झोरन प्रगटी प्रीति की चोरी।। आंख आंज कपोलन मीडत लाज तृणकसीतोरी ।।3।। केसर अगरगुलाल अरगजा सोंधें भरी कमोरी।। हँसत लसत ओर भरत परस्पर गांठ दुहुंन की जोरी।।4।। विहस विहस सबलेत बलैया।। अविचल भूतल जोरी।। माधोदास प्रभु लाल लाडिले नवल किशोरी किशोरी।।5।।

123 सारंग सुन चली सकल ब्रजनार प्यारो मदनमोहन खेले होरी।। बगर बगर तें झुंडन निकसी नवसत साजि सिंगार।।ध्रु० ।। तिन में श्रीवृषभान कुवरि को मध्य झूमका सोहे।। कीर कुरंग कपोत कोकिला निज प्रतिनिधि ते मोहे।। छेल छबीली चरण धरन गति मत्त गयंद लजावे।। रंग रंगीली एडी महावर नव नूपुर परसावे।।1 ।। लहेंगा लाल नील कंचुकी तन तन सुख सारी नीकी।। माणिक जटित जुगल ताटंकन तरणि किरण द्युति फीकी।। लसत कपोल लरें मोतिन की सेंदुर माँग भरी ।। कंचन आड ललाट सुभग विच बेंदी जराय जरी ।।2।। मृगमद खोर रुचिर नक वेसर अधर बिंब की शोभा।। यह बानिक बनठन आई मनमोहन को मन लोभा।। सन्मुख स्याम हि हरख निरख मन ठठकि रहीं ब्रजनारी।। अंजन युत खंजन सी चलवत चपल दृष्टि अनियारी।।3 ।। केसर भरी कनक पिचकाई अंचल ओट दुराई ।। औझल व्है तक तान हिये वर लगत स्याम के जाई।। मोहन सखा समूह संग ले कुंकुम कलश भराई।। युवती यूथ में जाय अचानक दिये सीस तें नाई ।।4 ।। ललिता चन्द्र भगा आदि मिल गूढ मंत्र एक कीनों।। बूका बहुत उडाय गगन तन दिन रजनी कर लीनों।। श्रीवृषभान लली को श्रीमुख राकापति ज्यों राजे।। हिमकर चांदनी जलद में ज्यों त्यों घुंघट छबिछाजे।।5 ।। तब ललिता धाय अचानक जाय गहे भुज बल हलधारी।। आई ले निजटोल सबे मुदित भई ब्रजनारी।। नयन आंजि चोवा मृदमद के चित्र कपोलन काढे।। कुंकुम घोर पीठि थापे दे नील वसन ले छांडे।।6 ।। तब निरख सखा किलक्र मन महियां सबहिन मतो उपायो।। एक एक कर पकर सबन कों करत आप मन भायो।। सुन व्रज वधू दसक एकत्र व्हे विफरी खेलन आंई।। फूल खरीदे हाथ ग्वाल के चाचर भली मचाई।।7 ।। मधुमंगल डफ लेने आवे वांके वेन सुनावे।। पाय पिछोंडे भाजे ही सन्मुख चुटकी दे चुटकावे।।एक जु चित्र लिखी सी ठाडी हरे हरे आवन दीनों।। फूलछरी दे मुख में छल सों बल कर गहि लीनों।।8 ।। तब छीन लियो डफ छोर पंचांगी मुख चोवा लपटायो।। कर चुटकी क्यों देत हुतायों कहत चिबुक उचकायो।।एक फुलेल नरि सों चोवा सान चिकुर चिकटायो।। कह्यो सबन भरुवा भयो उनकर संकोच सिरनायो।।9 ।। तहां पिचकारिन की धारें छूटी दुहुं दिस होडा होडी।। सब मन खोलें मुख हो बोलें कुल मर्यादा तोरी।। हरें हरें सब निकट आई मागन फगुवा भई ठाडी।। पकर फेंट प्यारे प्रीतम की चीत चित्रज्यो काढी।।10 ।। तब छीनिलई मुरली कटिते कोऊ लेजु भगी वनमाला।।तारी देहसु यों कहे नेक नाचो मदन गोपाला।। भूषण वसन मंगाय अमोलक

सबहिन कों पहराये।। मेवा गोदभराय सबन की अति आनंद बढाये।।11।। खेल फाग अनुराग सबे मिल टिकेनंद की पौरी।। देव दुंदुभी बाजत राजत बलमोहन की जोरी।। देत असीस चलींब्रजभामिन अवचल रहो ब्रजराई।। चिरजीयो हलधरब्रज नायक गोवरधन होय सहाई।।12।।

124 सारंग हो प्यारी होरी खेले रस भरे ब्रज युवतिन के संग री प्यारी।। एकत आय सबै जुरी सोंधे भीने अंग री प्यारी।।1।। केसर कलस जु लिये धरे कटि गुलाल सुरंग री प्यारी।। पिचकाई नगन जराय जरी खेलत होरी अनंग री प्यारी।।2।। कोऊ कंचन सों धारें छोरत देख सुकंठ री प्यारी।। केसर आड लिलाट करे कोऊ लेत उछंग री प्यारी।।3।। कोऊ बजावत किन्नरी कोऊ उठाय मृदंग री प्यारी।। कोऊ ओंचका हँस परी तोरत तान तरंग री प्यारी।।4।। लायक नारी बनाय के झूठो नाम कराय री प्यारी।। घूंघट अधिक तनाय के नारिन में ले जाय री प्यारी।।5।। कोऊ कुलवधु जनाय के कहत बात मुरझाय री प्यारी।। नेंकसु लाय मनाय के नीके खेल खिलाय री प्यारी।।6।। जब ही चरन गनाय के धरत चोंप चित लाय री प्यारी ।। पोछे तें सिर नाय के हँसत कंठ लपटाय री प्यारी।।7।। कोऊ झूमत नाय के देत अबीर उठाय री प्यारी।। अरगजा अधिक सनाय के वदन पानि परसाय री प्यारी।।8।। मिलि आई सब भामिनी पकरी लिये चहुँ ओर री प्यारी।। उलट लगी मानो दामिनी रह्यो बीच घनघोर री प्यारी।।9।। एक कहे ये कामिनी ले हो अपनी-अपनी कोर री प्यारी।। विसवासी गजगामिनी बाँध छोरे सो छोर री प्यारी।।10।। तब धाई सुख धामिनी राजत रूप मरोर री प्यारी।। ज्यों उजियारी यामिनी एक एकतें जोर री प्यारी।।11।। आई हैं अभिरामिनी झटक लयो कर जोर री प्यारी।। है तुम्हरो ये स्वामिन सोच करो किन और री प्यारी।।12।। हंस ग्रीवा भुज भेल ही कोऊ उठत अति गाज री प्यारी ।। अंस बाँह धरि पेलही कोऊ जात गहि भाज री प्यारी।।13।। केते के रूप नवेल ही सोहत खरी बिराज री प्यारी।। केते के वेस नवेल ही निरख रहत काम लाज री प्यारी।।14।। इहि विधि होरी खेल ही मनमथ सेना साज री प्यारी ।। तेरे तो अलबेली ही कहा रही जिय लाज री प्यारी।।15।। मदनमोहन पिय के लही रससागर की राज री प्यारी।। यह सुन चली अकेली हेली धाय कंठ मधि राजरी प्यारी ।।16।। श्रीविट्ठलपदपद्म की जैये बलि बलिहार री प्यारी।। गोकुलपति सुखसदन की गावत सरस धमार री प्यारी।।17।।

125 सारंग होरी खेलति नंद को लाल। चोवा चंदन औरु अरगजा भरि-भरि थाल।।1।। सीस टिपारो लाल के उर बैजयंती माल।। नाँचति गावति सब मन भाये खेलति फागु गुपाल।।2।। बाजति ताल मृदंग झाँझ ढ़फ गावति गीत रसाल।। ‘गोबिंद’ प्रभुकौ श्रीमुख निरखति बलि-बलि गई ब्रज बाल।।3।।

126 सारंग होरी खेलति मोहन, उड़ति गुलाल अबीर।। बनि बनि चली सकल ब्रज-बनिता पैहैरि विविध पट चीर।।1।। अगर जबाद कुँमकुमा केसर चरचैं स्याम सरीर।। मृदु मुसिकानि परसपर सुंदरि दसन झलक मुख हीर।।2।। प्रेंम-पतंग पिचकाई छूटत, और जमुना कौ नीर।। ‘सूरदास’प्रभु सरबसु वारौं हरि हलधर के बीर ।।3।।

127 सारंग आजु माई खेलति फागु हरी।। सब सखियन सिंगार कियो मिलि सेंदुर माँग भरी।।1।। गुलाल की चोली अबीर की झोरी चहुँ दिस लागी झरी।। ‘कृष्ण जीवन लछीराम’ के प्रभु राधा कों अंक भरी।।2।।

128 सारंग राधा माधौ खेलैं होरी।। इत ब्रजराज लाड़िलो राजत, उत वृषभानु किसोरी।।1।। एकन के कर अगर, कुँमकुमा, एकन केसर घोरी।। छिरकति रतन-जटित-पिचकाई, पिय मुख पौंछत खेलत गोरी।।2।। इक गावै, इक मृदंग बजावैं, एकु रबाब झाँझन की जोरी।। सुख सागर, आगर, वृन्दावन, बरन वनस्पति मोरी।।3।। जित तित तैं ग्वालनि उठि धाँई, मुख माँडत लै रोरी।। ‘कृष्ण जीवन लछीराम’ के प्रभु प्यारे चिरजीयौ भूतल यह जोरी।।2।।

129. धनाश्री हरि संग खेलन फागु चलीँ। चोवा चंदन अगरु अरगजा, छिरकति नगर गली। राती पीरी अँगिया पहिरे, नव तन झूमक सारी। मुख तमोर, नैननि भरि काजर, देहिँ भावती गारी। रितु बसंत आगम रति नायक, जोबन भार भरी। देखन रुप मदनमोहन कौ, नंद दुवार खरी। कहि न जाइ गोकुल की महिमा, घर–घर बीथिनि माही। ‘सूरदास’ सौ क्यों करि बरनै जो सुख तिहुँ पुर नाही।।

130. धनाश्री हरि संग खेलन जांय अरी चलि बेगि छबीली ।।ध्रु०।।निकस्यो मोहन सामरो हो फाग खेलन ब्रज मांझ।। घुमड्यो अबीर गुलाल गगन में मानो फूली सांझ।।1।। बाजत ताल मृदंग मुरज डफ कही न परत कछु बात।। रंग–रंग भीने ग्वाला बाल सब मानो मदन बरात।।2।। जुरि आंई ब्रज–सुंदरी करि–करि अपनो ठाट।। खेलत नहीं कौऊ कान्ह कुंवर सों चाहत तिहारी

बाट।।3।। बिन राजा दल को न काज बलि उठिये छांडीके अैड।। उमग्यो रस निधि ज्यों नवल नंद को रूकत रावरी मेंड।।4।। उठी बिहंसि वृषभान कुंवरि वर कर पिचकारी लैत।।सहि न सकत ज्यौ महा–सुभट कौऊ सुनत समर संकेत।।5।। आई रूप अगाधा राधा छबि बरनी नहीं जाय।। नवलकिसोर अमल चंदे मानो मिली हे चंद्रका आय।।6।। खेल मंच्यो ब्रज बीथनि महियां बरखत प्रेम आनंद।। दमकत भाल गुलाल भरे मानों वंदन मोर को चंद।।7।। दुरि–मुरि भरन बचावन छबि सों बाढ्यों रंग अपार।। मेन मुनी सी बोलत डोलत पग नूपुर झनकार।।8।। सुरंग रंग पिचकारि भरि–भरि छिरकत हरि तन तीय।। कुटिल कटाक्ष प्रेम रंग तकि–तकि मारत पिय के हीय।।9।। सिव सनकादिक नारद सारद बोलत जय जय सेइ।।"नंददास" अपने ठाकुर कौ हरख बलैयां लैइ।।10।।

131. धनाश्री पिय प्यारी खेले फाग बागे मरगजा।। इत चंदन वंदन बूका उत अबीर अगर ओर अरगजा।।1।। जोरे सकल ग्वाल संग आये मोहन मन में धरिगजा।। श्रीस्वामिनि कामिनि ले धाईं आंई गिरिधर करि गजा।।2।। सब जन निठुर भई तिहिं ओसर छिरकत रंग रंगजा।। "रसिक राय" हरि अति छबि बाढ़ी सुर मुनि मोहे गरगजा।।3।।

132. धनाश्री रहसि घर समधिन आई।। ए सब जन के मन भाई।। ध्रु०।। समधिन सों समधोरों कीजै कीरति यह मन आई।। नंद गाम तैं महरि जसोदा समधिन न्योति बुलाई।।1।। समधिन आई सब मन भाई निस समधी संग खेली।। खोलि हुलास आय ढिंग बेठी मोहोरन कीसी थेली।।2।। अति सुरंग सारी समधिन की लहेंगा अति ही सुढार।। फाटि रही सगरी समधिन की चोली जोबन भार।।3।। समधिन कों हाथी को भावै आछो नीको पूरो।। रंग–रंगीलो अरू चटकीलों हाथ भरे कौ चूरो।।4।। समधिन तो दीयो ई चाहे खोलि डब्बा की गांठि।। अपने समधिन के नेगिन कों हीरा पन्ना बाँठि।।5।। समधिन की हे गली सांकरी समधि आवन जौग।। आधो बाहिर आधो भीतर बोहोत बराती लोग।।6।। समधिन कें मेल्यों ही चाहे गल–फूलन कौ हार।। काढन कहे समधिन समधी सों डोला के जु कहार।।7।। यह लीला सुर नर मुनि गाई देखत रहे लुभाय।। चिरजीवों दुलहें अरू दुलहिन "सूरदास" बलि जाये।।8।।

133. धनाश्री माई मेरो मन मोह्यो साँवरे अब घर हौ मो पै रह्यो न जाये।। चपल तिरछी भोंह सों सर्वसु हो मेरो लियो हे चुराय।।1।। माई हों गो–रस ले निकसी श्रीबृंदाबन ही मंझार।। आय अचानक औचका मटुकी हो मेरी दीनी ढार।।2।। गहि अचरा मौ सों यों कह्यों कौन बहू तू का की नारि।। के बिरियां यह मग गई दान बहू तू हमारो मारि।। 3।। कंचुकी पट नीवी गही लई बहोत केतिक मोल।। कनिक खुभी के ब्याज में परसे बहो मेरे पान कपोल।।4।। हँसि बीरी मुख में दई ग्रीवा हो मेरे मेली बांह।। मिस ही मिस मोहि ले चले गहवर हो अंधियारे माँह।।5।। जिय और मिस दान के बतीयन हो मेरे परसे पाय।। करतबसीठी मिलन की सनमुख री मेरै नैन चलाय।।6।। ओर कहां लगि बरनी ये कहत बहो मोहि आवे लाज।। जन "त्रिलोक" प्रभु सों रमी देखि सखी मेरे तन को साज।।7।।

134. धनाश्री खेलो होरी फाग सबे मिलि झूमक गावो।।ध्रु०।। संग सखा खेलन चले वृषभान गोप की पौरी।। श्रवन सुनत सब गोपिका गई हें कुँवरि पे दौरी।।1।। मोहन राधा कारनें गुहि लीनों नोसर हार।। हार हेत दरसन भयौ सब ग्वालन कियो जुहार।।2।। राधा ललिता सों कह्यो नेंक हार हाथ ते लेहु।। चंद्रभगा सों यों कह्यो नेंक इन हीं बेठन देहु।।3।। बहोत भांति बीरा दियो कीनो बहोत सनमान।। राधा मुख निरखत हरि मानो कमल करत मधुपान।।4।। मोहन कर चिपकाई लीयें, बंस लीये ब्रज–नारि।। जीती राधा गोपिका सब ग्वालन मानी हारि।।5।। फगुवा कौ पट ऐंच ते मुरली आई हाथ।। फगुवा दीये ही बनें तुम सुनि गोकुल के नाथ।।6।। मधु मंगल तब टेरियो लीनो सुबल बुलाय।। मुरली तो हम देइंगी प्यारी राधा कौ सिर नाय।।7।। ढोल मुरज डफ बाज ही ओर मुरली की घोर।। किलकत कोतुहल करें मानों आनंद निर्तत मोर।।8।। राधामोहन बिहर ही सुंदर सुघर सरूप।। पोहोप वृष्टि सुरपति करें तुम धनि–धनि ब्रज के भूप।।9।। होरी खेलत रंग रह्यो चले जमुना जल न्हान।। सिंघपोरि ठाडे हरी गोपी वारि दें दान।।10।। नरनारी आनंद भयौ तन मन मोद बढाय।। श्रीगोकुलनाथ प्रताप तें जन "स्यामदास" बलिजाय।।11।।

135 धनाश्री खेलत फाग सखा संग लीने ब्रजवीथनि गिरिधारी हो।। युवती यूथ संग ले आई श्रीवृषभान दुलारी हो।।1।। विविध भांति पहरे बहुभूषन तन तन सुख की सारी।। रूपदेखि अपने मन ही मन काम कामिनिहारी।।2।। केसर रंग कनिक पिचकाई भरि धाईं ब्रजनारी।। मदनगुपाल लाल कों छिरकत गावत मीठी गारी।।3।। एक अबीर गुलाल मुठीले मोहन मुख पर डारी।। एकजु आंखिन आंजत काजर एकबजावत तारी।।4।। नंदनंदनतन चितबत राधा तन की दशा बिसारी।। नेह गांठि छूटत नहीं छोरी ललना रतन उजारी।।5।। प्रेम मगन दौरी त्रियगन ते लाल भरे अंकवारी।। अधरा मृत दीनों पिय को तब रस बडयो अतिभारी।।6।। राधा बदन विलोकि स्याम घन मन में बात बिचारी।। मुठी काम रस सिंधु मगन व्हे हो हो मंत्र पढि डारी।।7।। चहुं ओर ब्रज वनितन घेरे फगुवा मांगत प्यारी।। सुघरराय अपनों तन मन धन दियो सबन सुखकारी।।8।।

136. धनाश्री बरसाने तें सजि चली रंग भीनी ग्वालि। भरि–भरि सेंदुर माँग। होरी रंग रह्यौ। गृह–गृह तें सब निकसीं। रंग।। अपने–अपने टोल। होरी रंग रह्यौ।। मधि है गोरी राधिका। रंग आली वृंदावन माँह। होरी।। फूलनि छबरियां हाथ लै। रंग गहि ललिता जू की बाँह। होरी।। कंचन घट कुंकुम भरे। रंग चोवा अगर अबीर । होरी।। बाँधे फेंटि अबीर की। रंग केसू केसरि नीर। होरी।। गावत गीत तहाँ गई। रंग घोषराइ की पौरि। होरी।। सुनत कुँवरि कोलाहला रंग आये हैं गिरिधर दौरि। होरी।। पिचकाई सोंधै भरी। रंग कर लियें मदन गोपाल। होरी।। तकि–तकि तिनि कों छिरक हीं। रंग जे मृगनैनी बाल ।होरी।। इत खिलार बल मोहना। रंग लरिका गोपकुँवार। होरी।। उत ललिता चंद्रावली। रंग राधा गोपी अपार। होरी।। अंचल ओट दुराबहीं। रंग भरि–भरि कनक कचोल। होरी।। प्यारे कों सीस नवावहीं। रंग हो हो हो करि बोल। होरी।। काजर नैंननि आँजि के। रंग मंडित करे हैं कपोल। होरी।। फिरि–फिरि श्रीमुख देख हीं। रंग फूलति करति कलोल। होरी।। फगुवा कों पट एँच ही। रंग लीन्हे हार उतार। होरी।। प्यारी को पहिरावहीं। रंग हँसत दै–दै कर तारि। होरी।। कमलनि मार मचावहीं। रंग भीजि रहे रस रंग। होरी।। खेलत है नँदलाडिलौ। रंग बृषभानु–लडैती संग। होरी।। सिथिल चीर कटि मेखला। रंग एक कंचुकी बँद टूटि। होरी।। गलित चीर कबरीनि तें। रंग गई है बेंनी छूटि। होरी।। आनँद–सिंधु मगन भए। रंग देह दसा गई भूलि। होरी।। उदए चंद गोविंद ही। रंग जुवती कुमोदिनी फूलि। होरी।। रस गिरिधर सों विलस हीं। रंग बढ्यौ हृदै अनुराग। होरी।। "कृष्णदास" प्रभु अधर की। रंग पीवत सुधा बडभाग। होरी।।

137. धनाश्री नेंक मोहोंडो मांडन दै हो होरी के खिलैया।। जो तुम चतुर खिलार कहावत अंगुरिन को रस लै हो।।1।।उमड़े घुमडे फिरत रावरे सकुचत का हे हो।।"सूरदास"प्रभु होरी खेलो फगुवा हमारो दे हो।।2।।

138 धनाश्री खेलत फाग कुँवर नँदनंदन श्री बृषभान दुलारी हो।।संग लिएसहचारी रंगीली नाचत दै कर तारी हो।।1।।बीन मृदंग मुरज डफ मुरली कल मुख चंग बजावै हो।।गावति राग रागिनी सुन्दर नाना गति उपजावै।।2।।मृगमद केसर सत गुलाल को धोरि परसपर मेलै हो।।त्रिबिध समीर बहति ले आवत अति सौरभ की रेलै हो।।3।। अति आनंदित कुँवरि बिबिध रंग भरी पिय मुख की निहारी हो।। नख सिख लालच भर्यो लालचीलै प्यारी उर धारी हो।।4।। लटकत ललना लाल मिलि दोऊ करत बहु बिधि केलि हो।। मानों तरुन तमाल हि लपटी नवकंचनकी बेली हो।।5।। दूलह मदनगोपाल बिराजति दुलहनि नवल किसोरी हो।। ललित विलास करत बृन्दावन नवल एक सम जोरी हो।।6।।

139. धनाश्री होरी के रंगीले लाल गिरधर रंग मचायौ।। केसर सुरंग गुलाल अरगजा मदन बसंत जमायौ।। 1।। ताल मृदंग झांझ डफ बीना होरी राग जमायो।। सुनि निकसी गृह–गृह तैं सुंदरी भाव भक्ति फल पायौ ।।2।। आवत भावत गारिन गावत रस भरि लाल खिलायौ।। "श्रीविट्ठल" गिरिधर जुवतिन संग होरी त्यौहार मनायौ।।3।।

140 बसंत दुल्हे श्री ब्रजराज दुलारो दुलहिन भानु किसोरी।।सीस सेहरो सोभित नीकों भली बनी यह जोरी।।1।।राजति रंग भरे दोउ रस रस में आई जुरी ब्रजनारी।। गावति मंगल गीत बधाए हँसि–हँसि देति परसपर तारी।।2।। बूका बंदन चोवा चंदन गुलाल अबीर उड़ावे ।। मृगमद केसर लै–लै छिरकति सबहीन के मन भावे।।3।। आरति वार करति न्योछावर ब्रजनारी सुख पायो।। जुगल रूप मन माँही बसो 'रघुनाथ दास' मन भायो।।4।।

141 बसंत आज सांवरो घोष गलिन में खेलति मोहन होरी।। संग सखी लीयें राधिका बनी है अनूपम जोरी।।1।।छंदसों बिच मुरली धुनि थोरी।।अरस परस छिरकति छिरकावति मोहन राधा गोरी।।2।।अबीर गुलाल उडति बुकारंग भरि भरि धरी कमोरी।। केसरि रंग सों भरि पिचकारी मारति हैं मुखरोरी।।3।। छलबल सोंकरि आंख अंजावत लोकलाज सब तोरी।।लूटति सुख की सीवां सब मिल 'परमानंद' करति निहोरी।।4।।

142. बसंत हो–हो होरी खेलन जैये ।। आज भलो दिन हे मेरी प्यारी नित ही सुहाग बढैये।।1।। सोवत जाय जगाई सुंदरी करि उबटनों सीस न्हवैये।। सादा चूरी खुभी नक बेसरि राधा कुंवरि बनैये।।2।। चोवा चंदन ओर अरगजा अबीर गुलाल उडैये।। नव मटुकी भरि केसरि घोरी प्रथम कुंज छिरकैये।।3।। धावत सब इत तें ब्रजनारी कमलन मार मचैये।। ताल मृदंग ढोल डफ महुवरि झांझन झमक मिलैये।।4।। इतराधा उतमोहन प्यारो मुरली शब्द सुनैये।। कुंज औट ललिता "हरीदासी" राग दामोदर गैये।।4।।

143. बिभास अनोखे होरी खेलन लागे।। मिस ही मिस रंग भरत सांवरो कछु सोवत कछु जागे।।1।। लाल गुलाल लियें कर ललना नंदनंदन अनुरागे।। "कृष्णजीवन लछीराम" के प्रभु प्यारे बने हें मरगजे वागे।।2।।

144. (खंडिता) काफी पीतांबर काजर कहाँ लग्यो हो। ललना कौन के पोंछे हें नयन ।। ध्रु.।। कौन कें गृह नेह रस पागै वै गोरी कछु ओर।। दे हु बताय कान राखति हों ऐसे भये चित चौर।। 1।। अधरन अंजन, लिलाट महावर, राजत पीक कपोल। घूम रहे रजनी जागे से, दुरत न काम कलोल ।। 2।। नख निसान राजत छतियन पर, निरखो नयन निहार। झूम रही अलकें अलबेली, पाग के पेच संवार।। 3।। हम डर पै जसुदा जु के त्रासन, नागर नंदकिसोर ।। पाय परे फगुवा प्रभू दै हौ, मुरली दै हुँ अकोर ।। 4।। धन्य–धन्य गोकुल की गोपी, जिन हरि लीने हराय।। "नंददास" प्रभु कियै कनौडे, छाँडे नाच नचाय।। 5।।

145. काफी बरज्यौ नहीं मानै, अरी वह नन्द महर कौ छोहरा। प्रेम लपेटें अटपटे अरू मोहि सुनावै दोहरा।।1।। कैसे के जाऊँ दुहावन गैया, आये अघोरे गोंहरा।। नख–सिख रंग बौरे अरू तौरे मैरे गरे को डोहरा ।।2।। गारी दै–दै भाव जनावै अरू उपजावै मोहरा।। "गोविंद"प्रभु बलबीर बिहारी प्यारी राधा को मीत मनोहरा।।3।।

146 काफी माई बरसाने ते नंदगाम प्रोहित बृषभान को आयो।। नंदभवन को वैभव अद्भुत निरख परम सुख पायो।।1।। पांय धुवाय कें जल अचवायो घिर आईं ब्रजनारी।।पा लागन कहि फूल फूल गावत होरी की गारी।।2।।एकन चोवा आनसान

ब्राह्मन के मुख लपटायो।।एक कपोलन मारत मींडत करत आप मन भायो।।3।।एक घर घसी घोर अरगजा पाछे ते गहि नायो।।एक तो पकर फेंट झकझोरत इकलो कर कें पायो।।4।।एक चोंहोंटिया लेत चोरचित एक जु तारी बजावे।।एक तो पकर पोतिया झटकत हंसि हंसि वाख चढावे।।5।। एक अचानक व्हे पाछेते आंखिन में दियो हे गुलाला।। मींडत दृग यों कहत लुगइन मेरो पार्‍यो चाला।।6।। एक नवासी खाटी छाछि ते माथे ते गहिनाई।। इत यह एक उते वे अनगिन ब्राह्मन की नबस्याई।।7।। गिडगिडात मार्‍यो जाडे को चितवत भ्रोहे तान।। हा हा हों हार्‍यो तुम जीती छांडि देहु जिजमान।।8।।एक कहे याहि पकर टकिया के श्रवनन कों सुख दीजे।।एक कहे हा हा नीके व्हे घरी एक गहि लीजे।।9।। कहत परस्पर ए ब्रजनारी ।। सब मिल यह बिचारी।।इतनी सुनत अथांई ते चली आये कुंज बिहारी।।10।।जो देखे तो पांडे को यहीं घेर रही ब्रजबाला।।मुख पटुका दे निरख निरख मुसिकाने नंद के लाला।।11।। भली मानस हो भलो आदर कियो भलो भोजन करवायो।। सुनों हो कुंवर जू सगरी लुगाईन हों तो नाच नचायो।।12।।एकन गुल गुलाय गुलचायो एकन कोहुंनी दीनी।। जानत हों अपने जीय में जेसी पोहों नाई कीनी।।13।।किच किचाय मेरे लियो चोहोटिया पीठ व्है गई राती।।इन न बरजी इनते हों डरपत धुकर पुकर करे छाती ।।14।। तब ललिता गदगद गदकायो स्याम स्याम कहि टेर्‍यो।। पांडे जू की ललित पीठ पर लाल कमल कर फेर्‍यो ।।15।।एकन मोकों नयन सेन दे एकन अंजन कीनो।।एकन मन हरिलियो चितें आंखिन में बूका दीनों।।16।। कह्यो स्याम अजहू बकसो तिहारे बहुत सुख पेहें।। जो चाहो सोई तुमकों मन भायो फगुवा दे हें।।17।। तुम तो अति उदार हो ढोटा तुम से तुम महीदानी।।जान जाउ जिय मे जग जीवन चीर हरण सुधि आनी।।18।। जो सासुरे की दया कीजे तो हा हा खाय छूडावो।।तो हम छांडें पांडे कों पांडे नाचे तुम गावो।। 19।। काहेन पांडे गुन प्रगटो हरि सेन दई दृग मोरी।। मगन भयो तब नाचन लाग्यो बोलत हो हो होरी।।20।। बांधत रोटी पेट फुलायो यों टेढी पाग बनाई।। अधिकवार बह्म नेंटार नरोत्तम अद्भुत फाग मचाई।।21।।जान बूझ अन बोली व्हे कें दूर देखत नंदरानी।। निरख निरख नयनन कौतूहल मन हीं मन मुसिक्यानी।।22।। इंद्रादिक ब्रह्मदिक शंकर ये सब रहे लुभ्याई।।हम न भये ब्रज ब्राह्मन निरख निरख मन में पछिताई।।23।। भई विमान भीर ब्रज ऊपर पहोपन वृष्टि करावें।।निरख निरख यह सुख नयनन सुर वनिता मंगल गावें।।24।। धन्य ब्राह्मन धन्य धन्य नंदसुत धन्य ये ब्रज की नारी।। धन्य धन्य ब्रज के ब्रजवासी धन्य स्याम बलिहारी।।25।।

147. काफी मिल खेलें फाग वन में श्रीवल्लभ बाला।। संग खरे रस–रंग भरे नव रंग तृभंगी लाला।।1।। बाजत बांसुरी चंग उपंग पखावज आवज ताला।। गावत गारी दै–दै ब्रजनारी मनोहर गीत रसाला।।2।। कंचन बेलि करे जानों कैलि परे बिच स्याम तमाला।। धाइ धरें हँसि अंक भरें छूटे केस टूटी उर माला।।3।। सींचत अंगन रंग भरे बाढ्यो प्रेम प्रवाह रसाला।। मेन सेन खुर रेनु उडी नभ छायो अबीर गुलाला।।4।। देखि थकी भवरी सब री मृगी मोरी चकोरी न जाला।। राधा कृष्ण बिलास सरोज "गदाधर" मंत्र मराला।।5।।

148. काफी सांवरौ अज हुं नहिं आयौ। ब्रज–बनिता सब छोडी साँवरै। मधुबन जाय बसायौ। दासी करी पटरानी सामरे। नाथ कौ नाम लजायौ। कंत कुबजा कौ कहायौ।। 1।। आप ही जाय द्वारका बसायौ। हम कुँ जोग बतायौ। हम कुँ जोग बतायौ। भोग कुबजा कूं। एसौ कपटी कहायौ। आखिर अहीर कौ जायौ।।2।। लिख–लिख पतियां छतियां जरावत। उधौ कुँ ब्रज में पठायौ। हम स्त्री तो हैं बिस्वासी। दासी सौ नेह लगायौ। गरल घोरि जु पिबायौ।। 3।। खर अक्रूर ए कहाँ ते आयौ। घर–घर होरी जगायौ। एक होरी तो जरत है हिया में। सपने में सुख न पायौ। फिर कहां ते फागुन आयौ।4।। बैरी बिधाता अति संतापै। काम कौ जोर बढायौ। "सूरदास" अब कहाँ लौ बिनती करत हैं, मन कौ भायौ, जरे पर लौन लगायौ।।5।।

149. काफी नेह लग्यौ मेरौ स्याम सुंदर सौ।। टेक ।। आयो बसंत सबी बन फूली, खेतन फूली सरसों। मैं पीरी भई, पिया के बिरह, सों निकसत प्रान अधर सों। कहो जाय बंसीधर सों ।।1।। फागुन में सब हौरी खेलत है अपने–अपने बर सों। पिय के बियोग जोगन ब्है निकरी धूर उड़ावत कर सों। चली मथुरा की डगर सों।।2।। ऊधो जाय द्वारका में कहियो इतनी अरज मेरी हरि सों।। बिरह व्यथा से जियरा जरत हें जब तें गये हरि घर सों। दरस देखन को हों तरसों।।3।। "सूरदास" मेरी इतनी अरज हैं, कृपा–सिंधु गिरिधर सों। गहरी नदियां, नाव पुरानी अब कै उबारो सागर सों। अरज मेरी राधा–बर सों।। 4।।

150. काफी तुम चलो सबे मिलि जांय खेलन होरियां।। अपनी–अपनी सुरंग चूनरी मोतिन माँग भरोरियां।।1।। थरहरात अधरन पर मोती अंगिया केसर बोरियां।। चोवा–चंदन अगर कुंकुमा भरि–भरि दैत कमोरियां।।2।। अंग सौ अंग गुलाल बिराजत भली बनी यह जोरियां।। केहरि लंक नितंब बिराजत गज गति चाल चलोरियां।।3।। पिचकाई मोहन पर डारत बिहसी घूंघट खोलियां।। बाजत ताल मृदंग अरू डफ पढ़ि–पढ़ि बोलत बोलियां।।4।। नयन आँज मुख मांडिं स्याम को सब मिलि करत कलोरियां।। "सूरदास" प्रभु सब सुख क्रीडत बिहरत ब्रज की खोरियां।।5।।

151. काफी श्रीगोकुल राज कुंमार लाल रंग भीने हें।। खेलत डोलत फाग सखा संग लीने है।।1।। चित्र बिचित्र सुदेस सबे अनुकूले हें।। राजत रंग बिरंग सरोज से फूले हें।।2।। एकन के कर कंकन जेरी जराय की।। एकन के पिचकाई सु हेम भराय की।।3।। कुंकुम घोर भरें घट हाटिक के घने।। पंकज पुंज पराग सु मृगमद सों सने।।4।। ढोल की ढोल निसान मुरज डफ बाज हीं।। मेन के मैघ मानो रस वृष्टि सों गाज ही।।5।। धुनि सुन कें अकुलाई चली नव नागरी।। एक ते एक महा–गुन रूप की आगरी।।6।। राधा के संग सुहाई अनेक सहेली है।। काम के कानन की मानों कंचन बैली हें।।7।। भेस बनाये की भांति न जात बखानी हें।। जेती तेती उपमा मन में बिलखानी है।।8।। कोयल कूर कहा सुर भेद हि जान ही।। कुंजर कायर कौन कहाँ गति ठान हीं।।9।। केरन को जु सुभाव पर्स्यो अति कंप को।। हेम लियो हठ नेम सु पावक झंप को।।10।। खंजन कंज सों लागि रहे गति लाज तें।। केहरि कंदर मंदिर में दुर्स्यो त्रास तें।।11।। पंक में पंकज मूल रह्यो छिपि लाज तें।। नित्य प्रकास बिलास मिट्यो द्विज राज तें।।12।। ताल पखावज आवज बाजे जन्त्र है।। गान मनोहर मेन के मोहन मंत्र है।।13।। सो इत की उत की धुनि लागे सुहाई है।। मानो अनंग के आंगन बाजे बधाई है।।14।। गोकुल गोरिन खोरिन खेल मचायौ है।। रंग बिरंग अबीर सों अंबर छायौ है।।15।। लाल गुलाल की धूंधर में मुखयों लसै।। प्रीत पतंग प्रभावित कंचन कंज सै।।16।। दृष्टि करी पिचकारी भरी अनुराग सों।। जाय लगी ब्रजराज लला बड–भाग सौ।।17।। उज्जवल हास कपूर की धूर उडाव ही।। सुंदर स्याम सुजान सौ नयन जुडाव ही।।18।। गावत गारिन नारि सबै झुक प्रीति की।। बात बनावत आपनी–आपनी जीत की।। 19।। घिरि

आईं अबला सब लाल गोपाल सों।। हेम लता लपटी मानो स्याम तमाल सों।।20।। कौऊ गहें पट पीत कौऊ बन दाम कों।। कौऊ निसंक व्है अंक भरे घनस्याम कों।।21।। स्याम के सीस तें स्यामा जु केसर ढोरी है।। दे कर तारी कहें सब हो–हो–होरी है।।22।। एसोई ध्यान सदा हरि को जीय जो रहे।। तोपें "गदाधर" या के भागि की को कहे।।23।।

152 काफी नंद गामते बन ठन कें चले बरसाने खेलन होरी।। बसन बिचित्र सबे रंग भीने रसिक मंडली संग सब जोरी।।1।। विविध भांत पाग सिर शोभित कटि पट पीत पिछोरी।। हाथन कंचन जेरी विराजत करत कौतूहल किलक कलोरी।।2।। फूलन की माला झोरा झुकि काहू फूलन भरि झोरी।। कोऊ अबीर गुलाल उडावत कोऊ चंदन बंदन रोरी।।3।। कोऊ ताल मृदंग बजावत कोऊ आवज डफ जोरी।। कोउ भेरि दमामा बजावत दुंदुभी सेहनाई की सोरी।।4।। कोउ चंदउमुखि चंग बजावत संख शृंग मुरली घनघोरी।। एक रबाब किन्नरी बजावत एक मंजीर झांझ झनकोरी।।5।। एकसारंगी अधोटी बजावत जल रतरंग रस रंग रह्योरी।। एक प्रवीन जो बीन बजावत श्रीमंडल बाजत मधुरो री।।6।। एकन अमृत कुंडली राजत नवसत रंग खजोरी।। कटतारन चुटकी जोबजावत गावत हो हो होरी।।7।। ले समाज सब जाय जुरे बरसानें चोहटे पोरी।। उतते सब ब्रज युवती यूथ जुर आय भई इकठोरी।।8।। लहेंगा लाल चूनरी बहुरंग कंचुकी ललित कुचनपे होरी।। मेन मुनीसी ठाडी मानों चंचल नयन चकोरी।।9।। हाथन लिये कनक पिचकाई फूल छरी गेंदुक सोहे गोरी।। घूंघट माझ निहारत पियतन सब से सयानी हें अतिभोरी।।10।। केसर चोवा छिरकत बहुरंग वैयां पकर झक झोरी।। नयनन काजर आंजि गुलचावत सब ही धरत जोबन की तोरी।।11।। एक जो सन्मुख पढत दोहरा तापाछे एक सखी जो दौरी।। एक दौरत दस बीसक दौरी सब ही भजाय करी मति बोरी।।12।। मार परी कोऊ आय सकत नहीं प्रीतम भुज भरि ले भेटोरी ।। आलिंगन दे अधरामृत पीवत यह रस सदा एक पल न घटोरी।।13।। खेलि फाग रस सिंधु अधिक वढ्यो उमगि चल्यो जानो हद तोरी।। सुर बनिता जो निरख थकित भई ये बड भागि ब्रज युवतिन कोरी।।14।। जो जाके मन हुती कामना सो सबहिन पूरन जो भयोरी ।। फगुवा देन कह्यो सब हिन को वल्लभ पिय सुख प्रेम हियोरी।।15।।

153. काफी श्रीवृषभान कुंवरि महा–रंग भीनी हें । सखी स्वरूप अनूप सबे संग लीनी हें।।1।। खेलत फाग सुहाग भरी अनुराग हें। नंद के लाल सों बाल बडी बड–भाग हें।।2।। कंचन बेली सु कौन कहि द्युति दामिनी। चंद कहा अरबिंद को काम की कामिनी।।3।। खंजन मीन आधीन करी कदली जहां। केहरि हंस प्रसंस करे अति से तहां।।4।। कोकिला कुंद कपोत सु कीरन को गिने।। बिन बधूक पर बाली बारी बारिनै ।।5।। बास सुबास बने सु बने रंग–रंग हें। हेम मनी खचि है रचि भूसन अंग हैं ।।6।। सौंधे की सरसाई कहालो कहि परे। गुंजत हें अलि पुंज अंग–अंग उपरे।।7।। दुंदुभी ताल मृंदग सो बाजु बजावही। ये बिध रीति सों प्रीति सों चाचर गाव ही।।8।। बे सुन सुंदर स्याम सखा संग आये हें।। झीने सुगंध सों भीने बागे बनाये हें।।9।। देखत दोरी किसोरी भरो री भरी सजनी। रीझी हें रूप निहार सनेह सों वे सनी।।10।। सोंधे भरी पिचकारी जरी नग हेम सों। छबी सों छोडी छबीलों छकी हें प्रेम सों।।11।। कंचन की जु कमोरी सों केसर सों भरी। डारत हें पिचकारी सखी सब हें खरी।।12।। भाम कों स्याम चलाइ जु गेंदुक फूल की। आय लगी उर माँझ के काम के मूल की।।13।। कंज पराग कपूर की धूरि गोपाल के। लावत गाल सों वाल लगी उर लाल के।।14।। आंधी करी हरि बीर अबीर गुलाल हें। धूंधर में झक–झोर टूटि उर माल हें।।15।। आइ हें झूंडन झूम के घूम के बार को। फूल छरी बधरी उर कंचन मार को।।16।। यह रस श्रीगिरिधारी की प्यारी को गान हें। "श्रीविठल" गिरिधर सों जीवन प्रान हें।।17।।

154. काफी राधा माधौ सँग खेली। बार–बार लपटाति स्याम तन कनक बेली बाहु गल मेली।।1।। चोबा चंदन सरस कुमकुमा बहुत सुंगध अबीर। कुसुम माल राजति उर अंतर प्रहसित जादौ वीर।।2।। मदन महोच्छव फाग मनोहर रति रस फागुन मास। गोप बधू गावति नाना रँग बलि 'परमानंददास'।।3।।

155. काफी होरी कौ है अवसर जिनि कोऊ रिस मानैं। काहू कौ हार तोरे काहू की चूरी फोरै, काहू की खुंभी लै भाजै अरू अचानक काहूँ के पिचकारी नेननि तकि तानै।।2।। काहू की नकबेसरि पकरी काहू की चोली, काहू की बेनी गहे अरू कंठसरी झटकि आनैं।। 'कुंभनदास' प्रभु इहि बिधि खेलत, गिरिधर पिय सब रंगु जानैं।।2।।

156. काफी या ब्रज मैं हरि होरी मचाई। इत तें आवति कुंवरि राधिका उत तें कुँवर कन्हाई।।1।। खेलत फाग परस्पर हिलि मिलि यह सुख बरनि न जाई। नंद घर बजत बधाई।।2।। बाजत ताल मृदंग झाँझ डफ मंजीरा सहनाई। उड़ति अबीर गुलाल कुमकुमा केसरि रहत सदा ब्रज छाई। मानौ मघवा झरि लाई।।3।। राधा जू सैन दियो सखियनि कों झुंड–झुंड उठि धाई।।4।। लपटि झपटि गई स्याम सुँदर सों बरबस पकरि लै आई। लाल जू कों नाच नचाई।।5।। लीन्हो छोरि पितांबर मुरली सिर सों चुनरी ओढ़ाई। बेंदी भाल नैन बिच काजर नकबेसरि पहिराई।।6।। मानौ नई नारि बनाई। फगुवा दिए बिनु जान न पै हौ करि हौ कौटि उपाई। लै हौं काढ़ि कसरि सब दिन की तुम चित चोर चबाई।।7।। बहुत मांखन दधि खाई। मुसुकत हौ मुख मोरि–मोरि तुम कहाँ गई चतुराई।।8।। कहां गए वै सखा तुम्हारे कहां जसोमति माई। तुम्हैं क़िन लेति छुड़ाई।।9।। रास बिलास करत बृंदावन ब्रजबनिता जदुराई। राधे स्याम जुगल जोरी पर "सूरदास" बलि जाई। प्रीति उर रहति समाई।।10।।

157. काफी खेलत जाके रंग रह्यो हो ब्रजवासिन संग फाग।।ध्रु०।। बीना ताल मृदंग झाझ डफ बाजत बंस रसाल।। गावत गिरिधर रूचि उपजावत बिबिस भईं ब्रजबाल।।1।। लाल गुलाल लिये ओलिन में बहु बिध केसर घोरि।। मोहन हाथ कनक पिचकाई क्रीडत ब्रज की खोरि।।2।। मधु मंगल श्रीदामा तुम हुं होहु त्रियन की ओर।। जा के खेलत सुख उपजत है यों कह्यों नंदकिसोर।।3।। गारी दें हि जसोदा कों सब प्रेम प्रीति रससान।। यह छबि फबी जु कहां लगि बरनें बुधि थकित अनुमान।।4।। गोरे नंद जसोदा गोरी कान्हर कौन गुन स्याम।। प्रथम ही न्हाय जसोदा बैठी देखे है वृषभान।।5।। हलधर कह्यौ भुजा ऊंची कर कारे जो वृषभान।। कीरति कहो कौन सों जाई राधा रूप निधान।।6।। बहोस्यो सिमिटि सकल ब्रज सुंदरि बेनी गुही बनाय। माँग सँवार त्रिया से कीने पच रंग पाग छिनाय।।7।। श्रीराधा चोली पहराई ललिता लहेंगा सारी।। आभूसन सब अंग बनाये निरिख थकी ब्रजनारी।।8।। राधे बोलि कह्यो सखियन सौ रही रूप रस पाग। जो पुरूषारथ दे हि बिधाता तो ऐसी कामिनि लाग।।9।। कान पकर गुलचें चंद्रावलि सखियन पहोंची जाये।। राधा मगन भई बिहरत ही सकुचि रही सिरनाय।।10।। उपरना पंच रंगी पगिया सिर बांध चली एक नारि।। निकट गई मोहन के धोखें हलधर गहे हें संभारि।।11।। कौऊ नीलांबर लै भागी, कौऊ बैन बखानत नाम।। काहू दई कपट की बीरी ली जे जू

बलिराम।।12।। सारी सुरंग चूनरी हम कों आभूसन बहु मोल।। इतनो फगुवा दें छूटोगे देहु श्रीदामा ओल।।13।। तब हलधर जुवती सनमानी मेवा दियो मंगाय।। कंचन थार भर हीरा मानिक "सूरदास" बलि जाय।।14।।

158. काफी एरी सखी निकसे मोहनलाल।। खेलन ब्रज में फाग री।। रंग हो हो हो होरियां।। एरी सखी घुमड्यो अबीर गुलाल।। मानो उनयो अनुराग री।।1।। सोभित मदन गोपाल।। कटि बांध पट सोहनों।। काछनी काछें लाल।। लाल निचोय रंगी मानों।।2।। मोर मुकुट छबि देत।। बंक दृगनहँसि देखनों।। सब ही को मन हर लेत।। एनमेन मानो पेखनों।।3।। पटह आबज सुर बीन अनाधात गति गाज ही।। ताल मृदंग उपंग रूंज मुरज डफ बाज ही।।4।। घिर आईं ब्रज–नारि मृग–नयनी गज–गामिनी।। रोके हें सावरेलाल घनघेर्‍यो मानो दामिनी।।5।। छिरकत पिय–नंदनंद।। त्रिय पट ओट वचाव हीं।। मानो घन पूरनचंद।। दुर निकसें पुनि आवहीं।।6।। बने हें त्रियन के अंग छिरक छींट छबि छेल की।। मानो फूली रंग रंग।। ललित लता जानु प्रेम की।।8।। बढ़्यो परस्पर रंग।। उंमग–उंमग रस भरन में।। निरख भई मति पंग।। पीतांबर फरहरन में।।8।। जब गहि रंगन भरे।। मोहन मूरति सांवरे।। हर–हर हर हँसि परे।। मुनि मन व्हे गये बावरे।।9।। भई सरस्वती मति बोर।। ओर खेल कहां लों कहें।। रस भरे सांवल गौर।। "नंददास" के हिय रहें।।10।।

159 काफी लालन खेलत हें हो होरी।।चोवा चंदन अगर कुंकुमा अबीर भरें भरि झोरी।।1।।बाजत ताल मृदंग झांझ डफ ओर मुरली धुनि थोरी।।'कृष्णजीवनलच्छीराम' के प्रभु संग खेलत राधा गोरी।।2।।

160 काफी रंग भीनी जोरी होरी खेलें हो। कबहुंक दोऊ लटपटाय तन अंस भुजावर मेलें हो।।1।। अरस परस छिरकत छिरकावत कर कर नयनन कोरे।। ले गुलाल मुख लावत प्यारी प्रीतम को चितचोरें।।2।।कुंकुम ले मोहन प्यारी पर डारत हें बडभाग।।अरुन कमल पर वरखत मानों नील सरोज पराग।।3।।निरख निरख ललिता दिक की छिबि तृन तोरत बलिजाय।। श्रीवल्लभ हित यहसुख निरखत उर आनंद न समाय।।4।।

161. काफी तुम आवौ री! तुम आवौ। मोहन जू को गारि सुनावौ। होरी रस रंग बढावौ। हरि कारौ री! हरि कारौ। यह द्वै बापनि बिच बारौ।।1।। हरि नटवा री! हरि नटवा। राधा जू के आगे लटवा। हरि मधुकर री! हरि मधुकर। रस चाखत डोलत घर–घर।।2।। हरि नागर री! हरि नागर। जाके बाबा नंद उजगार। हरि खंजन री! हरि खंजन। राधा जू के मन कौ रंजन।। हरि रंजन! हरि रंजन।।3।। ललिता लै आई अंजन। हम जानें री। हम जाने। राधा गहि मोहन आनें। मुख माँडो री! मुख माँडौ। ।4।। हरि हा–हा खाई तौ छाँडौ। हम भरिहैं! हम भरिहैं। काहू तें नेंक न डरि हैं। हरि होरी री! हरि होरी।।5।। स्यामा जू केसरि ढोरी। हरि भावै री! हरि भावै। राधा मन मोद बढावै। रँग भीनें री! रँग भीने। राधा बस मोहन कीनें। हरि प्यारौ री! हरि प्यारौ। राधा जू कौ नैननि तारौ।।7।। हम लै हे री! हम लै हे! फगुवा लै गारि न दै हें। इहि जसु 'परमानंद' गावै। कछु रहसि बधाई पावैं।।8।।

162. काफी मनमोहन ललना मन हर्‍यो हो। हर्‍यो मन सकल घोख सिरताज।।धु०।। गृह–गृह तें सुंदरि चलीं देखन ब्रजराज कुमार। निरखि बदन बिथकित भईं हो पिय ठाढे हैं सिंहद्वार।।1।। डिम–डिम पटह झांझ डफ बीना मृदंग उपंग तार। गावत चेत सुबल श्रीदामा बाढ्यो है रंग अपार।।2।। रतन खचित पिचकाई कर लियें छिरकत घोष कुमार। मदन मोहन पिय अति रसमाते कछुक न अंग सँभार।।3।। इत राधिका प्रभृति चंद्रावलि ललिता गोपी अपार। उत मोहन हलधर दौउ भइया खेल मच्यो है दरबार।।4।। सिथलित कटि बसन मेखला उर गज मोतिन हार। बिथुरी अलक वदन छबि राजत गलित कुसुम सिरमौर।।5।। मोहन प्यारो सेंन दै हलधर पकरि जाइ। आपुन हँसत पीत पट मुख दै आयें हैं आँखि अँजाइ।।6।। बहुर्‍यो सिमिटि सकल सखियन मिलि मोहन पकरे धाइ। अधर माधुरी पिवत पिवावत मुरली लई है छिनाइ।।7।। खरिक सकल सिमिटि ब्रजवासी चले हैं जमुना जल न्हान। वारि कुंवर पर नंदरानी हो देत बिप्रन बहु दान।।8।। दुतिया पाट सिंघासन बैठे छत्र चँवर सिरताज। राजत सभा सहित श्रीदामा बलि–बलि–बलि जुवराज।।9।। स्याम सुभग तन अति राजत हैं अरगजा पीत सुवास। 'गोविंद' प्रभु पर सकल देवता बरखत कुसुम अकास।।10।।

163 काफी माई समध्याने तें ब्राह्मण आयो भर होरी के बीच भरुवा ।। घेर लियो घर मांझ लुगांईन मूंडलगाई कीच।।1।। काहू लई खिसकाय परदनी काहू कियो कजरारो।। पिसी पिठी गोंछन लपटाई ब्राह्मन को कहा चारो।।2।। काहू गुदी झगुला पहेरायो काहू गूलरी माला।।तारी दे दे महीगन गावें हँसि हँसि ब्रज की बाला।।3।। जसुमति लियो बचाय बापरो निरमल नीर न्हवायो।। नये बसन पहेराय गुदी ते झगुला आनि छिडायो।।4।।तब ब्राह्मन निधरक व्हे बेठ्यो पहरि ऊजरे कपरा।।एक ग्वालिनि ने आनि उलेड्यो सरी कीचको खपरा।।5।।देख विमल गह्यो चतुरंग ने भलें भले करि गावें।। अति खिलवार मोधुवा पांडे खेलें हीं सुख पावें।।6।। पेजबांधि जो सुर पति नाचे तो ऐसी फागन माचे।। पेट फुलाय वदन टेढो कर विफर्यो ब्राह्मन नाचे।।7।। गहेन जोई माई देपांडे हमतो फगुवा चाहें।। एकन कान पकर गुलचायो काहू अेंठी बाहें।।8।।जानि सासुरे को यह ब्राह्मन मोहन कछु बन कह हीं ।।'कृष्णजीवनलछीराम' के प्रभु हरि सकुच सकुचजिय रह हीं ।।9।।

164 काफी या ब्रज में होरी रंग बढ्यो।। हो हो सबहिन हिये हुलास।।ध्रु०।। खेलत मोहन लाडिलो हो नंदराय की पोरि।।हलधर सुबल सुबाहु श्रीदामा सब लरिकन संग जोरी।।1।। विविध भांत के भेष बनाये नाचत अतिहि सुधंग ।। गावत गारी तारी दे दे किलकत अपने रंग ।।2।। ढोल की ढाल पखावज वीना झांझ संख उफ ताल।। भेरि दुंदुभी अगणित वाजे बिच बिच वेणु रसाल।।3।। कोलाहल सुनि सब ब्रज सुन्दरि सकल सिंगार संवारि।। झुंडन मिल गावति आईं अतिही सरस सुरगारि।।4।। दुहुंदिशतें छूटी पिचकारी घुमड्यो अबीर गुलाल।। रपटत झपटत तनले धावत टूटतउर बनमाल।।5।।तिहिं छिन चपल चतुर चंद्रावलि हलधर पकरे दोर।। आंखि आंजि मुख मांडि कुंकुमा छोडे रंगन वोर।।6।।पोंछत नयनन खोरनीलपट तन नवहीं वसन संभार।। हो हो हो करि ग्वाल हसते हैं वाढ्यो रंग अपार।7।।तब नंद नंदन फगुवा देन मिस प्यारी सन्मुख आय।। मृगमद केसर ओर अरगजा भीजे उर लपटाय।।8।। तब सकुची गोपी सब कोपी कनक लकुट ले हाथ।। पकरन धांई छबीले लाल कों खसत झीने पट माथ।।9।। भागे सकल सखा संग के तब मोहन लीने घेर।। अछन उठाय गई ले पियकों फिर चितवत मुख फेर ।।10।।प्यारी धाय गहे भुज बंधन अति आतुर अकुलाय।। करत मनोरथ सब ही जिय के रस बस रहे अरुझाय ।।11।।एक सखी सोंधो लपटावत नावत केसर नीर। पीतांबर सो गूंथि बनावत गहि राधाजू को चीर।।12।। एक कहत

बलबल जोडी की नहीं त्रिभुवन समतूल।। वदन निहारें ज्यों चंद चकोरी अंग समातन फूल।।13।। एक कपोल परसि लपटावत केसर कुंकुम घोर।। एक भालरचि बेंदी बनावत हंसत सबे मुखमोर।।14।। एक कहे भली बनी हें सहचरी राधाजू की जोरि।। यह सुनि मुसकि हँसत पियप्यारी चितवत नयनन मोरि।।15।। या छबि ऊपर तन मन बारत राई लोन उतारि।। चिरजीयो युगयुग यह जोरी कहति यों अचरा पसारि।।16।। हरि संग करत विहार विविध रस केसें बरन्यों जाय।। सुर नर मुनि विथकित भये हें रति पति रहे सिरनाय ।।17।। फगुवा मन मान्यों दियो सब पूजी मन की आस।। श्रीविट्ठल पदरज प्रताप तें गावत यह यशदास।।18।।

165 काफी निकस कुंवर खेलन चले।। रंग हो हो होरी।। मोहन नंद के लाल।। रंगन रंग हो होरी।। संग लीने रंग भीने ग्वाल बाल।। वेगुन रूप रसाल।।1।। कंचन माट भराय।। सोंधे भरी हे कमोरी।। रत्न जटितपिचकारी करन।। अबीर भरें भर झोरी।।2।। सुरमंडल डफ झांझ ताल।। बाजत मधुर मृदंग ।। तिन में परम सुहावनी।। महुबरि बांसुरी चंद।।3।। खेलत खेलत जब रंगीलो लाल।। गये बृषभान की पोरि।। जेहुती नवल किंसोरीभोरी।। ते आंई आगें दोरि।।4।। सुनि निकसी नव लाडिली। श्रीराधा राज किशोरी।। ओलिन पोहोप पराग भरे।। रूप अनुपम गोरी।।5।। संग अली रंगीली सोहें।। करन कनक पिचकारी।। मोहन मन की मोहनी।। देतिरंगीली गारी।।6।। तिनको छिरकत छबीलोलाल।। राजत रूप गहेली।। मानो चंद सीचत सुधा। अपने प्रेम की वेली।।7।। नवल वधुन के रंगीले बदन।। अबीर धुमड में डाले।। छुटह निसंक अरुन घन में।।हिम कर निकर कलोलें।।8।।इतने मांझ छिपि छबीली कुँवरि। पकरे हे मोहन आन। छबिसो परस्पर झक झोरत। कापे परति बखान ।।9।। गुप्त प्रिति प्रगटित भई।। लाज तनकसी तोरी।। ज्यो मदमातें चोर भोर।। भलकत निकसी चोरी।।10।। सखियन सुख देखन के काज । गांठ दुहुन की जोरी।। निरख वलैया ले सबें। छबिन बदी कछु थोरी।।11।।कोऊ छेल छकि छबिले लाले। छिरकत रंग अमोल।। कोऊ कमल करले पराग। परसत रूचिर कपोल।।12।। बने है पिया के कमल लोचन। जब गहि आंजे अंजन।। जनु अकुलात कमल मंडन में। फंदन फंदे युग खंजन।।13।। देखि बिबस वृषभान धरनि।। हँसत हँसत तहाँ आई।। वरजी आन नवल वधू। भुज भरि लिये कन्हाई।।14।। पोछत मुख अपने अंचल। पुनि पुनि लेत बलाय।। मुसकि मुसकि छोरत सु गांठ। छबि बरनी नहीं जाय।।15।। छोडन न देंही नवल वधू। मांगे कुंवर पे फाग।। जोपे फगुवा दियो न जाय। प्यारी राधा के पायलाग।।16।। ओर कहां लागे

वरनिये। बढ्यो सुख सिंधु अपार।। प्रेम कलोल हलोलन में।। किनहूं रहिन संभार।।17।। रंग रंगीली व्रजवधु ।। रंगीले गिरिधर पीय।। यह रंग भीने नित वसो। नंददास के हीय।।18।। निकस कुंवर खेलन चले। रंग हो हो होरी। मोहन नंद के लाल। रंगन रंग हो होरी।।19।।

166 काफी एसें होरी खेले सांवरो संग लियें ब्रजबाल।। पहेलें हीं आपुन बने ओंर तापाछें सब ग्वाल।।1।। यमुनाकूल सुभाय आपने मानो हो मंडली मराल।। सुनकें धाई सब ब्रज नागरि चलत हें गजगति चाल।।2।। नखसिखतेबनि कें ब्रज बनिता गावतआंई गारि।। एकत स्यामसखा भयेठाडे एक लीने राधे संग नारि।।3।। वीना वेणु उपंग बांसुरी बाजत ताल मृदंग ।। पटह निसान बाजत चहुंदिशतें होत परस्पर रंग ।।4।। तारी देदे ग्वाल हंसत हें अंचल अंचल जोरि।। अबीर गुलाल अरुन भयो अंबर भरत अंक झकझोरि।।5।। चोली तरकि हसी अरु चितवनि उपजतअंग सुभाय।। एकले सोंधो भरत स्याम कों एकन मुरली छिनाय।।6।। केसर के रंग कुंकुम वंदन भुजगहि भरहि अपार।। गावत फाग के गीत सबे मिल घुमड रह्यो नंदद्वार ।।7।। चतुर सखी नयनन की सेनन मिल मन मतो उपाय।। कर गहि वंस गोपी ले धाई लेत निसान पलाय।।8।। स्यामा सोंह दई ललिता कों हलधर पकरे अेन।। आंखिन मांडि वेनी गुही माथें अंजन लावे नयन।।9।। नारिन में बृषभान नंदिनी ज्यों उडुगन में चंद।। ताको रूप नयन निरख ति मगन भये नंदनंद।।10।। नारि गारि ऐसी गावत मानो कोकिल बोले अंब।। भीजे वसन अंग ऐसे लागत मानो कनक के खंब।।11।। फगुवा दीनो नंदजसोदा मेवा बहुत पकवान।। गावत सबे मिल ब्रजवासी चले हें यमुना जल़ न्हान।।12।। पोहोपन की वरषा सब सुर करें इक टक ध्यान लगाय।। हरि को फाग परम रस लीला जनहरिया मुख गाय।।13।।

167 काफी सांवरे मोहि रंग में बोरी।। बैयां पकर मेरी सिर की गगरीया छीन कें सिरतें ढोरी ।। रंगमें लालन रस बस कीनो डारी गुलाल की झोरी ।। गावन लाग्यो मुखते होरी।।1।। आय अचानक मिल्योरी डगर में तब निरख्यो नंदकोरी।। भर भुजले मोहि पकर कें जीवन ने वरजोरी।। माला मुतियन की तोरी।। 2।। मर्यादा मेरी कछूना राखी कही एक बात ठगोरी ।। तब इनकों में आंख दिखाई मत जानो मोहि भोरी ।। जानू तेरे चितकी चोरी।।3।। मेरो जोर प्रभु कछुन चलत है कंचुकी की कसतोरी।। 'सूरदास' प्रभु तिहारे मिलन कूं रसियाने रंग में बोरी।। गई में नंद की पौरी।।4।।

168 काफी होरी खेलै लाल, ढफ बाजैं ताल, झांझ झनननननन ।।ध्रु०।। चोवा, फूलेल, अबीर, अगरजा, भँवर उडुति भननननन।। निकसे कुंवर झूमकि खेलनि कों हँसति चलति ठननननननन।।1।।घर घर तैं बनिता बनि आँईं भनक परे श्रवनननननन।। कंचन की पिचकाई कर गहैं छिरकि स्याम तननननननन।।2।। केसरि कीच मची हरि आँगन उमड़ि घुमड़ि आँईं घननननननन।। उड़ति गुलाल अरुन भयौ अंबर लखि न जात रैंनि दिननननननन ।।3।। एकु नॉचति, एकु गहि झक झोरति गावै तान तननननननन।। 'सूर स्यांम' प्रभु किसोरी सबन सँग धुरि गोकुल ब्रज गगनननननन।।4।।

169 काफी तेरे नैननि में है जु ठगोरी।। जो खेले ताही सौं खेलौ हौं न खेलौं पीय तुम संग होरी।।1।। काहे कौं फंद में डारति हो मोहि बड़ी बेस किसोरी।। 'कृष्णजीवनलच्छीराम' के प्रभु नित प्रति आवो मेरी पौरी।।2।।

170 काफी यों खेलौं रंग फाग री।। कनक कमोरी में केसरि घोरी, छिरकौं मैं पिय की पाग री।।1।।चोवा चंदन औरु अरगजा चोली पै डारुं दाग री।।'कृष्णजीवन लछीराम' के प्रभु प्यारे खुले हमारे भाग री।।2।।

171 काफी फागुन मास सुहायो। रसिया होरी खेलनि आयो। अबीर गुलाल भरे फेंटन में दोरि बदन लपटायो।। हो रसिया० ।।1।। गारी गावे भाव बतावे रस भर रीझि रीझायो।।'कृष्ण जीवन लछीराम' के प्रभु कौं नाना भाँति नचाँयो।।हो रसिया ०।।2।।

172 काफी एक रंगीला रंग डारि कै कित जांदा।। ध्रु०।। दुरि-आंदाँ तनक छिपजांदा तब तो चोर कहांदा।। जब जानौं जसुमति के ढोटा सनमुख दर दिखांदा ।।1।। गारी गांदा घेरि मिलांदाँ लरिकन कौं सिखलांदाँ।। भले भए तुम सुधर सयाने ब्रज में लोग हँसांदा ।।2।। पकरंगा तेरी पगिया रंग हो तब तो कौंन छुड़ादाँ।। निरलज निपट लाल लंगरवा सौ सौ सोगंद खादाँ ।।3।। चोवा चंदन औरु अरगजा रोरी रंग मिलांदा।। आजु सखी 'हरिदास' के ठाकुर इह बिधि धूम मचांदां।।4।।

173 काफी श्रीवृन्दावन चंद खेलें होरी हो।।ध्रु०।। इत मोहन संग सब ब्रज बालक बन बन आये टोल।। उतव्रज युवतिन बसन साजे पहरे चीर अमोल।।1।। तिन में मुख्य बृषभान नंदनी शोभा वरनी न जाय।। गौर स्याम जोरी बनी हें उर आनंद न समाय।।2।।कनक कलश केशर के रंग सों भर लीने दोऊ ओर।। पिचकाई परस्पर छिरकत तक तक नवल किशोर ।।3।। बाजत ताल मृदंग झांझ डफ सुर

मंडल कठताल।। वीना वेन रबाब किन्नरी बाजत वेणु रसाल।।4।। चोवा चंदन ओर अरगजा भरि लीने कनक कचोल।। युवति यूथ सब मिलि कें धांई दियो हे स्याम सिरढोल।।5।। तब बलभद्र सखा सब उमडे उडत अबीर गुलाल।। हो हो हो कहि बोलन लागे नाचत गोपी ग्वाल।।6।। सेना वेनी सब सखियन मिल गिरिधर लीने घेर ।। नयन आंजि मुख मांडरोरी हसत वदन तन हेर।।7।। दोउन लीनों फगुवा आभूषन ओर पटकूल।। अति रस प्रेम बढ्यो गोकुल में सुरपति बरखत फूल।।8।। यह विध खेलत ब्रजजन सब मिल चले श्रीयमुना न्हान।। अति प्रफुल्लित नंदजू पहराये बिमल बसन परिधान।।10।। तब नंदरानी नयन सिरानी भर मुक्ता फल थार।। आरती वारत प्रान पिया पर त्रिभुवन जयजय कार।।11।। युग युगराज करो बृज अविचल भक्तन देहु आनंद।। श्रीवल्लभ पदकमल मधुप मन हरिजन पीवें मकरंद।।12

174 काफी कान्ह कुंवर खेलनि चले रंग भीने हो।। संग सखा बलराम लाल रंग भीने हो।। भूषन बसन बनाई कैं रंग भीने हो।। सोभा सुख के धाम।। लाल रंग भीने हो।।1।। बनि ठनि निकसे अति बने रंग, ठाड़े सिंघ दुवार।। लाल रंग भीने हो।। स्याम सुभग अति राज ही।। रंग भीने हो ।। पूरन चंद उदार।। लाल रंग भीने हो।।2।। बाजे बहु बिधि बाजहि।। ताल मृदंग ढफ चंद।। बिच बिच बिच मुरली सुर लिये हुसलत सब के अंग।।3।। सुनि कैं दौरि ब्रज बधू आईंनंद जू की पौरी।। तिन में तरुनी सिरोमनी राजति नबल किसोरी।।4।। सनमुख ठाडी लाल कैं, गावति मीठी गारि।। मुख पर अंचल दै हसी, हसि चितवत नर नारि।।5।। मोहन के चित रति बढ़ी, खेल मच्यौं अति जोरि।। भरि लीये सुरंग गुलाल सौं, फैंटन के दोऊ छोरि।।6।। मृगमद कुँमकुम घोरि कैं , भरति कनक पिचकाई।।छिरकति तकि-तकि प्यारी कौं, चितवति चितहि चुराई।।7।। मुख पर चंदन डारि कैं, औहट फिरति हँसि लाल।। कोलाहल सब करत हैं हो हो बोलत ग्वाल।।8।।ये उनकें वे उनही कैं, मोह्यो चाहत पिय प्यारी ।। छलबल सौं सबन सब तकि के पगन परत नर नारि ।।9।। तब ललितादिक दौरि हे गहे अचानक कान्ह।। सबे मिली है सुंदरी पाए हैं जीवन प्रान।।10।। निरखि हँसी मुख मुसकि कैं परसत बैन अघाई।।मोहन सौं ललिता कहे छाँडौ करि मन भाई।।11।। बैनी गूंथी माँग सौं भूषन सबैं सिंगारि।। पहिरावे पट कचुकि अंजन दीये सँवारि।।12।। नील नलिन खंजन मृगी डारै उन पे वार।। अति अनूप नव नागरी भूले भवन नर नार।।13।। चोवा मृगमद अरगजा छिरकति केसर घोरि।।छायै गगन गुलाल सौं अरून घटा घन घोर।।14।। बरखतिअति अनुरागसौं स्यामा स्याम किसोरि।। पिय प्यारी मुख चंद के पीवत नैन

चकोरि।।15।। छांडेमन जु मनाई कैं पकरे फिरि बल घेरि।। जुबति भेष बनाई कै पहिरावे षट फेरि।।16।। नैंननि अँजन दै हँसी भले बने बलदाऊ।। छिरकति केसर घोरि कैं कहो कुंवरि कौं नांऊ।।17।। इहि बिधि होरी खेल ही बाढ्यो अति अनुराग। सुधि कछु न समार ही प्रमुदित बृज बडभाग।।18।। नवल लाल रसिक मनी गिरिधर प्रान आधार।। नैंननि कौ फल यह सुख निरखत नंदकुमार।।19।।

175 काफी जमुना के तट खेलति हरि-संग, राधा लै सब गोपी।। नंदलाल गोवरधन धारी, तिन कै नेहनि ओपी।।1।। चलहू सखी ! चली तहाँ जाइयै, छिनु जियरा न रहाई।। बेनु-सब्द करि मन हरि लीन्हौं, नाना राग बजाई।।2।। सजल-जलद-तन पीतांबर छबि, कर मुख मुरली धारी।। तटपट पाग बने मन-मोहन ललना रहीं निहारी।।3।।नैंन नैंन सौ मिलि, कर सौं कर, भुजा ठए हरि ग्रीवा।।मधि नायकगोपाल बिराजत सुंदरता की सींवा।।4।।करत केलि-कौतूहल माधौ, मधुरी बानी गावै।।पूरन चंदन सरद की रजनी, संतन सुख उपजावै।।5।। सकल सिंगार कियौ बृज-वनिता, नख-सिख-लौं भल ठानी।।लोक-बेद-कुल-धर्म काहु की, नैंकु न मानति कानी।।6।। बलि-बलि बल के बीर त्रिभंगी, गोपिनि के सुखदाई।।सकल बिथा जु हरी या तन की हरि हँसि कंठ लगाई।।7।।माधव नारि, नारि माधव कौं, छिरकत चोवा-चंदन।। ऐसौ खेल मच्यौ उपरापरि, नंद-नंदन जग-बंदन ।।8।। ब्रह्मा, इन्द्र, देव-गन गंधर्व, सुमन एक रस बरषैं।।'सूरदास', गोपी बड़भागिनि, हरि-क्रीड़ासुख करषैं।।9।।

176 काफी नंद-नंदन बृषभानु-किसोरी, मोहन राधा खेलत होरी।।श्रीवृन्दावन अति हि उजागर, बरन-बरन नव दंपति भोरी।।1।। एकनि कर है अगरु कुंमकुमा, एकनि कर कैसरि लै घोरी।।एक अर्थ सौं भाव दिखावति नाचति तरुनि, बाल, वृद्ध, भोरी।।2।। स्यामा उतहिं सकल ब्रज-बनिता इतहिं स्याम रस-रूप लहो री।। कंचन की पिचकारी छुटति, छिरकत ज्यौं सचु पावैं गोरी।।3।। अति हि ग्वाल दधि-गोरस माते, गारी देत, कहौ न, करो री।।करत दुहाई नंदराई की, लै जु गयौ कल बल छल जोरी।।4।।झुंडनि जोरि रही चंद्रावति, गोकुल मैं कछु खेल मच्यो री।।'सूरदास-प्रभु' फगुवा दीजै, चिरजीवौ राधा-वर-जोरी।।5।।

177 काफी पकड़े ब्रजजन गिरिधारी।। उमंग भरी गोपी सब आई।। खेल मचायो भारी।। खेंचलेई पीतांबर मुरली।। हां हां करत मोरारी।। हँसी सब देकर तारी।।1।। जीही जपत मुनिवर ज्ञानी।। सकल वासना टारी।। शारदा शेष पार नहिं पावत।। जीहीं जपे त्रिपुरारी।। ताकुं गोपी देत हैं गारी।।2।। काल को काल ईश को ईशन ।। जीत लीयो सुकुमारी।। कर जोरी के पीतांबर मांगत ।। द्यो द्यो मुरलीया प्यारी।। जाओ अब जी तुम्हारी।।3।। भक्त आधीन निगम नित गावत।। मुनिवर कहते बिचारी।।'सूरदास' के प्रभु रसीले।। बार-बार बलिहारी।। मगन कीनी ब्रजनारी।।4।।

शिवरात्रि (राजभोग दर्शन)

178. काफी बाघम्बर ओढे साँवरो यामे जोगिया कोहू नर कौन को सुनर कौन। संख शब्द धुन सुन जित तित ते जुर आई ब्रज नार। बदन बिलोक कुँवर राधे को बैठे आसन मार ।।1।। कौन देस ते आये रावल कहाँ तेरी मनसा जाय। मोहन आय मुनि बन बैठे नैनन सैन बताय।।2।। सिंघी पत्र भभूतन बटुवा सिर चंदन की खौर। मैरे एसी पावत उर मान सखी री कंत बिसार्यो गौर।।3।। चंचल नैन कछुन वाँके मन माधुरी मुस्कान। जोगी नाही बियोगी भोगी है भँवर निदान ।।4।। हँस बूझत बृषभान नंदनी रावल उतर देहु। कारन कौन भेख तपसी को बन तज ढूढत गेह ।।5।। चुटकी भभूत दई राधा को चले बाघम्बर झार। मन हर लियो तनक चितवन मे गोहन लागी नार।।6।। नगर–नगर और भवन–भवन ते निस दिन फिरत उदास। नैन चकोर भये राधे के हरि दर्शन की प्यास ।।7।। जतन–जतन कर मन हर लिनो निरख नैन की कौर। "जगन्नाथ" जग जीवन माधौ प्रीत बढी चहु और।।8।।

179. सारंग सखि री नंद नंदन देखु। धूरि धूसर जटा जुटली हरि किए हर भेषु। नील पाट पिरोइ मनि गन फनिग धोखैं जाइ।।1।। खुनखुना कर हँसत हरि हर नचत डमरू बजाइ। जलज माल गुपाल पहिरे कहा कहौं बनाइ।।2।। मुंड–माला मनौ हर गर ऐसी सोभा पाइ। स्वाति सुत माला बिराजत स्याम तन इहिं भाइ।।3।। मनौ गंगा गौरि डर उर लई कंठ लगाइ। केहरी नख निरखि हिरदै रहीं नारि बिचारि।।4।। बार्ल–ससि मनु भालु तें लै उर धर्‌यो त्रिपुरारि। देखि अंग अनंग झझक्यो नंद सुत हर जान। "सूर" हिरदै बसौ नित स्याम सिव को ध्यान।।5।।

180. सारंग मोहन मुनि है आये हो।। हो मेरे ललना सब को मन हर लीनों।।ध्रु०।। रस मसी चाल चले अल–बेली अंग चढाय बिभूत।। कानन कुंडल मुकुट बिराजत पीतांबर ओढे कटि पूत।।1।। दंड कमंडल गही जप माला आसन लीनों बनाय।। कोटि जतन राधा पचिहारी मुख न बोलत मुसिक्याय।।2।। जगजीवन जोगी हैं आयैं अरस परस लिये ग्वाल।। मानों कोटि उड्डगन ससि जैसे ऐसे बने नंदलाल।।3।। दृग–दृग थेई–थेई धुनि बाजे इत गोपी उत ग्वाल।। आनंद भई हें सकल ब्रज बनिता बोलत बचन रसाल।।4।। ब्रह्मादिक इंद्रादिक मुनिवर देखत कोटि–तेतीस।। श्रीगोपीनाथ एक ख्याल बनायौ सकल रचना कौ ईस।।5।। जान्यों भेद बलि मोहन कौ मुख माड्यों सकल सुवास।। जय–जय–कार करत सुर नर मुनि बरखत कुसुम अकास।।6।। नवल किसोर कहाँ लो बरनो सोभा कही न जाये।। "सूरदास" बलि लाल छबीले निगम निरंतर गाये।।7।।

–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–:+:–

181 काफी बृज में होरी रँग सुहायो।। बंसी बट जमुना तट कुंजन प्रीतम प्यारी भायो।1।। पौढन के समै के औसर ललिता रँग जमायो।। 'सरस रँग' सतत यह जोरी भाग बड़े तैं पायो।।2।।

182. कान्हरों खेलत हैं नंदलाल फाग। इत सब सखा मंडली राजत उत समूह ब्रजलाल।।1।। बाजत सरस मृदंग झाँझ डफ बीना बेनु उपंग ताल। छिरकत कुमकुमा अरू अरगजा उडत अबीर गुलाल।।2।। गावत गारी मगन भरि गोपी मीठी परम रसाल। फगुवा मिस गिरिधर गहिं आने लीन्हीं उर मनी माल।।3।। रस बस भई सकल ब्रज बनिता अंग न कछू सँभाल। 'गोविंद' प्रभु पिय की बलिहारी अंबुज बदन रिसाल।।4।।

183 कान्हरों रंग भर खेलत हें हरि होरी।। रत्न जटीत पिचकाई कर लीये छिरकत नवल किशोरी।।1।ललिता प्रीतम को मुख मांडत केसर सों रंग बोरी।। विचित्र विहारि विहारिन परस्पर आनंद सिंधु झकोरी।।2।।

184 कान्हरों मोसों होरी खेलन आयो।।लटपटी पाग अटपटे पेचन नयनन बीच सुहायो।।1।।डगर डगर में वगर वगर में सबहि के मन भायो।।आनंद धन प्रभु कर दृग मीडत हँस हँस कंठ लगायो।।2।।

185. केदारो भली भई ब्रज होरी, आई, घर आयै घनस्याम री। चौवा चंदन अरू अरगजा वै राधा के काम।। 1।। धन्य तेरौ भाग्य सुहाग, लाडिलो अरू न दूजी बाम।। 'कृष्णजीवन लछीराम" के प्रभु सौ ज्यौ सीता मिली राम।।2।।

186. केदारो खेलत मोहन राधा गौरी। इत हिं गोपिका जुरि–जुरि आई, उत हिं ग्वाल मंडली चाँचरि जोरी।।1।। पिय–प्यारी पर, प्यारी–पिय पर, अबीर गुलाल की डारत झोरी। 'कृष्णदास' बलि जाई इननि पर, स्यामा स्याम की जोरी।।2।।

187 कल्याण खेलत गिरिधर फाग अति अनुराग भरे होरी के।। ग्वालन संग गोकुल गलीयन में गोहन लगे गोरी के।।1।।पिचकाइन पलाश कुसुम जल बूका वंदन भरझोरी के।। बोरी रंग में अंगअंग भाव भरी ब्रज भामिनि भोरी के।।2।।

188 कल्याण होरी खेलत मदन गोपाल संग लिये ब्रजबाल।। छिरकत आन परस्पर हरखत किलक देत करताल।।1।। बाजत डफ मृदंग ओर ताल बिचबिच वेणु रसाल।। प्यारी लई घनसार की झोरी पियहि अबीर गुलाल।।2।। ललिता चंद्रावली मतोकर पकरे स्याम तमाल।।'रामदास' प्रभु फगुवा दीनों श्रीगिरिधर मणिलाल।।3।।

189 कल्याण होरी खेलत कुंज बिहारी।। संग लिये केशर कुंकुम भर पिय पर प्यारी डारी।।1।। चोवाचंदन अगर अरगजा चरचित ब्रज की नारी।। तक तक छिरकत मोहन कों किलक देत करतारी।।2।। मदन गोपाल गहे श्रीराधा हमहि देहु फगुवारी।। श्रीगिरिधर लाल दियो तहां सर्वस्व 'रामदास' बलहारी।।3।।

190 कल्याण जमुना तैं हौ बहुत रिझायौ।। अपनि सौंह दिय नंद–दुहाई, ऐसौ सुख मैं कबहुँ न पायौ।।1।। मिल मातु पितु–बंधु स्वजन सब, सखनि–संग बन बिहरन आयौ।। आजअनंत भगवंत धरनि–धर, सुबस कियौ प्रिय गान सुनायौ।।2।। भयौ प्रसन्न प्रेम–हित तेरे, कलिमल हरे जु इहिं जल न्हायौ।। अब जिय सकुच कछु मति राखहि, माँगि सूर अपनौ मन–भायौ।।3।।

191 कल्याण नंद कुंवर रंग गहर–गरबीली।।निस दिन पिय संग लागी डोलतिछकी छबीली।।1।। ताहीं तैं मान करति सबहिन तैं अंग अंग रूप–रसीली। 'सरस रंग' रस जानति सब बिधि तू ही सुघर–नवेली।।2।।

192. कल्याण श्रीगोवरधनराई लाला अहो प्यारे तिहारे चंचल नैंन बिसाला। तिहारे उर सोहे बन–माला जाते मोही सकल ब्रजवाला।। खेलत–खेलत तहाँ गए जहाँ पनिहारीन की बाट। गागरि ढोरें सीस तें कोउ भरन न पावे घाट।। अरगजा कुंकुम घोरि कें प्यारी लीनो कर लपटाई। अचकां–अचकां आइ कें भाजी गिरिधरलाल लगाई।।3।। नंदराई के लाडिले बलि ऐसो खेल निबारि। मन में आनंद भरि रह्यो मुख जोवति सकल ब्रजनारि।।4।। इहि बिधि होरी खेल हीं ब्रज–वासिन संग लगाई। गोवर्द्धन धर रूप पें हो 'गोविन्द' बलि–बलि जाई।।5।।

193. कल्याण नवल कुंवरि ब्रजराइ के लाल खेलत रस भरे होरी हो। गौर स्याम तन राज हीं अरू बल मोहन की जोरी हो।। ऊचे चढ़ि जब टेरियो सुबल श्रीदामा भाई हो। श्रवन सुनत सब धाईयो बोले कुँवर कन्हाई हो।। मंदिर तें सब सजि चले जाई जुरे सिंघ–पौरी हो। मोहन मुरली बजाव हीं सुनत ब्रज–बधू दौरी हो।। चहुँ दिसि तें बाजे बजें रूंज मुरझ डफ ताला हो। दुंदुभी डिम–डिम झालरी बिच–बिच बेनु रसाला हो।। ब्रज–जन सब एकत्र भए एक ओर ब्रज–नारी हो। गावति गीत सुहावने हँसि–हँसि देतऽब गारी हो।। अरगजा भरि–भरि पिचकाई अंचल बीच दुराई हो। बलराम कृष्ण कों छिरक हीं बदन मोरि मुसिकाईं हो।। कोपि सखा सनमुख भए अरगजा कुंकुम घोरी हो। घेरि सकल ब्रज सुंदरी एक–एक करि ढोरी हो।। जुवती जूथ मधि राधिका उत ब्रजराज किसोरा हो। जुग ससि रूप किरन पीवे लोचन चारू चकोरा हो।। सब सखियन मिलि मतो मत्यो हो मोहन कों पकराई हो। छल–बल सों नहिं पाइये हो किहिं मिस पकरे जाई हो।। ललिता आगें ले दौरी मोहन लीने घेरि हो। पिय प्यारी गाँठि जोरि के हो हँसत बदन तन हेरी हो।। गाल बहोत तुम मारते सुनो हो सखा बल भाई हो। जाई कहो ब्रजराज सों मोहन ले हु छिंड़ाई हो।। इहि बिधि होरी खेल हीं दैत सकल आनंद हो। 'गोविंद' बलि–बलि–बलि जाई जै–जै–जै गोकुलचंद हो।।

194 गौरी नागर नंद दा मैनु दै दै जाँदाँ गालियाँ। बोलीयाँ ठोलीयां कहि–कहि होलियाँ गावदाँ दै दै तालियाँ।। तकु दा फरदा सुधर सलौनियाँ सोहनी खेलनि बालियाँ। लखि ललचाई लबंद लावंदाँ।। चोली दे पिचकारियाँ।।2।। सानू अतर अंडियाँ बडियाँ चाखियां रति तालियाँ।। दिल डसि लेडियाँ सितम करे दियाँ जालिम जुल्फैं कालियाँ।।3।। मैने दी फौजे-बिच लावैदियाँ भौहें दे चल चालियाँ ।। रसिक सखी सौं हँसा मुख चुख लखि अखियाँ हौं दी सुखालियाँ।।4।।

195. मारू आज बन ठन ब्रज खेलन फाग निकस्यों नंद दुलारो।। फब्यो है ललित भाल लाल कें जटित लाल टिपारो।।1।। बडरे बंक बिसाल नयन छबि भरे इतराई।। बन्यो है मंजुल मोरचंद चलत देखत छांई।।2।। उत बनी ब्रज नवकिसोरी गोरी रूप ही भोरी।। बोरी प्रेम रंग में मानौ एक ही डार की तोरी।।3।। ब्रज की बाल लै गुलाल मोहनलाल छायै।। मानो नील घन के ऊपर अरून अंबर आयै।।4।। ताही धूंधर मद–मत्त भ्रमर भ्रमत ऐसे।। बनी है छबि बिसाल प्रेम जाल गोलक जैसें।।5।। बन्यो हें जल–जंत्र खेल छूटि रंग की धारें।। जानों धनुर्धर सरन लरत धार सों मारें।।6।। और कहाँ लगि कहिये खेल परम रस की मूली।। गावत सुक सारद नारद सिव समाधि भूली।।7।। जहीं–जहीं हरि चरित्र अमृत सिंधु सो रति मानी।। "नंददास" ता कों मुक्ति लौ को सो पानी।।8।।

196. बिहाग रसिक दोऊ खेलन लागे होरी।। उत तै निकसे नंद–नंदन इत बरसानें की गोरी।।1।। बाजत ताल मृदंग झांझ डफ मुरली मधुर ध्वनि थोरी।। गोपी ग्वाल सबें जुर आये भवन रह्यों नहीं कोरी।।2।। भवन–भवन तें भामिनि निकसी छिरकत चंदन रोरी।। बाजत बीन रबाव किन्नरी मन्मथ मान लज्यो री।।3।। भरत भांमते मदन गोपाले हो हो हो कर दौरी।। स्यामा स्याम की या छबि ऊपर सब डारत तृन तोरी।।4।। तारी दे ललितादिक भाखत भली बनी यह जोरी।। केसर और मँगाय बिबिध रंग दियों, सीस तें ढोरी।।5।। खेल मच्यो ब्रज–बीथिन–महीयाँ कुंज–कुंज वर–खोरी।। "मुरारीदास' प्रभु फगुवा दीयो, लोचन लगी ठगोरी।।9।।

197. बिहाग बरसाने की ग्वालिनी खेलति फागु बसंता हो। संक न मानें काहु की मात–पिता सुत कंता हो।।1।। चंद्रभगा चंद्रावली मधि नायक राजति राधा हो। सहज सुरूप सुहावनो सोभा सिंधु अगाधा हो।।2।। सकल साज सँग लै चली, आईं बट संकेत हो। पठई सखी एक आपुनी, नंद–कुँवर के हेत हो।।3।। चली सबे चतुर–सिरोमनि, और खेलन कों रस फाग हो। रसिक कुँवरि वृषभान की, तुम सों अति अनुराग हो।। 4।। रामकृष्ण हँसि यों कह्यौ, सुनो हो सखा श्रीदामा हो।। हम पें आईं सबै जुरीं, और तिन में अति भामा हो।।5।। बेगि चलौ सब ग्वाल लै, दिखावौ अपने हाथ हो। जैसें बहोरि न आव हीं, छाँडि आपुने साथ हो।।6।। अनंत अबीर गुलाल लै,

देह निसान धुराई हो। बोहोत कलस सौंधें भरे, कुंकुमा भरि पिचकाई हो।।7।। दल बादल ज्यों देखि कें, सन्मुख आईं धाई हो। मेघ घटा ज्यों बरखे ही हो, अद्भुत खेल मचाई हो।।8।। कमलनि लै–लै नवला सी, कुसुम गेंद करि मारी हो। मुरि भाजे बलि मोहना, हो–हो कहें ब्रजनारी हो।।9।। चंद्रावली जु बल गहे, स्याम गहे श्रीस्यामा हो। सखा गए सब भाजि के लियो है छिडाइ दमामा हो।।10।। संकरसन सौंधे भरे, स्याम भरे सुकुमारी हो। आनन सीस सॅवारि के, भेस बनायो नारी हो।।11।। रस बस भई ब्रज सुंदरी, लीला कहिय न जाई हो। 'चतुर्भुज' प्रभु इन बस कियो, गिरि गोवर्धनराई हो।।12।।

198 बिहाग होरी खेलत कुंवर कन्हाई।। चोवाचंदन अगर कुमकुमा धरणी कीच मचाई।।1।। अबीर गुलाल उड़ाय ललितादिक शोभा वरणी न जाई।। अरस परस छिरके जु स्याम को केसरि भरी पिचकाई।।2।। नख सिख अंग परम रूप माधुरी भूषण वसन बनाई।। गिरिवरधर की यह छबी निरखत 'कुंभनदास' बलि जाई।।

199. ईमन हम तुम मिली दोऊ खेलें होरी नव निकुंज में जैये। अबीर गुलाल कुमकुमा केसरि रंग परस्पर नैये।।1।। और सखी कोउ भेद न जानति ग्वालिनि हूँ न जनैये। 'परमानंद' स्वामी संग खेलत मन भावत सुख पैये।।2।।

200. ईमन लाग्यों रे, लाग्यो! मोसों होरी खेलन लाग्यो। जोबन मत्त कहाँ तू डोलत अबीर डार कित भाग्यो।।1।। नई खिलार खेल ताहीं सों जा के प्रेम–रस पाग्यो। कृष्णजीवन 'लछीराम' के प्रभु पिय सदा ही रहत अनुराग्यो।।2।।

201. ईमन माई होरी खेले कान्ह कुंजन में झुंड में या गोकुल के ग्वेंडे। ढीठ लवार कह्यो नहीं मानत वह पर्यो हे सबन के पेडें।।1।। कंचन की पिचकारी कर लिये डोलत अपने ऐंडे। कृष्णजीवन'लछीराम' के प्रभु पिय तोरत लाज की मेंडें।।2।।

202. ईमन भर मुठी डार गुलाल। लाल तुम खेलौ होरी। चौवा चंदन अरू अरगजा अबीर लिए भर झोरी।। 1।। बाजत ताल मृदंग अघौटी बीन बजावत ध्वनि थोरी। "सूरस्याम" रस बस कर लीनै राधा नवल किसोरी।।2।।

203. ईमन लाल रस माँते हो, खेलत डोलत फाग। संग लिए गोकुल के लरिका, बिबिध उड़ात पराग।।1।। कोऊ लिएँ पिचकारी, छिरकत कोऊ कुंकुम जल लाग। कोऊ अबीर गुलाल उड़ावत, मदन रूकायौ माँग।।2।। कोऊ मधुरे सुर बेनु बजाबत, कोऊ मिल गावत राग। "रसिक प्रीतम" प्यारी संग बिहरत, कंचन मिल्यौ है सुहाग।।3।।

204. हमीर खेलन आये हरि नंद–गाम ते रंग–भीने बरसानें। मृगमद भेद अरगजा चोवा सब नारी–नर सरसाने।।1।। दृग ढिंग छाँड माँड केसर मुख रीझत सुख सरसानें। बिन कारज, कारज कर राखे सोभित चख अरसानें।।2।। सोई अंजन विस ईसद लोचन चढे मदन खरसानें। कृष्णजीवन 'लछीराम' खेल लख लीये जलधर वानें।।3।।

205. हमीर अरी होरी खेलन जैये सांवरे सलोने सों। बड़े–बडे माट भराय केसर सों पिचकारिन छिरकैये।।1।। खेलत–खेलत रंग रह्यो अबीर गुलाल उडैये। 'नंददास' प्रभु होरी खेलत, आनन्द–सिंधु बढैये।।2।।

206. हमीर मो सों होरी खेलन आयो। लटपटी पाग अटपटे पेचन नैनन बीच सुहायो।।1।। डगर–डगर में बगर–बगर में सबहिन के मन भायो। 'आनंद' घन प्रभु कर दृग भींडत हँस हँस कंठ लगायो।।2।।

207 रायसों ऊँचौ सौ गोकुल गाँम जहँ हरि खेलति होरी।। चलौ सखी देखनि जाई पीया अपने कौं चोरी।।1।। बाजति ताल मृदंग और किन्नरी की जोरी।। इत गोपीन कौं झुंड उते हरि हलधर जोरी।।2।। बूका सुंरग गुलाल उड़ावति भरि भरि झोरी ।। गाबति दै दै गारि परसपर भाँमिनि भोरी ।।3।। नबल छबिले लाल तनी चोली की तोरी।। राधा जूचली रिसाई ढीठ सौं खलै को होरी।।4।। खेलन में कैसौ मान सुनौ बृषभानु किसोरी।। 'सूर' सखी उठ लाई हँसति भुज गहि झकझोरी।।5।।

208 रायसों निकसे खेलन होरी हलधर गिरिधरलाल।। सुबल सुबाहू श्रीदामासंग सखा ब्रजबाल।।1।। बन ठन बन ठन निकस चले यमुना के तीर।। चोवा चंदन मृगमद फेंटन भरे अबीर।।2।। करन कनक पिचकाई केसर भरी कमोर।। उडत गुलाल सुरंग रंग मानो उनयो घनघोर।।3।। गयो हे गुलाल ऊंचोचढ द्रुमभये सकलसुरंग।। बाजत भेरि दमामा आवज ताल मृदंग।।4।। सुन ग्वालिनि कोलाहल निकस चली ब्रजनारि।। झुंडन मिल आईं सबदेत भामती गारि।।5।। अचरा ओट पिचकारन मारत धारसोंधार।।6।। सिमिट सकल ब्रज सुंदरी कर गुलाल अंधियारी।। घेरले गई लाल कों ललिता भर अंकवारी।।7।। नयनन अंजन आंज कें मृदमंद मुख लपटाय।। हो हो होरी बोलत हँस कर ताल बजाय।।8।। स्यामा के नील बसन सों जोरत गांठ बनाय।। दोऊ हें अति सुंनद यों कहि लेत बलाय।।9।। छीनत मुरली कर तें एक लकुटिया छिनाय।। एक कहत तुम फगुवा देहु हमें बृजराय।।10।।

209. रायसों सकल कुंवर गौकुल के निकसे, खेलन फाग। हरि हलधर मध्य नायक अंतर अति अनुराग।।1।। ओलन बूका वंदन रोरी हरद गुलाल। बाजत मधुरे महुवर मुरली अरू डफ ताल।।2।। कनक कलस केसर भरे कांवर किंकर कंध। ओर कहाँ लग कहिये भाजन भरे हें सुगंध।।3।। हँसत हँसावत गावत छिरकत फिरत अबीर।। भीज लगे तन सोभित रंग–रंग रंजित चीर।।4।। फूलन की कर गेंदुक करत परस्पर मार। छूटत फेंट लटपटी बिखर परत घनसार।।5।। कोलाहल ग्वालन कौ सुन गोपिका अपार। टोलन–टोलन निकसी कर सोल्हे सिंगार।।6।। रूप माधुरी जिन की कबि पैं बरनी न जाय। तिन्हे सची रती रंभा पग हू परत लजाय।।7।। अति–सरस–स्वर गावत कौऊ झील कौऊ घोर। तिन्हे सुन्यौ नहीं भावत बीना नाद–कठोर।।8।। ललित गली गोकुल की हौत बिबिध बिध कैल। अगर सहित कुंकुम की चली धरनी पर रेल।।9।। गयो गुलाल गगन चढ भये सुर सदन सुरंग। मानो खुर खेर उड़ी है सेना सजी अनंग।।10।। बन्यों बनिता वदन पर कृष्णागर कौ पंक। परिपूरन चंदन ते मानौ च्वै–च्वै चल्यौ कलंक।।11।। छिरकत हरि ना–ना–रंग सोभित गोपिन गात। मानो उमग्यो अंतर तें अँचल प्रेम चुचात।।12।। बोले ग्वाल बराती हमारे हरि कौ ब्याह।। दुलहनि गोप–किसोरी। मोहन सब को नाह।।13।। यह सुन गोपी कोपी हलधर पकरे जाये। अंजन दै दृग छाँडे मृगमद मुख लपटाय।।14।। बहोरि सिमिट सब सुंदरी घेरे मदन गोपाल। कनक कदली मंडल में सोभित तरून तमाल।।15।। तब बृषभान किसोरी हरि भर लीने अंक। कही न जात ता सुख की मानौ निधि पाई रंक।।16।। बरन न सके कौ हरि के अगनित चरित्र बिचित्र। जिहीं तिहीं भाँत "गदाधर" रसना करों पवित्र।।17।।

210 रायसों मिल जु डंडा रस खेलहीं नंदराय जू की पोर।।आनंदसों मनभर रह्यौ नवल किशोरी किशोर।।1।। लटकत फिरत रगमगे इत गोपी उत ग्वाल।। मानो छुटी मदन की मत्तगजन की ढाल।।2।। गारी देत सुहावनी इत सब गोपिका नार।। उत सब होलें बोलें बालक नंदकुमार ।।3।। बाजे बहुविध बाजें ताल मृदंग उपंग।। झांझ झालर किन्नरी मुरली उफ मुख चंग।।4।। चोवा चंदन छिरकहीं अबीर गुलाल सुरंग।। खेल खेल गह गह्यो लाडली लालन संग।।5।। मृगमद केसर घोर कें लीने कर लपटाय।। ओचका आवत दूर तें भाजत मुखहि लगाय।।6।। तब बृषभान दुलारी पकरे मदन गोपाल।। मानो कंचन बेली लपटी स्याम तमाल।।7।। झूमर ही चहुंदिशते नेंक न

राखत लाज।। मानो भूतल उदयो नक्षत्र सहित उडुराज।।8।। काजर लोचन आंज कें
कटिपट लेंहि उतार।। आलिंगन पियदेत हें ये सब ब्रज की नार।।9।। गिरिधर अधर
सुधा कों कोऊ पीवत न अघाय।। हा हा खाउतो छांडें प्यारी को सिरनाय ।।10।।
झटकत गहि मोतिन लर बूझत चिबुक उठाय।। मन मान्यों फगुवा लियो पीतांबर दियो
आय।।11।। श्रीगोकुलगाम सुहावनों कीनी बहुविध केलि।। चिरजीयो दूल्हे दुलहनि
मिल मन्मथ दलपेलि।।12।। सिमिट सकल ब्रजवासी सूरसुता चले न्हान।। विमलबसन
तन पहरे देत बिप्र न बहुदान।।13।। कुसुम वृष्टि सुरपति करें लीला देखें आय।।
श्रीवल्लभचरण प्रतापते 'कृष्णदास' मुखगाय।।14।।

211 रायसों खेलन कों स्यामाजु चली गिरिधर पियपास।। नवसत साज सिंगारहीं
चंदमुखी मृदुहास।।1।।सखी जुरी चहुंदिशतें लेखेलन को साज।। ज्यों करिणी मदमाती
ढूंढत मद गजराज।।2।। बीन रबाव किन्नरी बाजत मृदंग सुचंग।। ललितादिक मध्य
स्यामा गावत सब मिल संग।।3।। श्रवण सुनत गिरिधर पिय श्रीस्यामा को राग।।
अंकभरे प्यारी को लूटत परम सुहाग।।4।। करसों करजोरे बैठे कुंज कुटीर।। ललित
लता गुच्छन में बोलत मधुकर कीर।।5।। केसर मृगमद रोरी सुरंग गुलाल अबीर।।
पियप्यारी मिल खेलत छिरकत चंदन नीर।।6।। बीरी खात खवावतहरखतमुख हसदेत।।
आलिंगन अति रससों कंठ भुजा भरलेत।।7।। कुंञ्ज महल में क्रीडत दंपति अतिसुखरास।।
यहलीला नितगावे अतिबडभागी दास।।8।।

212 रायसों होरी कौ सुख अद्भुत मौपे बरन्यौ न जाई।। अति आनंद हुलसति
मन प्रेम परसपर छाई।।1।। जुरि सब ब्रजनारी आई।। ग्वाल बाल नँदलाल जुमन में
सब सुखपाई ।।2।। अबीर गुलाल अरगजा कुँमकुमा छिरकै रँग ।। कुंज कुटीर में बैठे
राधा गिरिधर सँग।।3।। ललिता श्रीमुख माँड़े अंजन नैन बनाई।। तारी दै सब नारी मुख
सौं होरी गाई।।4।। राधाप्यारी दुलहिनि दुल्हे नंदकुमार।। सीस सेहरौ सोहै छबि लागति
जु अपार।।5।। गारी गावैं हिलमिल बरसाने की नारी।। बाजे बहु बिधि बाजैं सब मिलि
दै कर तारी।।6।। करसौं कर तब जोरे फिरि भाँवर लेति।। अँचल ले दोऊन के गाँठि
सबै मिलि देति।।7।। आरतो कर ललिता जु सुख सौं मंगल गाई।। देति असीस सबै
मिलि 'सूरदास' बलि जाई।।8।।

213 जेतश्री फागु खेलै राधा गोरी श्रीबृषभानु जु की पौरि हो।। नंदलाल बृषभानु नँदनी भलीबनी यह जोरी हो।।1।। चारु, अबीर, गुलाल, लसत तन, बिच बिच राजति रोरी हो।। झख करदम हरि रहसि भरै तब, केसर कुँमकुम घोरी हो।।2।। तन सुख चारु छींट छिरकति तन, डगमगात डोरी हो।। अंचल पट सोभित ऊरु कुच पै उपमा श्रीफल कोरी हो।।3।। स्याम सुभग के बाम अंसपै राजति नवलकिसोरी हो।। नूपुर रुनति कुनित कटि मेखला निरखि मदन मति भोरी हो।।4।। रीझि-रीझि तब 'रसिक राई' कौं मृदु मुसिकनि मुख मोरी हो।। प्रेम गाँठि परि जू परसपर छुटत नहिं क्यौं हुं छोरी हो।।5।।

214. जेतश्री ऋतु बसंत के आगम हो ! प्रचुर मदन कौ जोर। कैलि रस-झूम करा ।। राधा गोरी सुंदरी हों । सुँदर नंदकिसोर केलि० ।।1।। झुंडन मिलि गावति चली हों ! झूमक नंद के द्वार।। नृत्य करें ब्रज-सुंदरी हों ! मोहि लियौ मन मार ।।2।। बिपिन गली सुंदर बनी हों! ललित लवंगनि मेली । अंब मनोहर मौरिया हों ! करनि केतकी बेलि ।।3।। गोकुल गाँउ सुहावनौ हौं ! बृदाबन कौ ठोर। खेल हिं ग्वालन ग्वालिनी हो! रसिक कान्ह सिरमौर ।।4।। एक गोरी एक साँवरी हो ! एक चँद बदन सोहै बाल । एकनि कुंडल जगमगे एकनि तिलक सुभाल ।।5।। एकनि चोली अध खुली हो! एक रही बँद छुटि।। एक अलकावली उर डोलैं हो! एक रही लटे टूटि ।।6।। एकनि चीर जु खसि परे हों! एकनि लरकत लूमि । एक अधर रस घूंटि ही हों ! एक रही कंठ झूमि ।।7।। ताल पखावज बाज रह्यों हों! बीना बेनु रसाल । महुबरि-चंग जु बाँसुरी बजावत गिरिधरलाल।।8।। चोवा चंदन कुंकुमा हो ! उडत गुलाल-अबीर। सुर-नर मुनि-जन मोहियो हों! व्योम विमाननि भीर।।9।। सुरति समागम रस रह्यों हों! मानहु महा-गज-मंत। "परमानंद" प्रभु श्रीपति हों ! रसिक राधिका-कंत।।10।।

215. जेतश्री खेलत फागु संग मिलि दोऊ। आनंद भरि पिय प्यारी हो। नवल किसोर रसिक नंद नंदन। इत वृषभानु-दुलारी हो।।1।। नव रितुराज लता द्रुम फूले, बरन-बरन छबि न्यारी हो। गुंजत मधुप कीर पिक कुंजत, स्रवन सुनत सुखकारी हो।।2।। तैसेइ सुभग गौर सॉबल तन, बनी जोट इक सारी हो। कमल नैन पर बूका मेलत, हँसि सकुचति सुकुमारी हो।।3।। भरि अरगजा कनक पिचकाई, धाई सब ब्रजनारी हो।। भरत भॉव ते मदन गोपालै, बढ्यौ रंग अति भारी हो।। 4।। बहुर्यो मिलि दस पाँच सखी, गोविंद भरे अँकबारी हो।।

चोवा चंदन अगर कुंकुमा दियो शीश तें ढारी हो।।5।। प्रेम मगन मोहन मुख निरखत, तन सब दसा बिसारी हो।। 'चतुर्भुज' प्रभु सुर नर मुनि मोहे, गुन–निधान गिरिधारी हो।।6।।

216 जेतश्री नंदन कुंवर खेलत राधा संग जमुना पुलिन सरस रंग होरी।। नव घन स्याम मनोहर राजत स्यामा सुभग तन दामिनी गोरी।।1।। केसरि रंग कलस भरे बहु संगसखा हलधर की जोरी।। हाथन लिये कनिक पिचकाई छिरकीं ब्रजकी नवल किसोरी।।2।। चीर अबीर उडावत नाचत कटिसों बांधि गुलाल की झोरी।। मगन भई क्रीडत सब सुंदरी प्रेम समुद्र तरंग झकोरी।।3।। बाजत चंग मृदंग अघोटी पटह झांझ झालरि सुर घोरी।। ताल रवाब मुरलि का बीना मधुर शब्द उघटत धुनि थोरी ।।4।। अति अनुराग बढ्यो तिहिं ओसर कुल लज्या मर्यादा तोरी।। मदन गुपाल लाल संग बिहरत देहदसा भूली भई बोरी ।।5।। एक गहत फेंटा फगुवा कों एक करत ठाडी जुठ ठोरी।। एकजु आंखि आंजि कें भाजी एक बिलोकिहंसी मुख मोरी।।6।। एकन लई छिनाय मुरलिका देति गारि मोहन कों भोरी ।। एक फुलेल अरगजा चोवा कुंकुम रस गागरि सिर ढोरी।।7।। विविध भांति फूल्यो बृंदावन कूंजत कीर खट पद पिकमोरी।। निरखत नेहभरी अंखियांसो यों चितबत निस चंद चकोरी।।8।। थके देव किन्नर मुनिगन सब मनमथ निजमन गयो लज्योरी।। 'परमानंददास' या सुख कों जाचत विमल मुक्ति पद छोरी।।9।।

217. जेजेवंती माई आज तो मोहन संग रंग–भरी खेलोंगी।। लोक लाज पायन सों पिछोंडो पेलौगी।।1।। निंदरोंगी आरज पंथ का हू तै न डरोंगी।। निधरक अंकबार पिया कों भरोंगी।।2।। केसर के रंग छिरक रंगीलो करोंगी।। बेसरि मोती काजें फगुवा कों अरोंगी।।3।। ललित त्रिभंगी रस ढरन ढरोंगी।। रति पति रण "ब्रजपति" सो लरोंगी।।4।।

218. जेजेवंती होरी खेलन आई आज हो–हो हो–हो होरी सरसानी मधुबन की नारी।। अपने पतिन तज–तज धांई।।1।। घेर लयो गोकुल चहूं ओर ते हरि पकरवे की लोह लगाई।। ग्वाल बाल सब भये हें दुचिते ललिता गहि हलधर जु कौ लाईं।।2।। आतुर बस जब भये लाल जु भूल गये सब ही चतुराई।। ऐसी मार परी है परस्पर नंद पौरि जमुनां तांई।।3।। फेंट पकर कौऊ फगुवा मांगत कौऊ बंदन रोरी ले धाई।। अंचल की ढाल मुख ऊपर नयन थकी सैनन बान चलाई।।4।। नव–सत साज चली सजनी सब मानो छूटे गज गहे हें लुगाई।। "सूरदास" हलधर दौऊ रोके लगहु गुहार गोपाल गुसांई।।5।।

219 नायकी होरी रंग भर गावें सोई खिलार डफ लिये बजावें।। गाय गाय के रंग उपजावे जोई रीझे ताकों फेर सुनावे।।1।। सबे अरगजे मरगजे बागे नयन सेन दे रस उपजावे।। कहियत नायक दक्षण–लक्षण आप गदाधर नाम कहावे।।2।।

220 नायकी लाल गुलाल की मार रस भरे खेलत हरि होरी।। रत्न खचित पिचकाई सोंधे भर छिरकत नवल किशोरी।।1।। ललिता मोहन को मुख मांड्यो केसर सोंपट बोरी।। बिचित्र बिहारो बिहारिण परस्पर आनंद सिंधु झकोरी।।2।।

221. नायकी तुम बिन खेंल न रूचे लगार सुन्दर यार हो तुम हो सुघर खिलवार।। नारी सब मिल गावत आवत पिचकारीन की मार।।1।। द्वार–द्वार फगुवा के कारन रोक रहत ब्रजनार।। अंतर्यामी आनंददाता "सूर" प्रभु नंदकुमार।।2।।

222. नायकी ब्रज में खेले री धमार मोहन प्यारो री नंद को। संग बनी रस ओपी गोपी कह्यो न परत कछु बाढयो या सुख–सिन्धु उडुचंद को।।1।। बाजत ताल मृदंग उपंग किन्नरी ऊपर बाढ्यों सुख आनन्द को। 'नंन्ददास' प्रभु प्यारे कौतुक देखत ओर सोभा गिरिधर मेन फंद को।।2।।

223. नायकी नारी गारी दै गई वे माई हो–हो होरी आई। मदनमोहन पिय बांसुरी बजाई, श्रवन सुनत, गृह तज जुर धाई।।1।। चन्द्रावली अंजन लै आई, पकर मोहन जु की आँख अंजाई। फगुवा बिन दीयें, कैसे जै हो, 'धोंधी' के प्रभु कुंवर कन्हाई।।2।।

224. नट खेलत गिरिधरन लाल, परम मुदित ग्वाल बाल, इत बनी ब्रज नारी नवल, होरी बोलना।। गावत नट नारायन रागु, जुवती जन खेलत फागु, गारी देति गोप कुँवरि करि कलोलना।।1।। बीना बेनु तान तरंग, बाजत मधुर मृदंग, भेरी महुवरि डफ झाँझि ढोलना।। केसरि कुंमकुमा सुरंग, पिचकाई भरि–भरि तरंग, ब्रज जुवतीनि छिरकि, मिलि ब्रज टोलना।।2।। मोहन कों पकरि लै हु, फगुहा मिस फेंट गहु, माँडत मुख रोरी, घोरि करि कपोलना।। 'चतुर्भुज' प्रभु फगुवा दियो, राधा जू को भायो कियो, पीतांबर खेंचि लियो, करि झँझोरना।।3।।

225 अडानो खेलत हें ब्रज में हरी होरी।। ग्वाल बाल ललना संग लीने देत कूंक मिलब्रज की खोरी।।1।। अरगजा वाद कुंकुमा केसर चंदन वंदन रोरी।। सरस फुलेल अबीर अरगजा सुरंग गुलाल लियें भर झोरी।।2।। सुर मंडल मुखचंग पखावज विच मुरली मधुर ध्वनि थोरी।। श्रवण सुनत आईं ब्रज सुंदरि संग लियें वृषभान किशोरी।।3।। गावत फाग राग केदारों नाचत रंग भरे दुहुं ओरी।। तिहिं अवसर पकरे श्रीदामा आंजत नयन कहत हो होरी।।4।। रत्न जटित आभूषण अंबर और दई हंस पीत पिछोरी ।। देत असीस चलीं सब गोपी नंद सुवन युग युग जीवोरी।।5।। कुसुमन वृष्टि करत इंद्रादिक आये खेल फेर सिंघ पौरी ।। गोकुल नाथ वारत तन मन धन बल बल बल बल की नोरी।।6।।

226 अडानो ए नैना नैननि सौं खेलै होरी।। लाल लाड़िली गुलाल उड़ावति पलकन की करि झोरी।।1।। ऊघरत, मूँदत मुठि चलावति, कर-कर बैनन चोरी।। 'हरिबल्लभ' प्रभु खेलैं होरी आनंद सिंघु झकोरी।।2।।

227 अडानो खेलै-खेलै मोहन कुंज गली।। रँग-रंगीली बृषभानु सुता सँग राजति बहुत अली।।1।। ताल मृदंग बाँसुरी बीना मधुरे मिलि बजावति चली।। तैसो ही सुर गावति सब सुंदरि रंग-रंग रली।।2।। कर गुलाल राधे जब छिरकति सोभित मानौं कमल कली।। कुंज बिहारी जू अरगजा केसर छिरकी भाँति भली।।3।। सर सरिता खग मृग मुनि मोहे सबहिन अपनी गति बदली।। गुन रूप पिय प्यारी को मुख निरखति हैं सगली।।4।।

228 अडानो नवरंग पिय नवरंग प्यारी सौं बनि - ठनि हिलमिलि खैलैं फाग।। नवरँग पीत-बसन नवरँग कटि किंकिनी नवरंग लाल सिर बनी है पाग।।1।। नवरँग सखा संग बजावत ताल मृदंग, नवरँगराधिका ठाढ़ी है बाम भाग।। 'नँददास' प्रभु छाँटति छिरकति रस भरे गावैं अडानौ राग।।2।।

229. गौरी गोरी गोरी गुजरिया भोरी सी तैं मोहें, नँदलाल। खेलत में हो हो जु मंत्र पढि डार्यो तैं जु गुलाल।।1।। तेरी सौधें सनि अँगिया उरजनि पर अरू कटि लँहगा लाल। उघरि जात कबहुँक चलत में जेहरि ढिंग एडी लाल।।2।। तू सकल त्रियन में यों राजत हैं ज्यों मोतियनि में लाल। दास 'चतुर्भुज' को प्रभु मोह्यो अधर सुधा रस लाल।।3।।

230. गौरी राधा रसिक कुंजबिहारी। खेलें फाग सब जुवती–जन कहें हो–हो होरी।।1।। भरत परस्पर काहू की काहू न सुध ऐसें कैसें मन हरत मोहन जोरी। कर सों कर ही जोर कर कटि सों कटि ही मोरी नृत्यत कान काहू न सुध थोरी।।2।। 'हरिदास' के स्वामी स्यामा कुंजबिहारी फिरत न्यारी–न्यारी। सब सखियन की दृष्टि बचावत चमकत तब थोरी।।3।।

231. गौरी ऋतु बसंत सुख खेलियें हो आयौ फागुन मास।। होरी डांडो रोपियो सब बृज जन मन उल्लास।। गोकुल के राजा।।1।। रजनी मुख बृज आइयौ गौधन खरिक मंझार।। सखा नाम सब बोल के, घर–घर तै दै तब गार।। बड़े गोप वृषभान के आयै सब मिल पौरि।। श्रवन सुनत प्यारी राधिका चढ़ी चित्र सारी दौरि।।3।। उझखि झरोखा झाँकियो दौऊन मन आनंद। ऐसी छबि तब लागियो मानौ निकस्यौ घटा तै चंद ।। 4।। बासर खेल मचाईयो नेरै आयौ फाग।। झूमक चेतव गाव ही मनमोहन गोरी राग ।। 5।। नर नारी एकत्र भए घोषराई दरबार।। चहुं–दिस तै सब दौरियो भूसन बसन सिंगार ।। 6।। अगनित बाजे बाज हीं रूज मुरज निसान।। डफ दुंदुभी अरू झांलरी कछु बन सुनियत कान।। 7।। पिचकाई कर कनक की अरगजा कुंकुम घोर।। प्राण–पिया कौ छिरक ही तक–तक नवल किसोर ।। 8।। बहुरि सखा, सब दोरियौ आगे दै बलबीर।। जुवती–जन पर बरख हीं नवल गुलाल अबीर ।। 9।। ललिता विसाखा मतो मत्यो लीनौ सुबल बुलाय।। चेरी तेरै बाप की नेंक मोहन को पकराय।।10।। तबै सुबल कौतुक रच्यो, सुनों सखा एक बात। इन्हें भीतर जान देहु बोलत जसोदा मात।। 11।। हरे–हरे सब रेंगि चली, नेरे निकसी आय।। सैन सबें दै दौरियौ पकरै बल मोहन जाय।। 12।। प्यारी कौ अंचल लियो अरू पिय कौ पट–पीत।। सकत ही गठ–जोरो कियौ भले बने दौऊ मीत।। 13।। फगुवा में मुरली लई अरू कंठ कौ हार। श्रीराधा कौ पहराईयो हँसत दै–दै करतार।। 14।। मेवा मोल मंगाइयौ फगुवा दियौ निवेर।। मन भायौ कर छांडियो हँसत वदन तन हैर।।15।। यह बिधि हौरी खेल ही ब्रज–वासिन संग लगाय।। जुगल कुंवर के रूप पै जन "गोविंद" बल–बल जाय।।6।।

232. गौरी सब दिन तुम ब्रज में रहो, हरी होरी है। कबंहु न मथुरा जाओ, अहौ, हरि होरी है। परब करो घर आपनै। कुशल केलि निबाहो।।1।। परिवा पिय चलिये नहीं। सब सुख को फलफाग। प्रगट करो अब आपनौ। अंतर को अनुराग।। 2।। मानौ द्विज दिन शौध के भूपति कियौ काम। ससि–रेखा सिर तिलक दै सब कौऊ करै प्रणाम।।3।। कनक सिंघासन बैठ के। जुवतिन के उर आन। अलक चमर अंचल ध्वजा। घूंघट आतप तान।। 4।। फागुन मदन महीपति। इहि बिधि करहै राज। पंद्रह तिथि भर वरण हू। सादर कियो समाज।।5।। तीज तिहु पुर प्रगटियौ। अपनी आन नरेस। सुन मग–मग डफ दुंदुभी। सौई करिये सब देस।। 6।। चौथ चहु दिस चाहिये। यह अपनी एक रीति। मेरै गुन कहि निर्लज्ज ह्वै छाँड सकुच कुल नीति।।7।। पाँचे परमित परहरौ। चलहु सकल इक चाल। नार पुरूष एकत्र करौ। बचन प्रीति प्रीतिपाल।।8।। छटि छे राग छे रागिणी। ताल तान बंधान चपल चरित्र रतिनाथ कै। सिखवौ अति अभिधान ।।9।। सातें सुन सब सज चले। राजा की रूचि न जान। करत क्रिया जैसौ सबै। आयुस माथै मान।।10।। आठ डर उनमान कै। सबन मतौ मत्यौ एक। नृप जौ कहै सौई कीजिये। क्यों राखिये विवेक।। 11।। नवमी नव सत साज कै। कर सुगंध उपहार। मानौ चले मिल मेर के। मनसिज भवन जुहार।। 12।। दसें दसो दिश सोधि के। बोले राजा राय। जग जीत्यौ बल आपने। ज्ञान वैराग्य छुडाय।। 13।। सुन आई एकादशी। बोले सब सिर नाँय। ढोल भेर डफ बांसुरी पटह निसान बजाय।। 14।। देख भले भटू आपने। द्वादसी द्योस बिचार। काज करौ रूच आपनै। व्है निसंक नरनार।।15।। रथ रावक पावक सजै। खरन भयै असवार। धूर धातु घट रंग भरे। करन यंत्र हथियार ।। 16।। जहाँ तहाँ साने चली। मुक्त कच्छ सिर केस। आप आप सूझें नहीं राजा रंक आवेस।।17।। जहाँ सुनत तप संयमी। धर्मधीर आचार। छिरके जाय निसंक व्है। दौरे पकर किवार ।।18।। जै कबहु देखी नही। कबहु सुनी नही कान। तिन कुल बधू नारिन कै। लागू पुरूष पराण।।19।। धाय धरे बल कुल बधू। पर पुरूष नहि पहेचान। मात पिता पति बंधु की। छूट गई सब कान।।20।। भस्म भरे अंजर करे। छिरकत चंदन बार। मर्यादा राखे नहीं। कटि पट लै हि

उतार।। 21।। तेरस चोदस मास में। जग जीत्यौ डर डार। शठ पंडित बृज बधू। सब ही लये एक–सार।। 22।। पून्यौ प्रगट प्रताप ते। दुरे मिले पालाग जहाँ तहाँ होरी लगी मानौ मवासिन आग।। 23।। सब नाचै गावै सबें। सबै उडावै छार। साधु असाधु न पेख हौ। बोले बचन बिकार।।24।। अति अनीत मति देखि कै परिवा प्रगटी आन। बिमल बसन जो स्याम कौ मर्यादा की कान।। 25।। आबत ही बिनति करी उठ जोरे हँस हाथ। वर्ण धर्म सब राखिये। कृपा करहु रतिनाथ।। 26।। आज्ञा दई रतिनाथ ने। नृप समुझ यौ मन माँह। जाय धर्म अपुने चलो। बसो हमारी बाँह।।27।। "सूर" कहाँ लगि बरणिये मनसिज कें गुन ग्राम। सुनो स्याम यह मास में कियो जु कारन काम।। 28।। कान्ह कृपा कर घर रहे। बरजै मथुरा जात।। सरस "रसिक" मनि राधिका। कही कृष्ण सों बात।। 29।।

233. गौरी छैल छबीलौ ढोटा रस भर्यो बाकी चितवनि भ्रोंह मरोर।। खेलन मैं बहु छंद–फंद कर ले जु गयौ चितचोर।।1।। अरी वह बन–बन आवे बेनु बजावें गावे चटक मटक की गार।। हो–हो बोले गलियन डोले, हँसत सखा किलकार।।2।। हौ ठाडी अपने द्वारे भोरें थोरो सो घूंघटमार।। आंखिन मांझ गुलाल मुठी भर गयो अचानक डार।।3।। वाके बडरे नैना मधुरे बैना कह्यौ कछुक मुसिकाय।। "श्रीविट्ठल" गिरिधरन गये मेरे हिय रे चटक लगाय।।4।।

234. गौरी सब बृजकुल के राई लाल मनमोहनां। मन मोहनां निकसे हैं खेलन फागु लाल मन मोहनां।। नवल कुँवर खेलन चले। मन० ।मुदित सखा संग।।लाल०।।स्याम अंग भूषन सजे। मन०। बिमल बसन पहराई।।लाला०।। निकसि द्वार ठाढे भये। मन०। मुरली मधुर बजाय।। श्रवन सुनत सब बृज वधू।। जहाँ तहाँ तें चली धाई।।. .।। बिबिध भाँति बाजे बजे। मन०। ताल मृदंग उपंग।।.।। रूंज मुरज डफ दुंदुभी। मन०। कर कठताल सुरंग।।.।।जुवती जूथ मिलि धाइयो। मन०। भरि पिचकाई हाथ।। .।। चहुँ दिस तें वे छिरकहीं। मन०। भरत कुँवर गोपीनाथ।।.।। बहुरि सखा सनमुख भए। मन०। आगे दे बल बीर ।। ..।। जुवती जन पर बरस हीं। मन०। कुंकुम सुरँग अबीर।।..।। बहुरि सिमिटि

बृज सुंदरी। मन०। मोहन लीने घेरी।। ..।। एक मुरली ले भजी। मन०। एक कहे देहुँ फेर।। ..।। एक पीत पट गहि रही। मन०। फगुवा देहुँ कुँवर।।..।। ऐसे हम न पतीज हीं। मन०। गहने देहु मोती हार।। ..।। ललिता ललित बचन कहें। मन०। तुम सुनो हो गोकुल के राई।। तों हम तुम कों जान दे हिं। मन०। प्यारी राधा कों सिरनाइ।। प्यारी कर काजर लियो। मन०। आँजे पिय के नैंन।।..।। अंचल पट मुख दे हँसी।मन०। मिलवति कर दे सेंन।।ला०।। आलस अरून अति रसमसे। मन०।अंजन खरेई बिराज।।.।। जुगल कमल कर मुकुलित। मन०। मानो बैठे जुगल अलिराज।। अति रस भरी ब्रज सुंदरी। मन०। कछु न अंगन संभार. .।। खसियत बलय कटि किंकनी। मन०। पिय सँग करत बिहार।। .।। कुच पर कच लर बिलुलिता। मन०। लागत परम सुदेस।।. .।। मानों भुजंगम चहुँ दिसा। मन०। आए अमृत पीवत रस केस।। इहि बिधि सब मिल खेल हीं। मन०। गावत गोरी राग।। . .।। नवल कुँवर पर अति बढ्यो। मन०। प्रति दिन नव अनुरागु।। जुवती जूथ मिलि उलटियो। मन०।अपने–अपने टोल।। . .।। पिय मुख देखत फूल हीं। मन०। प्रमुदित लोचन लोल।। . .।। इहि बिधि होरी खेल ही। मन०। ब्रज जन संग लगाई।। . . .।। घोष नृपति सुत बदन की। मन०। 'गोविन्द' बलि–बलि जाइ।। . . .।।

235. गौरी गोकुल–राई–कुमार कमल दल लोचना। ठाढे सिंघ द्वार कमल दल लोचना।। नख सिख भेषु बनाइ, कमल०, सुंदरता अति चारू कमल०।। रसमसे नँद किसोर निकसे खेलन फागु, मधुर बेनु कर में धरें गावत गौरी राग।।1।। आए ब्रज के चौहटें लियें सखा सब संग। नव भूसन नव बसन सोहत साँवल अंग।। उपमा कहीं न जाई सुंदर मुख आनंद। बालक वृंद नच्छत्र प्रगटे पूरन चंद।।2।। बाजत ताल मृदंग आवज डफ मुख चंग। मदन भेरि सुर बीन गिडि–गिडी झाँझि उपंग।।3।। श्रवन सुनत चली दौरि गृह–गृह तें ब्रजनारि। तिन में परम सुदेस श्रीराधा अति सुकुमारि।।4।। बने चीर आभरन सब तन बिबिध सिंगार। कंकन अरू किंकिनी उर गज–मोतिन हार।।5।। नक बेसरि ताटंक कंठसिरी अनुभाँति। चौकी बनी जराई दूरि करत रवि–कांति।।6।। सेंदुर

तिलक तँबोल खुटिला बने बिसेख। सोहति केसरि–आड कुंकुम काजर रेख।।7।। प्रफुल्लित आनँद भयो चितवत हरिमुख ओर। मनु बिधु प्रीतम मिल्यौ सादर चारू चकोर।।8।। नैन रूप रस भरे बारंबार निहारि। गाव–हिं झूमकि चेत बीच सुहाई गारि।।9।। चोबा चंदन अरगजा सौंधे सजे अनेक। पिचकाँई कर लिये धाईं एक तें एक।।10।। अति भरि बाँधी फेंटि सुरंग अबीर गुलाल। दुहुँ दिसि माच्यौ खेल इत गोपी उत ग्वाल।।11।। नर नारिन परी चोख छिरकत तकि–तकि छेह। भरत भई अति भीर मानहुँ बरसत मेह।।12।। बरन–बरन भए बसन अंगनि रहे लपटाई। क्रिडा रस बस मगन आनँद उर न समाई।। 3।। ब्रज–जिवुतिनु मतौ मत्यौ मुख न जनावति बैन। पकरि नेंकु घनस्याम मिलवति इत उत सैन।।14।। जुवति–जूथ दल पेलि दीने सखा भजाई। कहति कहा मतु कर हि, अब तो कछु न सुहाई।।15।। कहत न बाँचे कछू बचन गारि अरू गीत। झुंडनि जुरि चहुँ ओर जाइ गह्यौ पट–पीत।।16।। नवल कुँवरि जानियें अब जो मुरली लेहु। राधा हि कर हु जुहार हमारौ फगुवा दे हु।।17।। फगुवा देहु, न देहु, छाँड हु ओर उपाई। हमारौ भायो कर हु छूटौ माथौ नाई।।18।। प्यारी पिय सों कह्यौ अति मीठे मृदु बोल। काजर आँजे नैन रोरी हरद कपोल।।19।। मुख माँडे छबि भई कोटि मदन सिरताज। त्रिभुवन सौभग लिए मानों ब्याहन आयो आजु।।20।। कीरति अविचल रही जुग–जुग इहि ब्रजवास। श्रीगिरिधर कौ जसु गान नित करहु 'चतुर्भुजदास'।।

236. गौरी होरी खेलनि को चले रंग भीने हो। सुंदर मदन गुपाल। लाल रंग भींने हो। आगें दै बलबीर। करति कुलाहल ग्वाला।। लाल०।।1।। बाजे बहु बिधि बाज हीं। जंत्र पखाबज ताल। रूंज मुरज ढ़फ दुंदुभि। बिच–बिच वेणु रसाल।।2।। श्रवण सुनत सब ब्रज बधू। घर–घर तैं उठि धाई। मुख्य जु राधा लाड़िली। गावति गारि सुहाई।।3।। सनमुख आबैं हुलसि कैं। केसर भरि पिचकाई। प्रान–पिया कौं छिरकि हीं। बदन मोरि मुसिकाई।।4।। जुवती जूथ पै थिरकि ही। सुरंग गुलाल अबीर। चौंक परैं सब खेलि हीं। भरति परसपर भीर।।5।। हो–हो होरी बोलि हीं। नाचे दै कर तारि। चहुं दिस तैं बे छिरकि हीं। करि जु अरगजा वारि।।6।। तब ललिता चंद्रावली। गहि लीनें घनस्याम। नैन आँजि मुख मांड़ कैं। झटकति गहि बन दाम।।7।। लै उठाइ भरि अंक में प्रेम आलिंगन दे हि।। एक अधर रस घूंट ही। एकु जु चुंबन लेहि।।8।। एक जु पान

खवाव हीं। एक जु लेहि उगार। भुज भरि राखैं पीय कौं।। हा–हा खाहु कुमार।।9।। हंसि–हंसि चिबुक उठाब हीं। दुलरी लींनी खोल। कै बल छूटो आपुनौ। कै ब्रजराजै बोल।।10।। यौं गिरिधर संग खेलि हीं।। बाढ्यौ उर आनंद। हेरैं नैन चकोर ज्यौं। पिय मुख पूरन चंद।।11।। मन भायौ फगुवा लियौ। अंबर मोतिन माल। बारैं सरबसु वारनैं। बलि–बलि "दास" गुपाल।।12।।

237. गौरी ढोटा दोऊ राई के खेलत डोलत फागु हो। लालै जो देखै सो मोहियो और प्रति छिनु नव अनुरागु हो।।1।। सखा संग सब बोलि कें घर–घर तें देतऽब गारि हो। सुनत कुँवर कोलाहल निकसीं घोख कुँवारि हो।।2।। भूसन बसन जु साजियो अरू गज मोतिनि के हार हो। झूमक चेतव गाव हीं हो घोखराइ दरबार हो।।3।। बाजे बहोत बजाव हीं डफ दुंदुभी कठताल हो। बलि मोहन मधि नाइका चहुँ दिसि नाचत ग्वाल हो।।4।। पिचकाई कर कनक की हो अरगजा कुंकम घोरी हो। बलराम कृष्ण को छिरक हीं हो हँसिऽब चली मुख मोरी हो।।5।। कोलाहल सुनि आइयो हो श्रीवल्लभ सिरताज हो। सिंघ–द्वार पै बैठियो बडरे गोप समाज हो।।6।। ब्रज–रानी तहाँ आइयो हो जहाँ बैठे नंद उपनंद हो। सोंधे ठाढी लीपियो आँजत आंखि सुछंद हो।।7।। इहि बिधि होरी खेल हीं अरगजा एक सुगंध हो। बिधि सों होरी लगाइयो पून्यो पूरन चंद हो।।8।। परिबा बसन जु साजियो न्हाहि धोहि आनंदा हो। 'गोविन्द' बलि बंदन करें जै–जै गोकुल के चंदा हो।।9।।

238 बधाई गौरी श्रीवल्लभ कुल मंडन प्रकटे श्रीविट्ठलनाथ। जे जन चरण न सेवत तिन के जन्म अकाध।।1।। भक्ति भागवत सेवा निश–दिन करत आनंद। मोहन लीला सागर नागर आंद कंद।।2।। सदा समीप बिराजे श्रीगिरिधर गोविंद। मानिनी मोद बढावें निज जनके रविचंद।।3।। श्रीबालकृष्ण मन रंजन खंजन अंबुज नैन। मानिनी मान छुडावे बंक कटाक्षन सेन।।4।। श्रीवल्लभ जग वल्लभ करुणानिधि रघुनाथ ।ओर कहां लगि वरनो जगवंदन यदुनाथ।।5।। श्रीघनश्याम लाल बल अवचल केलि कलोल। कुंचित केश कमलन जानों मधुपन के टोल।।6।। जो यह चरित्र वखाने। श्रवन सुने मन लाय। तिन के भक्ति जु बाढें आनंद द्योस विहाय।।7।। श्रवण सुनत सुख उपजत गावत परम हुलास। चरण कमल रज पावन बलिहारी कृष्णदास।।8।।

239 रामकली चलो सखी मिलि देखन जैयें नंद के लाल मचाई होरी।। अबीर गुलाल कुंकुमा केसरि पिचकारिन भरि भरि ले दौरी।।3।। एक जु पिय की चोरा चोरी हमें लखे नहीं कोरी।। कृष्ण जीवन लछीराम के प्रभु कों भरि हें राधा गोरी।।2।।

240 खट बरसानैं तैं बृषभानु पुरा की होरी खेलनि निकसी हो।। बरन बरन बन ठन आभूषन कनक बेल सी गिगसी हों।।1।। जोबन रूप मदन मनमथकौं उर मोहन मदमाती हो।। ऐंड़तचले चाल गरबीली मंद मंद मुसिंकाती हो।।2।। झोरी भरि अबीर कुँमकुमा करन कनक पिचकाई हो।।आवति चंग उपंग बजावति गाबति हरि कौं गारी हो।।3।। ठाड़े जहाँ सखा संग लीनें चतुर खिलारि कन्हाई हो।। सीस नवाइ दूर भई ठाड़ी हँसि हँसि निकट बुलाई हो।।4।। उमड़े हैं गोपी ग्वाल परसपर भारी खेलि मचायौ हो।। उड़ति गुलाल अबीर अरगजा अति हही अंबर छायो हो।।5।। गोपीन मतो बनाई धाई कैं मन मोहन गहि लीनें हो।। आँखि आँजि मुख माँडि महावर हो करि तजि दीनें हो।।6।। अपुने दावस्याम हु पाए तब गहि लीने राधे हो।। जेतेक दाव चाव चित उपजें सकल मनोरथ साधे हो।।7।। बेनी गुही बनाई उलटि कैं कछुक सेंधानी कीनीं हो।। दुहुं और दिठौना दै कैं तब छाँडि रंग भीनीं हो ।।8।। तारी दै दै ग्वाल हँसति है गोपिन मन मुसिकानी हो।। मन में मुदित भई बाहिर तैं राधा कछु कुमलानी हो।।9।। नँद नंदन बृषभानु लली की सोभा कहा बखानैं हो।।'ब्यासदास' प्रभु रीझि भिंजि सौं बारति तन मन प्रानैं हो।।10।।

241 खट आजु भोर ही नंद पौरि बृज–नारिन रोर मचाई। पकरि पानि गहि मारि पौरिया जसुमति पकरि नचाई।।1।। हरि भागे हलधर हू भागे, नंद महर हू हेरे।। तब ही मोहन निकसि द्वार व्है सखा–नाम ले टेरे।।2।। द्वार पुकार सुनत नहीं कौऊ, तब हरि चढे अटारी।। आओ रे आओ, सखा सब संग के, हमारे घर घेस्यो ब्रजनारी।।3।। सुनत टेर संगी सब दौरे, जब अपने–अपने धाम, अर्जुन तोक कृष्ण मधु मंगल, सुबल सुबाहु श्रीदाम।।4।। ग्वालिनि दौरि पौरि जब रोकी, आनन पाये नेरे।। चंद्रावलि ललितादि आदि दे स्याम मनोहर घेरे।।5।। कित जै हो बस परे हमारे भजि न सको नंदलाल।। फगुवा में मुरली हम ले हें पीतांबर बनमाल।।6।। केसरि डारी सीस तें मुख पर रोरी मांडत राधे।। "विष्णुदास" प्रभु भुज गहि गाढे, मन वांछित फल साधे।।7।।

242 पंचम देखो देखो ब्रज की बीथनि बीथनि खेलत हें हरि होरी।।गीत विचित्र कोलाहल कौतिक संग सखा लख कोरी।।3।। आईं झूमि झूमि झुंडन जुरि अगनित गोकुलगोरी।। तिन में जुवती कदंब सिरोमनि राधा नवलकिशोरी।।2।। छिरकत ग्वालबाल अवलन पर बूकावंदनरोरी।। अरुन अकास देखि संध्याभ्रम मुनिमनसा भइबौरी।।3।। रपटत चरन कीच अरगजा की केसर कुंकुम घोरी।। कही न जाय गदाधर पे कछु बुद्धिबल मति भई थोरी।।4।।

243 श्री हठी स्याम-संग खेलत चलि स्यामा सब सखियन कौं जोरि।। चंदन अगर कुमकुमा केसरि, बहु कंचन-घट घोरि।।1।। उड़त गुलाल अबीर, कुमकुमा, छबि छाई जनु साँझ।। नाहीं दृष्टि परत राधा-मुख, चंद निलंबर-मांझ।।2।। खेलि फाग अनुराग बढ्यौ घर, मची अरगजा- कीच।। ब्रज-बनिता कुमुदिनि-सी फूलीं, हरि-ससि राजत बीच।।3।। अष्ट सिद्धि, नव निधि ब्रज बीथिनि, डोलत घर-घर बार।।सदा बसंत वृंदावन, लता-लता द्रुम डार।।4।।देखि-देखि सोभा-सुख-संपति, जिय मैं करतिं विचार।।ब्रज बनिता हम क्यों न भईं, यौ कहति सकल सुर-नार।।5।। फाग खेलि अनुराग बढ़ायौ सब कैं मन आनंद।।चले जमुन अस्नान करन कौं, सखा, सखी, नंद-नंद।।6।। दुष्टनि दुःख, संतनि-सुख-कारन, ब्रज-लीला अवतार।। जै जै ध्वनि सुमननि सुर बरषत, निरखत स्याम-बिहार।।7।।जुगल-किशोर-चरन-रज मांगौ, गाऊँ सरस धमारि।। श्रीराधा गिरिवर-धर-ऊपर सूरदास बलिहारी।।8।।

244 श्री हठी खेलति फागु फिरति रस फूलै।। स्यामा स्याम प्रेम बस नाँचति गावति सरस हिंडोरे झूलै।।1।। वृंदांबन की जीबनि दोऊ नट नागर बंसीबट मूलै।। 'व्यासस्वामिनि' की छबि निरखति नैन कुरँग फिरति रस भूलै।।2।।

245 फाग हरि संग खेलति हैं सब फाग।इहिं मिस करति प्रगट गोपी; उर-अंतर कौ अनुराग।। सारी पहिरि सुरँग, कसि कंचुकि, काजर दै दै नैन। बनि बनि निकसि-निकसि भई ठाढ़ी, सुनी माधौ के बैन। डफ, बाँसुरी रुंज अरु महुअरि, बाजत ताल मृदंग। अति आनंद मनोहर बानी गावत उठति तरंग। एक कोध गोविंद ग्वाल सब, एक कोध बृज-नारि। छाँड़ि सकुच सब देतिं परस्पर, अपनी भाई गारि।। मिलि दस पाँच अली चली कृष्णहिं, गहि लावतिं अचकाई। भरि अरगजा अबीर कनक-घट, देतिं सीस तैं नाइ। छिरकतिं सखी कुमकुमा केसरि, भुरकतिं बंदन धूरि। सोभित हैं तनु साँझ-समै-धन, आए हैं मनु पूरि । दसहूँ दिस भयौ परिपूरन, सूर सुरंग प्रमोद। सुर-बिमान कौतूहल भूले, निरखत स्याम-विनोद।।

246 मान के पद बिहाग आज दिन होरी को हे तू जिन मान कर। मेरों कह्यों तू मान हठीली केसे हू गर्व टरे।।1।। उठ चल हिल-मिल गिरिधर पिय सो तों सब काज सरे। तेरे हो वश हे व्रजपति पिय तेरों ही ध्यान धरे।।2।।

247 पोढवे के पद अडाणों पोढे प्यारी पिय के संग सबे वसन भरे रंग। खेल फाग अनुराग बढ्यो दोउ आलस वश सब अंग।।1।। हँसत परस्पर अतिरस विहरत अंक भरत उमंग। परमानंद दंपति छबि पर वारों कोटि अनंग।।2।।

248 होलिकोत्सव ईमन एरी चलहु सखी तहाँ तहाँ जहाँ जैयै। नव निकुंज में खेल मच्यौ है, रंगनि रंग मिलैयै।। तजि अभिमान समझ सखी मन, स्याम मिलें सुख पैयै। अरस परस आलिंगन लहियै, चुंबन होड़ लगैयै।। करौ सिंगार सुभग तन थोरौ, मोतिन माँग भरैयै। सारी सेत पहिर तन सुख की, आलि गुलाल करैयै। 'रसिक प्रीतम' प्यारे सों मिलियै, अंतर भाव जनैयै। इहि बिधि फाग सुहाग सखी री, आनंद सिंधु बढ़ैयै।।

249. (मान) बिहाग प्यारी तू नित्य उठ मान मनावै। कौन सी टेव परी ब्रजसुंदरी पिय कौ पाय परावै।। 1।। नहिं बूझत समजत री सखी री सहज बात उठ धावै। तू जौ कहे हौ निपट सयानी स्यानपनो कहा जनावै।।2।। यह दिन फाग सुहागी सखी री सब काहू कों भावै। श्रीविट्ठल गिरिधरन लाल कौ तू काहे न रंग बढ़ावै।।3।।

250 (पोढवे) बसंत खेलि फागु मुसिकात चले दौऊ पौढे सुखद सेज मिलि दंपति।। हँसि हँसि बात करति सुनि सजनी निरखति कृपन मिली मनौं संपति।।1।। करति सिंगार परसपर हुलसति सोभा देखि मदन तन कांपति।। 'ब्रजपति' पिय प्यारी मिलि बिलसति सखी ललितादिक चरनन चाँपति।।2।।

251. (पोढवे) बिहाग चले पिय भाव ते रस लैन। खेल फाग अनुराग बढ्यौ हैं, महा मत्त गति मैन।।1।। झीने बसन गुलाल सगबगे, तन राजत दुति ऐन। "रसिक प्रीतम" पिय प्यारी पौढे नव निकुंज सुख सैन।।2।।

252 ताज बेगम बहुर ड़फ बाजन लागे होली खेलत मोहन साँवरो हो, किस मिस देखन जाय सास ननद बैरिन भई, अब कीजे कोन उपाय ।।1 ।। ओजत गागर डारिये, जमुना जल के काज यह मिस बाहिर निकस के, हम जाय मिले तजि लाज ।।2 ।। आओ बधरा में लिये वन को देही विड़ार वे देहे हम हीं पठै, हम रहेंगी धरी द्वे चार ।।3 ।। हा हा री हों जात हों मोपे नाहिन परत रह्यो तू तो सोचत ही रही, ते मान्यो न मेरो कह्यो ।।4 ।। राग रङ्ग गह गढ़ मच्यो नन्द राय दरबार गाय खेल हँस लीजिये फाग बडो त्योहार ।।5 ।। तिन में मोहन अति बने नाचत सबे ग्वाल बाजे बहुँ विघ बाजहीं, रूंज मुरज ड़फ ताल ।।6 ।। मुरली मुकुट बिराज ही, कटि पर बांधे पीत नृत्यत आवज ताज के प्रभु गावत होरी गीत ।।7 ।।

253 बिहाग खेलन दे मोहे होरी हो रसीया।। जानि न देहौं गहि राखौंगी काए कों बैंयाँ मरोरी हो रसीया।।1 ।। ब्रिंदाबन बिच खेलि मच्यौ है सँग राधिका गोरी हो रसीया।। सखी सहेली सब मिलि खेलैं हम कहा कीनीं चोरी हो रसीया।।2 ।। फगुवा लीयै बिनु जानि न देहौं तुम मत जानौं भोरी हो रसीया।। ‘ऋषिकेस’ प्रभु मिलि मगन भये डारति है तृन तोरी हो रसीया।।3 ।।

–:+:–

होली के रसिया

254 रसिया ठाडो रे हे कनुवा ब्रजवासी ठाडो रे हे। रंगडार कित भाज्यो रे लंगरवा लोक करे मेरी हांसी ठाडो रे हे। बालपनो खेलन में खोयो गोकुल में मारी मासी ठाडो रहे । पुरुषोत्तम प्रभु की छबि निरखत जन्म जन्म तिहारी दासी ठाडो रे हे।।12 ।। काना धर्यो रे मुकुट खेले होरो काना धर्यो रे। इत तें आये कुंवर कन्हाइ उत ते आइ राधा गोरी काना धर्यो रे। कहां ते रो हार कहां नक वेसर कहां मोतियन की तर तोरी काना धर्यो रे। गोकुल हार मथुरा नकवेसर वृंदावन में लर तोरी काना धर्यो रे। चोवा चोवा चंदन अगर अरगजा अबीर उडावो भर भर झोरी काना धर्यो रे। पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखत फगुवा लीयो भर भर झोरी काना धर्यो रे।।13 ।। गेहू रे कर श्याम अमल पानी गेह रे कर। कुंडीबी दउंगी कुतकाबी दउंगी तेरी भाग मिरचकी में जानी गेहेरे कर। ले चलु तो कु बरसाने में हम होंयगी तेरे अंगवारी गेहेरेकर । तों हि करु होंरो को भरुवाहम होंयगी तेरे मेहेमानी गेहेरेकर। पुरुषोत्तम प्रभु की छवि निरखत तन मन धन सरवसवारी गेहेरेकर।।14 ।।

255. रसिया चलो बरसाने खेले होरी। उंचो गाम बरसानो कहीये तहाँ बसे राधा गोरी। पाँच बरस के कुँवर कन्हैया सात बरस राधा गोरी। चौबा चंदन अरू अरगजा केसर गागर भरी ढौरी। उत तै आए स्याम मनोहर इत तें आई राधा गोरी। ''सूरदास'' प्रभु तिहारे मिलन कुं रहो चिरंजीव यह जौरी।।1।।

256. रसिया बृज की तोहे लाज मुकुटवारे। चंद सूरज तेरो ध्यान करत है ध्यान धरत नव–लख तारे। इंद्र ने कोप कियो ब्रज ऊपर तब गिरिवर कर पर धारै।। 'पुरूषोत्तम'' प्रभु की छबि निरखत गाय गोप के रखवारे।।1।।

257 रसिया डफ बाजै नंद–बाबो घर के, डफ बाजै। चल री सखी देखन जईए छैल–चीकनीया नागर के। नाचत गावत करत कुलाहल संग सखा है बराबर के। 'पुरूषोत्तम' प्रभु के संग खेलो। झख मारत घर बारन के।।1।।

258. रसिया दरसन दे निकस अटा में ते दरसन दे। तू हे श्रीबृषभाननंदिनी ज्यों निकस्यौ चंद घटा मे तें। कोटी रमा सावित्री भवानी सौ निकसी तेरी अंग छटा मेंते। "पुरूषोत्तम" प्रभु यह रस चाख्यौ जैसे माखन निकस्यौ मठा मेंते।।1।।

259 .रसिया बन आयो, छैला होरी को बन आयो। मल्ल–काछ सिंगार धर्यो है जाके फेंटा सीस मरोरी कौ। सौधे भीनौ उपरना सौहे याकै माथे बेंदा रोरी को। ''पुरूषोत्तम'' प्रभु कुंवर लाडिलौ यह रसिया वाही गोरी कौ।।1।।

260. रसिया बृंदाबन खेल रच्यौ भारी बृंदाबन। बृंदाबन की गोरी नारी टूटे हार फटे सारी। ब्रज की होरी ब्रज की गारी ब्रज की श्रीराधा प्यारी। पुरूषोत्तम प्रभु होरी खेले तन–मन–धन सरवस वारी।।1।।

261. रसिया ब्रजमंडल देस दिखावौ रसिया ब्रजमंडल। तिहारे बिरज में मोर बहोत है बोलत मोर फटे छतिया। तिहारे बिरज में गैया बहुत हे पीपी दूध भये पठैया। तिहारे बिरज में बंदर बोहोत है सूनो भवन देखी धसीया। ''पुरूषोत्तम'' प्रभु की छबि निरखत तेरे चरन मेरो मन बसीयां।।1।।

262. रसिया फागुन में रसीया घर–बारी फागुन में। हो–हो बोले गलियन डोले गारी दै दै मतवारी। लाज धरी छपरन के ऊपर आप भये हें अधिकारी। ''पुरूषोत्तम'' प्रभु की छबि निरखत ग्वाल करे सब किलकारी।।1।।

263. रसिया दरसन दै मोर मुकुटवारे दरसरन दै। कटि–तट सोहिये सुभग काछनी। निरखो पीयरे पटवारै। "पुरूषोत्तम" प्रभु की छबि निरखत सेस सहस्र मुख ही हारै।।1।।

264. रसिया मृग–नैनी तेरौ यार नवल रसिया मृग–नैनी। जा के बड़े–बड़े नैन में कजरा सोहीये। जा की टेडी सी नजर मेरे मन बसीया। जा के नव–रंगी तो लेहगा सोहीये। जा की पतरी कमर मेरे मन बसीयां। "पुरूषोत्तम" प्रभु की छबि निरखत। सबै छांडि ब्रज में बसीया।।10।।

265. रसिया फगुवा दे मोहन मतवारे, फगुवा दे। ब्रज की नारी, गावे गारी। दो बापन के बिच डोले। नंद जु गोरे जसोदा गोरी। तुम कहां ते भये कारे। 'पुरुषोत्तम'प्रभु जुवतिन हेते गोप भैरव लियो अवतारे।।

266. रसिया जब तें धोको देके गयो, श्याम संग नाय खेली होरी।। जबतें।। उधोजी, तुम जावो द्वारका, लै पाती मोरी।। कहियो यों समझाय दरश बिन, तरसे बृजगोरी।। जबतें।। परसों की कह गये, मान गई में, कैसी भोरी।। बीत्यो बरस जो सगरो, रह गई चूनरिया कोरी।। जबतें।। देंगी प्राण गंवाय गात की है जायगी होरी।। लैयो बेग लिबाय उमरिया, रह गई है थोरी।। जबतें।। बृज बनिता दई त्याग प्रीति जाने कुबजा सों जोरी।। कहैं कवि "घांसीराम" सदा यह, बनी रहे जोरी।। जबतें।।

267. रसिया गोरी, चले मरोड़ा चाल, दिखावे रंग होरी में। रोज निकस जाय, धोखो दे जाय, मन में बने होशियार।। तू जोवन मद–मस्त गुजरियाँ, भोलो नहीं नंदकुमार।। झोका खाय चले डगरन में, बिछुवन की झनकार। सेने दे दे बात करत हैं, नैनन कजरा डार।। दधि मांगू तो अँगूठा दिखावे, वा छल छंदी नार। गुलचा दे दे गाल सुझाय देऊं, तोरू गले को होर।। मटकी पकड़ लई कान्हा ने, ठाड़ी रही बृजनार। "बृजवासी" कहे, जान न दे हों, बता तेरो रखवार।।

268. रसिया खेलें श्यामा, श्याम री, आज कुंजन में होरी।। नंद गाम सों आये सखा सब, बरसाने की बाम री।। गहवर बन और खोर सांकरी, कुंज कुटी निज धाम री।। राधे कूं मन मोहन कीनो, मोहन बनाय दिये नारि री।। हाथन मेहंदी पांय महाबर, बिंदी लगाई भाल री।। कहत लाल नवनीत पियारो, जपूं तुम्हारो नाम री।।

269. रसिया होरी खेलूं श्याम सुंदर सों, मेरी लाज रहो, चाहे जाय।। बड़े भाग सों होरी आई, सब उतसाहे लोग लुगाई, खेलो चलो, तुम हुं सब संग मिल, तुम्हें कहूं समझाय।। पीताम्बर और मुकुट उतारौ, नैनन में अंजन लै सारो, छाँडो नहीं, पकर लेउ याकों, कितने उहा हा खाय।। दधि माखन को, यह चुरवैया, गोपिन सौं उधम मचवैया, कहूं हाथ परिजाय, पकरि याकि बंशी ले हू छिनाय।। छाँड़ो फगुवा लिये न बहना, नेह जु सहित करो मेरो कहिना, चाहे बलदाऊ, और बाबा नंद हि, लेय बुलाय।।

270. रसिया बहना, कैसे खेली जाय, अनोखी होरी, श्याम की।। रीत बुरी है, अरी बहन, या गोकुल गाँव की, हुरमत लाज, जाय ऐसी, कहा होरी काम की।। या होरी में, खोय गई, मेरे पायल, पांय की,अब ही नई, बनवाई मैंनें, बहुतक दाम की।। धूम न झेली जाय, बहन, या आठों याम की, रंग डारे, और छाप लगावे, अपने नाम की।। होरी अजर अमर रहे, या गोकुल गाँव की, बृज मंडली, खुशी रहे, द्विज "घांसीराम" की।।

271. रसिया नंद को छोना, श्याम सलोना, टोना कर गयो होरी में।। सिर सों चुनरी, चीर, बीर मेरो गिर गयो होरी में, नख सिख लों सिंगार, बीर, मेरो बिगडयो होरी में।। घूंघट खोल, गुलाल द्रगन मे, भर गयो होरी में, चटकदार चूनर में धब्बा, पड़ गयो होरी में।। थर थर कांपन लागों जियरा, डर गयो होरी में, नंद के पूत सपूत से, आनन्द बढ़ गयो होरी में।। खेलत खेलत फाग, रूप रंग, ढर गयो होरी में, "घांसीराम" खेल भव सागर, तर गयो, होरी में।।

272. रसिया अब क्यों दुबक रह्यो लतान में, मेरी साड़ी पे रंग डार, मेरी देख भिजोय दई सारी, भर पिचकारी मार, गागर मेरी भरी दूध की, रंग आयो है डार।। बृज में ऐसो भयो न कोई, होरी को खिलवार, आठों पहर रंग लिये डोले, घर-घर द्वारन द्वार।। भलो जो चाहे आपनो जसुमति कर दे याकों बाहर, नहीं तो यह ब्रजवाला तेरो लेहंगो देगी फार।। मेरे तो यह उत्पाती कान्हा, क्षमा करो तुम ग्वारि, देख "गोपाल" अलौकिक झांकी, सखी गई बलिहार।।

273. रसिया श्याम ने रंग में भिजाये दई चुनरिया ये ऐसा निपट कठोर। श्याम ने रंग में भिजोय दई। मैं तो अपने घर ते आई ये मारग रोके ठाडो कन्हाई। मैं बच के एक ओर गई, ये ठाडो एक ओर।। श्याम ने रंग में भिजोय

दई। याने अचक आय पिचकारी मारी, मेरी चोली चूनर सब ही बिगारी। मैं रंग में सरबोर भई, मेरो भीज्या लहंगा कोर।। श्याम ने रंग में भिजोय दई। मेरी सास ननद मोहिं बुरी बतावे, जेठ सुसर मोपे दोष लगावे। यह बहू तो फुल बोर भई, याने दई मर्यादा तोर।। श्याम ने रंग में भिजोय दई। देखो मैं तो मरू शरम की मारी यह लोग वोग पीटे सब तारी। मैं याते कर जोर रही, कहे "घासीराम" निहोर।। श्याम ने रंग में भिजोय दई।

274 रँग में रँगन रँगमगी करी सखी री वा नँदलाल ने।। गई जो मैं यमुना जल भरन, साजि तन सब श्रृंगार आभरन, आय गयो वह रसिया मन हरन।। दोहा।। वा रसिया मन हरन नें मग में लीनी घेर।। पिचकाई सनमुख दई गागर दीनी गेर।। गाल गुलाब मल्यौ वा मेरे मोहनलाल नें।।1।। अकेली मैं, उनके संग ग्वाल, कियौ उननें मेरौ बेहाल, नाचे गावें होरी ख्याल।। दोहा।। भरि–भरि झोरि उड़ावते रंग–बिरंग गुलाल। गावें सरस धमार सब चलें अटपटी चाल।। मोतिन लर तोरी बरजोरी करी गुपाल नें।।2।। बजावें ढफ बीना मुख चंग, झालरी मुरली चंग उपंग, दुंदुभी भेरी शंख मृदंग।।दोहा।। बाजे बहु विधि बाजते ढोल बेणु कठताल। बलि मोहन हैं मध्य में चहुँ दिशि नाचें ग्वाल।। यह विधि होरी खेल मचायौ जग प्रतिपाल नें।।3।। करी मैं विनती बहुत प्रकार, धनि– धनि तुम कूं नंदकुमार, प्रभु तेरी लीला पै बलिहार।। दोहा।। सरबस डारूँ बारि के तुम पर दीनानाथ। दरशन दैके आपनें मोकूं कियौ सनाथ।। मोकूं कियौ सनाथ कृपा कर दीनदयाल नें।।4।।

275. मैं तो सोये रही सपने में मोपे रंग डार्यो नंदलाल।। सपने में श्याम मेरे घर आये, ग्वालबाल कोई संग न लाये, पौढ़ि पलका पै मेरे संग, टटोरन लागे मेरौ अंग, दई पिचकाई भर–भर रंग।। दोहा।। पिचकाई के लागत ही मन उठी तरंग। जैसी मीसरी कंद की घोट पिलाय दइ भंग।। मानों पी लई भंग, गाल मेरे कर दिये लाल गुलाल।।1।। खुले सपने में मेरे भाग, कि मेरी गई तपस्या जाग, मनाय रही हँसि–हँसि फाग सुहाग।।दोहा।। हँसि–हँसि फाग मनावती चरन पलोटत जाऊँ। धन्य–धन्य या रेणु कों फिर ऐसो नहिं पाऊँ।। फिर ऐसो नहिं पाऊँ, भई सपने में माला माल।।2।। इतने में मेरे खुल गये नैना, देखूँ तौ कछु लैना न दैना, परी

पलका तै मैं पछितात, मींडती रह गई दोऊ हाथ, मन को मन में रह गई बात।। दोहा।। मन की मन में रह गई व्है आयो परभात। बज्यो फजर कौ गजर तब रहे तीन ढाक के पात। तीन ढाक के पात रही कंगालिन की कंगाल।।3।। होरी कौ रस रसिक हि जानें, रस कूंकूर कहा पहिचाने, जो रस बरसै ब्रज के मांहि, सो रस तीन लोक में नाहिं, देख शिव ब्रहमादिक ललचाँय।। दोहा।। ब्रह्मादिक ललचावते धन्य–धन्य ब्रज धाम। गोवर्धन दश दिसे में द्विजवर घासीराम। द्विजवर "घासीराम" सदाँ वे कहें रंगीले ख्याल।।4।।

276. रंग में रंग दई बाँह पकरि लई लाजन मरि गई होरी में। इकली भाज दई होरी में, हुरमत लाज गई होरी में, चटकदार चोली में सरवट परि गई होरी में।।1।। चूंदर रंग बोरी होरी में, पिचकाई मारी होरी में, व्हैकें श्याम निशंक अंक भुज भरि लई होरी में।।2।। गाल गुलाल मल्यौ होरी में, मोतिन लर तोरी होरी में, लोक–लाज खूंटी पै कान्ह धरि दई होरी में।।3।। बरजोरी कीनी होरी में, ऐसी बुरी भई होरी में, "घासीराम" पीर सब तन की हर लई होरी में।।4।।

277. नैनन में मोहि गारी दई पिचकाई दई होरी खेली न जाय। क्यों रे लंगर–लंगराई मोते कोनी, केशर कीच कपोलन दीनी, लिये गुलाल ठाढ़ौ मृदु मुसिकाय, होरी खेली न जाय।।1।। औचक आप कुंकुमा सरै, रंग सुरंग सीसते छारै, यह ऊधम सुन सास रिसाय।। होरी०।। नेंकन कान करै काहू की, आँख बचावै बलदाऊ की, अंग लिपट हँसि हाहा खाय। होरी०।।3।। होरी के दिन मोते दूनों अटकै, "सालगराम" कौन याहि हटकै, पनघट ते घर लों बतराय। होरी०।।4।।

278. चुनरिया रंग में बोर गयौ कान्हा बंशी वारौ। मैं दधि बेचन जात वृंदावन बैयाँ पकरि मरोर गयौ।।1।। वृंदावन की कुंज गलिन में दधि की मटुकिया फोर गयौ। चंद सखी भज "बालकृष्ण" छवि चितवनि में चित चोर गयौ।।2।।

279. आज बिरज में, होरी रे रसिया, होरी नहीं रे बरजोरी रसिया। उतते आये कुँवर कन्हैयाँ इतते आई राधा गोरी रे।।1।। उड़त अबीर गुलाल कुंकुमा केशर गागर ढोरी रे। बाजत ताल मृदंग बांसुरी और नगारे की जोरी रे।। "कृष्णजीवनलछीराम" के प्रभु सों फगुवा लियौ भर झोरी रे।।2।।

280. मत मारे दृगन की चोट, रसिया होरी में मेरें लगी जायगी। अब की चोट बचाय गई हूँ करि घूंघट की ओट।।1।। सास सुनें मेरी ननद लडैगी तुम में भरे बड़े खोट। "पुरूषोत्तम" प्रभु वहां जाय खेली जहाँ तिहारी जोट।।2।।

281. मोहन आज गयौ होरी में मेरी चूनर रंग में बोर। ग्वाल बाल संग में लायौ, फिर होरी कौ दुंद मचायौ, नेक तरस मेरौ नहिं खायौ, अंगुरी पकर मेरौ पहुँचौ पकर्यो वैयाँ दई मरोर।।1।। एक दिना की बात सहेली, मैं यमुना जात अकेली, पाछें ते आय नंद के नें घेरी, भर पिचकारी सनमुख मारी कर दीनो सराबोर।।2।। अचक अचानक आयौ घर में कनक पिचकारी लायौ कर में मार रह्यो तक मेरे तन में, उड़त अबीर गुलाल कुंकुमा मारत तकि–तकि झोर।।3।। एक दिना जुरि मिल के गोरी, पकरि लेहु ह्वै के इकठोरो, अंजन आँजि माँढ़ि मुख रोरी, नर ते नारि बनाय लाल की बंसी लीजै चोर।।4।। बरष दिना में फागुन आवे, देखि–देखि मन हरषावै, फगुआ दिये बिन जान न पावै, ले औ काढ़ि कसक सब दिन को, कहै "मदन" कर जोर।।5।।

282. फाग खेलन बरसाने आये हैं नटवर नंदकिशोर।। घेर लई सब गली रंगीली छाय रही छटा छबीली, ढफ ढोल मृदंग बजाये हैं बंशी की घनघोर।।1।। जुर मिलकें सब सखियाँ आईं उमड़ घटा अंबर में छाईं, जिन अबीर गुलाल उड़ाये हैं मारत भर–भर झोर।।2।। लै रहे चोट ग्वाल डाल पै, केसर की कीच मले गालन पै, हरियल बाँस मगाये हैं चलन लगे दु ओर।।3।। भई अबीर घोर अंधियारी दीसत नाहीं नर अरू नारी, राधे ने नैन चलाये हैं पकरे हैं माखन चोर।।4।। जो लाल घर जानों चाहौ हो होरी की फगुवा मंगवावो, श्याम नें सखा बुलाये हैं बाटँत भर–भर झोर।।5।। राधा जू के हा हा खावो, सब सखियन के घर पहुँचावो, "घासीराम" जस गाये हैं भर कविता कौ छोर।।6।।

283. मैंने सुनी झनक होरी में खेल रहे राधे संग घनश्याम। बढ्यो मेरे मन में अनुराग गईं मैं इकली घर सों भाज, बड़े भागन सों आयो फाग।।

।। दोहा।। भागन सों आयो सखी अबको फागन मास। खेलूँगी संग श्याम के पूजै मन की आस।। पूजै मन की आस होयेंगे पूरन मन के काम।।1।। सखिन सब मिली झुंड में जाय, देखि कें श्याम गये मुसकाय, दई पिचकाई सनमुख आय।।

।।दोहा।। पिचकाई मेरे दई सनमुख नंदकुमार। चकाचौंध आगे भयौ घूंघट दियौ उघार। गाल गुलाल लगायौ मेरे हँसि–हँसि सुंदर श्याम।।2।। लिये ललिता ने पकरि ब्रजराज, जाओगे हम सो तुम कहाँ भाज, कसक दिन–दिन की निकसें आज।। दोहा।। कटि लहँगा पहिराय कें चुनर दई उड़ाय। बेंदी भाल लगाय कें छोड़े नाच नचाय।। बाजें ताल मृदंग सहनाई होरी–होरी गावें जाय।।3।।

284. श्यामा श्याम सलोनी सूरति को श्रृंगार बसन्ती हैं। मोर मुकुट की लटक बंसती, चंद्रकला की चटक बंसती, मुख मुरली की मटक बसंती, सिर पै पेच श्रवण कुण्डल छविदार बसंती है।।1।। माथें चंदन लस्यो बसंती, कटि पीताबंर कस्यो बसंती, मो मन मोहन बस्यो बंसती, गुंजमाल गल सोहै फूलन हार बंसती है।।2।। कनक कडूला हस्त बसती, चलें चाल अलमस्त बंसती, पहिर रहे सब वस्त्र बसंती, रूनक–झुनुक पग नूपुर को झनकार बसंती है।।3।। संग ग्वालन को टोल बसंती, बजै ढफ चंग ढोल बसंती, बोल रहे सब बोल बसंती। सब सखियन में राधे जु सरदार बसंती है।।4।। परम प्रेम परसाद बसंती, लगे रसीलौ स्वाद बसंती, है रही है सब मरजाद बसंती। "घासीराम" नाम श्याम कौ सार बसंती है।।5।।

285 सखी सब जुरि मिल चालौ संग द्वार बरसाने वारी के। पिचकारिन सब रंग भरौ गुलाल झोरिन भरौ गुलाल, बरसाने गये पहुँच के हरसित मन नंदलाल द्वार०।।1।। होरी खेलौ सब सखी कहें यों बैन, सन्मुख आईं राधिका चुभे श्याम के नैन, कटीले राधा प्यारी के।।2।। होरी खेलो प्रेम सों मुख पर मल्यौ गुलाल, होरी ही में फँसि गये फंद प्रीत नंदलाल, प्रीत वरसाने वारी के।।3।। चित चोर्यो चित चौर कौ मानो हार तब हार, नैन बाण चित्त में चुभे भये ह्रदय मे पार, घाव बुरे नैन कटारी के।।4।। नैन–नैन सों मिलि गये जैस चंद्र–चकोर, प्रेमामृत रस सों सने राधा नंदकिशोर, नेह रहै चरण "बिहारी" के।।5।।

286. होरी हो ब्रजराज दुलारे।। अब क्यों जाय छिपे जननी ढिंग द्वै बापन के तो बारे, निकसी कें होरी खेलौ कै कही मुख वे हारे, जोर कर आगे हमारे।।1।। बहुत दिनन सों तुम मनमोहन फागहि फाग पुकारे। आज देखियौ खेल फाग कौ फुहारें, चले जहाँ कुमकुम न्यारे।।2।। निपट अनीति उठाई तुमनें रोकत गैल गिरारे। "नारायण" सब खबर परैगी नेंक तौ निकस आय द्वारे, सूरत अपनी दिखलारे।।3।।

287. प्यारे करूँ कपोलन लाल–लाल मेरी अँगिया न छुवौ। यह अँगिया नहिं धनुष जनक तौ छुवत टूट्यौ ततकाल। नहिं अंगिया गौतम की नारी छवत उड़ी नंदलाल।।1।। कहा विलोकत भृकुटी कुटिल कर नहिं ये पूतना ख्याल। यह अंगिया काली मत समझौ जाय नाथ्यौ पाताल।।2।। गिरिवर उठाय भयौ गिरिधारी नहिं जानों ब्रजबाल। जावौजी खेलौ सखन के संग मिलि गौबन के प्रतिपाल।।3।। इतनी सूनि मुसिकाय साँवरे लीनों अबीर–गुलाल "सूरदास" प्रभु निरखि छिरकि अंग सखियन कियौ निहाल।।4।।

288. श्याम सों कहियो कोई जाके। मन मेरौ मीन सरोवर तन ये सजन शिकारी ने आकें। बंसी डारि दई चित्तवन की प्रेम के फन्द फंसाके, तजी पट पर में लाके।।1।। पहिले तो मेरौ मन बस कीनौ छिन–छिन प्रीत बढ़ा के। अब कहा चूक परी मनमोहन सो क्यों दई घटा के, लिखौ साँची समझा कैं।।2।। लाल–गुलाल सब हि हम त्यागे, भस्मी लई है रमा के। सेली सगी डार गरे में, जोगिन भेख बना के, ध्यान तेरौ ही लगा के।।3।। झुरि–झुरि सूख–सूख भई पिंजरा, विरहा में दुख पाके। "नागरीदास" लाल नंद जुँ के, नटवर वेष बना के, दरश दैहौं हमें आके।।4।।

289. श्याम सों खेलूंगी होरी। केशर घोर सुरंग बनाऊँ अबीर गुलाल की झोरी। सुघर सजन कुँ पकरि भिजोऊँ तो बृषभान किशोरी, मलूंगी मुख ते रोरी।।1।। छीन लऊं मुरली पीताम्बर लकुट मुकुट और खोरी। कटि किरंगी भुज अगंद मुरली माल मुक्त बरजोरी, गो मैं राधा गोरी।।2।। इतनी सुनत निकसी आये मोहन होरी मची दुहुँ ओरी। कोऊ नाचत कोऊ तारी बजावत गावत सप्त सुर घोरी, अधिक ब्रज फाग मचौ री।।3।। बाजत ताल, मृदंग, झाँझ, ढफ और नगारे की जोरी। निरगुन ये नैनन कौ फल ब्रज फाग सुख निरखौ री, याचत दोऊ कर जोरी।।4।।

290. कान्हा धरें मुकुट खेलें होरी। इत ते आये कुँवर कन्हैया इत ते आई राधा गोरी।।1।। फेंट गुलाल हाथ पिचकारी मारे हैं भर–भर झोरी। रसिक "गोविंद" अभिराम श्याम घन जुग–जुग जीवो यह जोरी।।2।।

291. बनि आयौ छैला होरी कौ। इन चोरन मेरो सरबस लूटयो मन लीन जोरा जोरी।।1।। खोल देऊ किन बंद चोली के पकरे चोर हम अपनों री "हरीदास" इन दोउन मेरो नाहक कीनों चित्त चोरी।।2।।

292. रसिया को नारि बनावौ री कटि लहंगा उर मांहि कचुकी चूनर सो उढावौरी।।1।। बांह बरा बाजूबद सोहे नकबेसर पहिरावौरी। गाल गुलाल दृगन बिच काजर बेंदी झाल लगावौरी।।2।। आरसी छल्ला और खँगवा अनवट बिछुआ पहिरावौ री। "नारायण" तारी बजाय कें यशुमति निकट नचावौरी।।3।।

293. नेंक आगें आ श्याम तोपै रंग डारूँ। रंग डारूँ तेरे मरवट मांडूँ गालन पै गुलचा मारूं।।1।। ऐड़ी टेड़ी पगिया पै फुलरी पारूं। "पुरूषोत्तम" प्रभु की छवि निरखें तन–मन–धन जीवन वारूं।।2।।

294. मैं तौ मलूंगी गुलाल तेरे गालन में। गाल गुलाल नैन बिच कजरा बैनी गुहों तेरे बारन में।।1।। आज कसक सब दिन की काढूं बेंदी दऊँ तेरे मालन में। चंदसखी तोहि पकरि नचाऊँ बीर बनूं ब्रज बालन में।।2।।

295. गलियन बिच धूम मचावौ री। ग्वाल बाल लिये कुंवर कन्हैयाँ नित उठि भोर हि आवैरी हाथ अबीर गुलाल फेंट भर गागर रंग ढुरावै री।।1।। सुनि अति हो ऊधम रसिया कौ जियरा अति डर पावै री।।2।। बाजत ताल मृदंग बांसुरी गारी और सुनाव री। "सूरदास" प्रभु की छवि निरखें नैनन हा–हा खावै री।।3।।

296. नन्द के द्वार मची होरी। उत मे ठाडे कुँवर कन्हैया। इत ठाड़ी राधा गोरी।।1।। पाँच बरस के कुँवर कन्हैया सात बरस को राधा गोरी।।2।। हाथ में लाल गुलाल फेंट भर, डारत है भर–भर झोरी।।3।। "सूरदास" प्रभु तिहारे मिलन कुँ। अवचिल रहियो यह जोरी।।4।।

297. मेरे नैननि में पिचकारी मारी नन्द दुलारे नै।।1।। मैं जमुना जल भरन जात वा सकर गिरारे में।।2।। दौरी दैकें पकरि लई मनसुख बजमारे नैं।।3।। इतनें में ढिंग आय सखी वा कान्हा कारे नैं।।4।। कर दीनों सरबारे रंग में प्राणन प्यारे नैं।।5।। भगवत "रसिक" भक्ति मैं चाहूँ चरण तुम्हारे में।।6।। है जाय वेड़ा पार नाथ भाव सिंधु अपारे में।।7।।

298. हो होरी खेलूंगी श्याम संग जाय। सजनी भागीन तें फागुन आयो।। वो भिजोवे मेरी सुरंग चुनरियाँ में भीजीवुं वाकी पाग। मुठ्ठी भर डालु गुलाल। भागीन तें फागुन आयो।।1।। चोवा–चोवा चंदन और अरगजा। रंग की परत फुंवार। पिचकारी दिनी मार। भागीन तें फागुन आयो।।2।। लाज नीगोड़ी रहों चाव जावो। मेरो हियरो भर्‌यो अनुराग। होरी को बड़ो खिलवार। भागीन तें फागुन आयो।।3।। आनंद घन खेलो सुघड़ बालम सों।। मेरो रहियो हे भाग सुहाग। होरी को बड़ो त्यौहार। भागीन तें फागुन आयो।।4।।

299. श्यामा श्याम सौं होरी आज नई, नंद–नंदन कुँ राधे कीनो माधव आपभई।।1।। होरी खेले सखा सखी भये सखी सखा भई यशुमति भवन गई।।2।। बाजत ताल मृदङ्ग झांझ ढफ नाचत थेई–थेई।।3।। गोरे श्याम सांवरी राधे यह मूरति चितई।।4।। पलट्‌यो रूप, देख यशुमति की सुध बुध बिसरि गई।।5।। "सूर श्याम" कौ वदन विलोकत उघर गई कलई।।6।। होरी खेलत आज नई।

300 होली कैसे खेलूँ री या सामलिया के संग, रंग में होरी कैसें। कोरे–कोरे कलश मँगाये, घोर्यो केशर रंग, भर पिचकारी सन्मुख मारी, घूँघट है गयौ तंग, तवला बाजै सारंगी बाजै और बाजे मुंह–चंग, साँवरिया की बंशी बाजै, राधे जु के संग, चूँदरी भिजोई (मेरौ) लहँगा भिजायो छूटौ किनारी रंग, "सूर" प्रभु कुँ कहां भिजोवै, कारी कामर अंग।।

301. आवै अचक मेरी वाखर में, होरी की खिलार अचक–अचक मेरे अँगना आवै आप नचै, और मोहि नचावै ननदुल देखै मेरी खोल किवार।।1।। डारत रंग करत रस बतियाँ सहज हि सहज लिपट जाय छतियाँ यह दारी तेरो लगवार।।2।। जानै कहा सार होरी की जानै बहुत घात चोरी की आखिर गायन को ग्वार।।3।। "सालिगराम" नैंक हंस बोलै कपट गाँठ हियरा की खोलै लिपटत होय गरै को हार।।4।

302. गौने आई इकनार बड़ी भोरी गोरी वदन बंक बाकी चितवन, बड़े–बड़े नैन उमर थोरी।।1।। कै तौ वाके चोरी माखन–कै चल संग खेलौ होरी।।2।। "रसिक" गोविन्द अभिराम श्यामघन बहुत गई रह गई थोरी।।3।।

303. चिरजीवौ होरी के रसिया। नित प्रति आओ मेरें होरी खेलन नित गारी नित ही रसिया।।1।। जों लों सूरज उदय रहैं तौ लों बृज में तुम बसिया।।2।। "हरीचंद" इन नैन सिरायौ पीत पिछौरी कटि कसिया।।3।।

304. छैला यै आज रंग में बोरी री सखी री लग्यौ हमारौ दाव।।1।। केशर घोर याके अंग लगावौ करौ कारे ते गोरो री।।2।। जिन हो भुजा गिरिराज उठायौ तिन भुज पकरि मरोरी री।।3।। "आनँदघन" याहि पकरि नचावौ हा–हा खाय तो छोरौ री।।4।।

305. डफ बाज्यौ रे छैल मतवारे कौ। डफ की गरज मेरी सब घर हाल्यौ–हाल्यौ खम्भ तिवारे कौ।।1।। ढफ की गरज मेरौ सतवन हाल्यो–हाल्यो झुब्वा नारे की।।2।। "पुरसोतम" प्रभु की छबि निरखें यह रसिया नँद द्वारे की।।3।।

306. वृन्दावन मोहन दधि लूटी। कहाँ तेरौ हार कहाँ नकबेसर कहाँ मोतिन की लर टूटी।।1।। जाय कहूँ यशुमति के आगें झक झोरत मटुकी फूटी। "सूरदास" प्रभु तिहारे दरश कुँ सरवस दैं ग्वालिन छूटी।।2।।

307. होरी खेलन आयौं श्याम आज याहि रंग में बोरौ री।। कोरे–कोरे कलश मंगाय वामें केशर घोरौ री। लोक–लाज कुल–मर्यादा फागुन में तोरौ री।।1।। मुखते केशर मलौ करौ कारे ते गोरौ री। हाथ जोर के करी विनती याकी तनियाँ तोरौ री।।2।। सब सखियाँ जुरि मिलि कें या कुँ मग में घेरौ री। रतन जटित पिचकाई याके सन्मुख छोड़ौ री।।3।। हरे बाँस की बाँसुरिया याहि तोरि मरोरो री। "चंद्रसखी" यों कहें आज बनि आयौ भोरौ री।।4।।

308 होली तरे व्रजवासी खेले
होली तो व्रजवासी खेले, खेले व्रजनी नार होली आवी रे,
जमुना कांठे खेली रह्या छे नंदजीना लाल......... होली
मोर मुगटने काने कुंडल उड़े अबील गुलाल......... होली
पीला तो पीतांबर पेर्या पिचकारी तैयार .... होली
सामा सामी भरी पिचकारी छांटे गोपीने ग्वाल .... होली
के सुडानो रंग रुपालो उडे माजम रात .... होली
सहु गोवालिया संग कनैयो आवे जमुना घाट .... होली

वसंतना तो वायु वाया चाले चमकती चाल .... होली
फागण आव्यो फुलडे छायो जोबन बंती नार......... होली
अंगो अंग बहु उमंगे रसीयाजी रसदार .... होली
गिरिराज मंडलना स्वामी शामलाजी उतारो भर पार......... होली

309 गोवर्धनवासी सांवरेलाल
साखी : चालो सखी जहां जईए जहां बसे व्रजराज
गोरस बेचंत हरि मिले एक पंथ दो काज
गोधन को पति कानुडो, धरती को पति इन्द्र
तारो को पति चंद्रमां, गोपीनो पति गोविंद
बंक, सप्त, रस, द्रष्ट है, दर्शन, मन अभिलाप
पूर्ण लोक मन्मथ, रटण, कुंज सदन निज बास
श्याम बरन गिरिवर धरन, गोपीजन चितचोर,
ब्रजराज कुंवर जीय में बसो, सुंदर नंद- किशोर.

310 डोल-झूलनोत्सव ।। सारंग।। झूलत डोल राधिका संग। गोबरधन परबत के ऊपर, खेलत अति रस रंग।। प्रथम खेल राधे मन हुलस्यौ, केसर लिपटे अंग। दूजौ खेल रच्यौ चंद्रावलि, अबीर गुलाल सुरंग।। तीजौ खेल कियो ललितादिक, अगिन कुमारी संग।। चौथौ खेल कियौ वृंदाबन, मोह्यौ, 'रसिक' अनंग।।

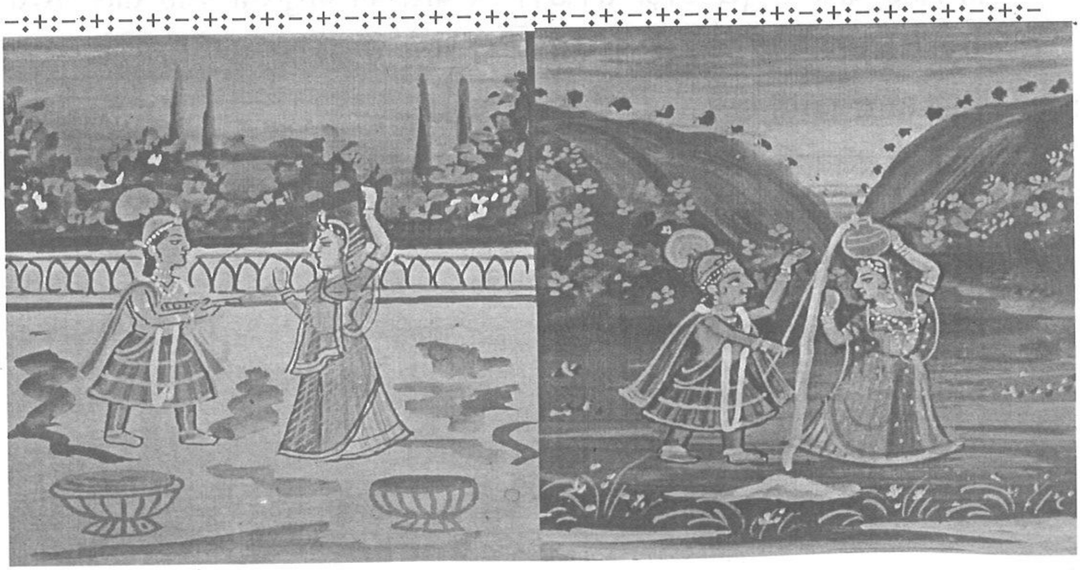

सगाई व रास लीला, माटी, यमुलार्जुन

311 मंगाय दै बहू छोटी सी, मैया छीऊँ तेरे पाम। मैं बाबा कौ लाला छोटौ। माखन खाय भयौ अब मोटौ। खाली एक बहू को टोटौ। ब्रजरानी को लाड़िलौ देशन में सरनाम। अब तांई क्वारो रहूँ मैया बिगरो तेरोई नाम। ऐसी मंगवाय दै नथवारी मोतेऊ भोरी होय बिचारी नित्त जिमावै भर–भर थारी। गोदी लै पुचकारि के प्यार करै ले नाम। वह रूठै तो मनाऊँ पकरि कुंवरि के स्याम। सूधौ भोरौ मैं सबहिन ते। ऊधम अब न करूँ लरिकन ते। कछु–कछु डरपूं इन गोपिन ते। तोहू मोते चोर कहें जाऊँ न इनके धाम। ये झूंठी कै मैं बुरो याको न्याव करेगो राम।। सूधी तू मत जाने इन कूं। बहकावे ये ही न गिन इन कुं। मैर ई ख्याल परी निश दिन कुँ अब जब आवै सगाई चुप्पी करूँ सब काम। न्यौतो देऊ न बतासे इन्नै बसन न देउंगी गाम।। गुप्प–चुप्प कौ व्याह रचाऊँ। बाबा लै बरात कर आऊँ। गोपिन पै नांय गीत गवाऊँ। राति–राति में मैया व्याह कै आऊंगो घर माँहि। कौन गाम ते भई सगैया। झट्ट कान में कह दै मैया। सुन न लेय कहूँ दाऊँ भैया। लगे रहें सब ताक में सुबल तोष श्रीदाम। ये सब पक्के मुड़ चढ़े तेरौ भोरौ लाला श्याम। बिन हरदी रङ्ग चोखौई आवै। और लागे न एक छदाम।।

312. मैया कर दै मेरौ ब्याह मँगाय दै दुलहिन गोरी सी। गोरी गुनवारी होय भोरी सी बिचारी झलकारी नथवारी बड़े गोप की लली–लली ढूंढ़ दैरी मोय यामें तेरौ कहा जाय। झट्ट दुलहा बनाय। बात मान लै भली। छोटे हातन बीच रचाय दै मँहदी थोरी सी। थोरी सी बरात ग्वाल बाल पाँच सात मलि हरदी मौ गात शाष सैहरौ बंधाय। धाय कर पूरी रीति गोपी गाय दैंगी गीत दै–दै नयौ पट पीत बागौ रेशमी धराय। धर मुकुट व्याहवे जाऊं कछाय दै कछनी कोरी सी। कोरी करै बात बुरौ बलदाऊ भ्रात लैन जाऊँगो बरात राखे कबहूँ न मेल। ताते भोरो कहै तू हुँ झट ढूंढ़ देरी बहू सब बन गयो खेल। खेलन वा दिन घर आई काऊ की छोरी भोरी सी। भोरी ऐसी ढूंढवाय, लेय गोदी में बैठाय, रूठ जाऊँ ले मनाय। मन कर राखै बश वस बाबा ते बचाय। मेरी व्यार करै आय हौले–हौले बतराय आवे बातन में रस–रस गाहकदुलहिन नेक हम हू बताय श्याम प्रीति बढै चंद्र चकोरी सी।

313. दुलहन प्यारी राधारानी जाकौ दुल्हा नंदकुमार। मथुरा में भये प्रकट मुरारी, तुरंत करी गोकुल की त्यारी। खेंचौ क्षीर पूतना मारी, गिरवर धार भये गिरधारी।। मानसी गंगा भरी दूध की, कलि में निकसै धार।। दुल्हन०।। बाजी बंशी जमुना तट पै, श्रीवृंदावन बंशी वट पै। छाय रही छबि जाके मोर मुकुट पै, जाऊँ बलिहारी पीर पट पै। कुसुम सरोवर के कदमन में, नित प्रति करत बिहार।। दुलहन०।। नंद गाम में गाय चराई, जहाँ श्रीराधा खेलन आई। लै गये हरि घर संग लिवाई गोद भरी भई श्याम सगाई।। संकेत बन में भयौ ब्याहुंलौ, बरसाने ससुरार।। दुलहन०।। बने श्याम मालिन मनिहारी, पट बिन जोगिन, सुघड़ सुनारी। रंग रेजन बन गये लिलहारी, हिरदै बसें राधिका प्यारी "घासीराम" जुगल जोडी पै, "छीतरमल" बलिहार।। दुलहन०।।

314. राधा की छबि देख मचल गयो सामरिया। हंस मुसिकाय प्रेम रस चाखूँ, तोय नैनन बिच ऐसे राखूँ। ज्यों काजर की रेख परेंगी तोते भामरिया।।1।। तू गौरी वृषभान दुलारी, मैं छलिया मेरी चितवन कारी। कारौ ही मेरो भेष कि कारी कामरिया।।2।। मैं राधा तेरे घर आऊँ, अंगना में बांसुरी बजाऊँ। नृत्य करूँ दिल शेख कमल कर थामरिया।।3।। अपनी सब सखियां बुलवायलै, हिल–मिल के मोय नाच नचवायले। गढ़े प्रेम की मेख ठुमक चले पामरिया।।4।। बरसाने की राधा प्यारी बृंदावन के बांके बिहारी सुखसागर में लेख तू ग्वालिन गामरिया। राधा की छबि देख मचल गयो०।।

315. बजाई बंशी मोहन नें, गोपिन कौ लै–लै नाम। शरद रितु पूरनमासी जान, जमुना तट अर्ध रेन उनमान। मुरली मधुर मनोहर तान, परी धुनि ब्रजनारिन के कान।। दोहा।। प्रेम प्रीति के बस भई, उठि धाई ब्रजनारि। तन मन की सुधि ना रही, उलटौ कर श्रृंगार।। सुतपति छोड़ मोड़ मुख सबते, तजे सबन घनश्याम।। बजाई०।। बजत बंशी तहाँ पहुँची जाय, कपट ते कृष्ण कहें समझाय। अर्धनिशि कैसे गई तुम आय, तुमन पति क्यों दिये बिसराय।। दोहा।। वे पति तो झूठे लगें, तुम साँचे लये मान। हम अर्धांगिनी आपकी, आप ही जीवन प्राण।। सर्वस आप हमारे स्वामी और कौन ते काम।। बजाई०।। सखियन मन छायौ सोच विचार, दृगन तें बहन लगी जल धार। कुरेदत भू कर नीची नार, जान गये घट को

जाननिहार।। दोहा।। मैंने तो हंसि के कहो, मेरौ यही सुझाव। कहूं युगल कर जोरि के, तुम तें नांय दुराव। सुन के मगन भई सब गोपी, समझाई घनश्याम।। बजाई०।। कियौ सूधी सिंगार संभार करहु सखियन संग रास बिहार। गर्व को गोपिन कौ जान अपार, ह्वै गये अंतर्ध्यान मुरार।। दोहा।। मुखिया लीनी संग में, जो सखियन सरदार। बाऊ कौ अभिमान लखि, छौड़ी बन मंझधार। घासीराम नाम "छीतरमल" रट रहै आठौधाम।। बजाई०।।

316. कियौ महारास प्रभु वन में, वृंदावन गुलम लतन में। वन की शोभा अति प्यारी, जहाँ फूल रही फुलवारी।। सोलह हजार ब्रजनारी, द्वै–द्वै न बीच गिरधारी।। झड़ ताथेई–ताथेई नचत, घुँघरू बजत, छम–छन छननन। सारंगी सनसन करत, तमूरा तननन। सप्त स्वरन सों बजत बाँसुरी, घोर भयौ त्रिभुवन में।। वृन्दा०।। बंशी कौ घोर भयौ भारी, मोहे सुर मुनि तप धारी। जड़ पशु पक्षी नरनारी शिव समाधि खुल गई तारी। झड–सुन जमुना जल गयौ अचल, शिथिल भये सकल, जीव बनचारी।। मनमोहन बीन बजाय मोहिनी डारी।। जहाँ के तहाँ थिर रहे, परी ध्वनि बंशी की श्रवनन में।। वृन्दा०।। जब उठि धाये त्रिपुरारी, जमुना कहै रोक अगारी। गुरू दीक्षा ले औ हमारी, तब करौ रास की त्यारी।। झड़–नहीं पुरूषन को अधिकार, करौ श्रृंगार नार बन जाओ। तब महारास के दरशन परसन पाऔ जमुनाजी के वचन सुने, शिव जान गये सब मनमें।। वृंदा०।। जब खाय भंग कौ गोला, जमुना में धोय लियौ चोला। गोपी बन गये बंभोला, यों नवल नार अनबोला।। झड़–जहाँ है रह्यौ रास–विलास, पहुँच गये पास, भए अनुराग। शिवशंकर सखियन के संग नाँचने लागे।। भूल गये कैलाश बास, हरि हैं रहे मगन–लगन में।। वृन्दा०।। गोपिन संग नृत्य करौ हैं, हिरदै आनंद भरौ है। जब शिव पहचान परौ है, गोपेश्वर नाम धरौ है।। झड़–सब गोपी भई प्रसन्न, धन्य प्रभु धन्य, मधुर बीना की। कर महारास निशि, कीनो छै महीना की।। 'घासीराम' कृपा सों छीतर बस रह्यौ गोवरधन में।। वृन्दा०।।

317. शिव नें महारास देखन कूं, मोहिनी रूप धर्यो नारी। शम्भु ने लटा लई हैं सूत, पार लई बैनी पटिया गूँथ।। भेष बदलौ अपनों अवधूत।।

(दोहा) – मुद्रा धरे उतार कें, लिये झूमका पहर। सुन्दर नेत्र कपोल पै, लट

नागिन सी लहर।। लहंगा चोली पहर, शीश पै ओढ़ लई सारी। शिव नें पहर कर में चूड़ी नगदार ककनियां दूआ गजरे डार, देत हाथन हथ फूल बहार।।
(दोहा) – कड़ छड़े लच्छे पड़े पायजेब अनमोल। साँक बाँक और नेबरी बिछुआ और रमझोल। बाजु भुजन चढ़ाय चंग बाजे हैं अति प्यारी।। शिव नें०।। नैन में सुरमा लीनों सार, नाक में नथली झलकेदार। कान में करण फूल लिये डार।
(दोहा) – जौ माला हीरन लड़ी, कठला चौकीदार। पचमनियां और पाटिया, गुलीबंद और हार साँकर छल्ली पहर, करी वृन्दावन की त्यारी।। शिव नें०।। बन गये सोलह साला बाल, चले जाँय गजमत ठुमका चाल। देख छबि 'घासो' भये निहाल।।
(दोहा) – वृन्दावन के रास में पहुँचे जाय महेश। मिले सखिन के झुण्ड में, कर गोपी को भेष।। कृष्ण लियौ पहचान कह्यौ गोपेश्वर त्रिपुरारी ।। शिव नें०।।

बंसी लीला

318 राधे प्यारी श्री वृषभान–दुलारी बंसी दीजै मोय। या बंसी बिन चैन न पाऊं, बंसी बिन कैसे गाय चराऊं, जाके बल गिरिराज उठाऊं। शिव ब्रह्मा सनकादिक या को पार न पावे कोय।।1।। कैसी बंसी श्याम तिहारी, हम ने नेक न नैन निहारी, तुम छलिया हम भोरी–भारी। झूठौ दोष लगावै लाला, बन में खोई होय।।2।। तुम सब चतुर मुखर ब्रजनारी, तुम ने बंसी लई हमारी, कैसे समझूं भोरी–भारी। तनिक दही के कारण वा दिन, गारी दीनी मोय।।3।। चोरी करै खाय सो गारी, यहाँ को चेरी बसै तिहारी, को डरपै तुमसे ब्रजनारी। आधी रात भजे मथुरा ते लाज न आई तोय।।4।। तोसी लाखन गोवर हारी, छाछ मांगि ले जाय बिचारी, आंख दिखावै पीरी कारी। मिलै अकेली जा दिन बन में, जब देखूंगौ तोय।।5।। हमें दिखावत हो ठकुराई, नंदबाबा के गाय चराई, घर ही में बढि रहे कन्हाई। तनक छाछ पर नाच दिखावौ, कहा सिखावौ मोय।।6।। भक्तन हित यह देह हमारो, तू कहा जाने जाति गंवारी, बंसी तीन लोक ते न्यारी। श्रवन सुनत सुर नर मुनि मोहे, जल–थल नाद समोय।।7।।

बाल–लीला

319 यशोदा सुन माई, तेरे लाला नें माटी खाई। अद्‌भुत खेल सखन संग खेल्यौ, इतनों सौ माटी कौ डेल्यो। तुरत श्याम ने मुख में मेल्यौ, याने गटक–गटक गटकाई।।1।। क्यों लाला तैनें खाई मांटी, माखन कूं कबहू नाँय नाँटी। धमकावै जसुदा लै सांटी, जाय नेक दया नांहि आई।।2।। ऐसौ स्वाद नांय माखन में, नहिं मिश्री मेवा दाखन में। जो रस व्रज रज चाखन में, जानें मुक्ति की मुक्ति कराई।।3।। मुख के मांही आंगुरी मेली, निकर परी मांटी की ढेली। भीर भई सखियन की भेली, जाय देखें लोग लुगाई।।4।। मोहन को मुखड़ो खुल गयो, तीन लोक वैभव दरशायौ। जब विश्वास जशोदाए आयौ, ये तो पूरन ब्रह्मा कन्हाई।।5।। ब्रज रज कूं सुर नर मुनि तरसें, धन्य भाग्य जो नित प्रति परसें। जिन की लगन लगी होय हरसें, कहे "घासीराम" यह लीला सुनाई।।6।।

यमलार्जुन लीला

320. कारज भक्तन के करिवे कूँ, हरी ऊखल ते गये बंधाय। जसुदा गोदी लै पय प्यावे, मौहन अपनों खेल दिखावे। चूल्हे धरौ दूध उफनावै।। कृष्ण दिये बैठाय, जसोदा ने दूध सम्हारौ जाय। कारज०। तब मोहन मन में रिसियानों, मोते अधिक दूध कूं जानों। करन लगे अपनों मन मानों।। लोढ़ा मार मॉँट फोड़ डारे, दूध दियो फैलाय। कारज०। मन में डर मैया कौ लागौ, तुरत श्याम घर भीतर भागौ। दूध दही और माखन चाखौ।। आवत खात खबाबत बन्दर, मथनीन फोरत जाय। कारज०। आवत देखो मात कन्हाई, भाग दिये ना देर लगाई। जसुदा सांटी हाथ उठाई। आगे भगे गुपाल, पिछारी भगै जसोदा माय। कारज०। भगत–भगत भइयै नकमानी, थक कें, बैठ गई नँदरानी। जब मोहन हृदय की जानी। रोये मात के आगे आय कें, हाथ दियौ पकराय। कारज०। जसुदा ने पकरे कुँवर कन्हाई, ब्रज गोपी देखन कूँ आई। बन्धन कूँ नेती संग लाई।। इतनी नेती बँधे न मोहन, जो दीनी उन लाय। कारज०। घर–घर ते डोरी फिर लाई, डोरिन में नेती जुरबाई। तऊ गाँठ नाँय पूरी आई।। रह्यौ न बाँधन कूँ या ब्रज में, बैठ गई सरमाय। कारज०। पीछे भक्तन की सुधि आई, एकई डोर में गये बँधाई। जसुदा लगी काम में जाई।। ऊखल खैंच दोऊ वृक्षन के, बीच दिये अटकाय। कारज०। झटका मार घरनी दोऊ डारे, चरन छुअत मनस तन धारे। कर दर्शन निज लोक सिधारे। 'घासी–राम' दास लीला पै, बार–बार बलि जाय। कारज०।

321. मारै मत मैया वचन भरवाय लै मारे मत मैया। मैं तेरौ माखन खायौ ना, माखन खायौ ना। मरै०। गंगा की खबाय ले चाहै जमुना की खवाय लै, दाऊ भैया पै चाहै हाथ धरवायलै। मैं तेरो माखन खायो ना।। मारे०। लकुटि कमरिया धर जाऊंगो (2), लौट कै घर फिर नहिं आऊंगो (2), जो हंसि कंठ लगायौ ना। माखन खायौ ना। मारे०।। मैं बाबा कौ लाला छोटौ (2), माखन खाय खाय भयौ मोटौ, तैने कबहु दूध प्यायौ ना। माखन खायौ ना। मारे०।

गिरिराज लीला

322 नख पै धर कें गिरिराज नाम गिरधारी पायौ है। सुरपति पूजा बन्द कराई। श्री गोबरधन कूं पूजवाई। नन्द बाबा और जसुदामात, संग में बलदाऊजी भ्रात।। सकल परिवार कुटुम लै साथ, करी पूजा विधि सों निज हाथ।

(दोहा) – एक रूप ते पुजत हैं, एक ते रहे पुजाय। सहस्त्र भुजा फैलाय के माँग–माँग के खाय।। सवा लाख मन सामग्री को भोग लगायो है। नख पै०।। ब्रजवासी ब्रजगोपी आई। बही पकवान डला भरलाई। चली कोई उलटी पड़िया पार, चली कोई एक दृग अंजन सार। कान में नथली झलकेदार, नाक में करनफूल लिये डार।।

(दोहा) – उलटे सीधे अंग में गहने लीने धार। उलटे पहरे वस्त्र सब, उलटी कर श्रृंगार।। प्रेम मगन बस भई बदन की होश गमायी है।। नख पै०।। पूजन कर परिकम्मा दीनी। कर दंडौत अस्तुती कीनी।। सबन मिल बोलौं जै जैकार। बढौ सुरपति कूं क्रोध अपार। मेघमाला से कहैं ललकार कि ब्रज कूं कर देऊ पनियाढार।।

(दोहा) – उमड़–उमड़ कर घेर ब्रज, उठी घटा घनघोर। चम चम चमके बीजरी, चोंकें बृज के मोर।। मूसलधार अपार मेह सुरपति बरसायो है।। नख पै०।। ब्रजवासी मन में घबड़ाये। कृष्णचंद्र के जोरे आये। कोप इंदर ने कीनों आज, सहाई कीजै अब महाराज छोड़ ब्रज कहाँ कूं जावें भाज, आपके हाथ हमारी लाज।।

(दोहा) – लाज आपके हाथ है, ब्रज कूं लेउ बचाय। जो उपाय कछुना करौ, पल में ब्रज बह जाय।। श्री गिरिराज मुकुट बारे ते ध्यान लगायौ है।। नखे पे०।।

ब्रजवासिन मन धीर बंधायौ। सबरौ ब्रज इकठोर बुलायौ। लियो गोवरधन नख पै धार, दाऊ हल मूसल रह्यौ सम्हार।

323 लग रही आस करूं वृजवास, तरहटी गोवर्धन की में।। भजन करूं और ध्यान धरूं, छैया कदमन की में। सदाँ करूं सतसङ्ग मण्डली, संत जनन की में।।लग०।। पलकन उगर बुहार रेणुका, ब्रज गलियन की में। शीश चढा रज अङ्ग लिपटाऊं, कृष्ण चरन की में।लग०।। करूं गङ्गा अस्नान मानसी, हरन अघन की में। अभिलाषी प्यासी रहें अखिया, हरि दरशन की में।।लग०।। भूख लगै घर–घर ते भिक्षा, अरूं द्विजन की में। यमुना जल में धोय भेट करूं, नन्द नंदन की में।।लग०।। सीत प्रसादहि पाय करूं, शुद्धी निज तन की में। सेवा में मैं सदा रहूँ नित, ब्रज भक्तन की में। 'घासीराम' शरन पहुँचे, गिरिराज धरन की में। लग रही आस करूं ब्रजवास, तरहटी गोवर्धन की में।

324. ब्रज में श्री गोवर्धन धाम, परम धाम हुते नीकौ है।। मानसी गंगा निर्मल नीर, सुगंधित शीतल मंद समीर। होय न्हाये ते सुफल शरीर, मिटें पातिक पापन के पीर।। (दोहा) – ऐसे या कलिकाल में, निकसै धारा क्षीर। दरश आचमन करत हित, है जाय भारी भीर।। अद्‌भुत आनन्द निरख मिटत है, सब भ्रम जी की है। ब्रज में० निरख छवि मुखारविन्द की ओर, चपल चंचल चितवन चितचोर। मनोहर बाँकी मुकुट मरोर, लटक रहे नील पीत पट छोर।।

(दोहा) – एक रूप गिरिराज कौ, धारयौ नंद किशोर। एक रूप से सात दिन, धर लियौ नख की कोर।। मान इंद्र कौ मार, कहायौ ब्रजपति टीको है। ब्रज में० लेऔ हरिदेव हिये में धार, कि मंसा देवी सिंह सवार। धन्य श्री ब्रह्मकुंड बलिहार, सामने चकलेश्वर त्रिपुरार।।

(दोहा) – नंद जशोदा कृष्णजी, और शेषा अवतार। फिर आगे गिरिराज पै, इंद्रदेव दरबार।। करै मनोरथ सिद्ध सकल दाता सब ही कौ है। ब्रज में० न ब्रज रज महिमा होय बखान, करें पहिचान परम सुज्ञान। सदाँ भक्तन के जीवन प्रान, देवतन कूँ अति दुर्लभ ध्यान।।

(दोहा) – मुक्ति की मुक्ति करै, परम पवित्र महान। पूरन प्रेम प्रभावते, खाई श्रीभगवान।। "घासीराम" नाम बिन छीतर, सब जग फीकौ है। ब्रज में०

325. राधा कुण्ड राधिका रानी, जाकी महिमा जगत बखानी। राधा कुण्ड परम ब्रजभूमि, तहाँ सघन लता द्रुम लूमी।।

(दोहा) – राधाकुण्ड निवास करे, भजिये राधेश्याम। राधा कह बाधा कटे, ऐसो राधा नाम।। ऐसो राधा नाम, परम धन लूटें ज्ञानी ध्यानी। राधाकुण्ड कार्तिक बदी अष्टमी आवै, देश विदेशी मेला ध्यावै। करें मिल जुगल कुण्ड अस्नान, दान करते हैं वित्त समान। मिलें मन वाँछित धन संतान।।

(दोहा) – यह फलदायक पर्व है, भाखें वेद पुरान। प्रेम भाव भक्ति बढ़े, परम मोक्ष कल्यान।। परम मोक्ष कल्यान, अन्त में मिलै अटल रजधानी।। राधा कुण्ड० गोप कुआ कौ जिन जल पीयौ, जीवन जनम सुफल कर लीयौ। धन्य ब्रजवासिन कौ सतसंग, कि याके जल में छानें भंग। छान कें भंग लगा में रंग।

(दोहा) – रंग लगा में भंग कौ, दाऊजी कौ भोग। भंग भवानी तें, सदाँ, काया रहै निरोग।।

326. अति पावन परम पुनीत, निकट जमुना के गोकुल धाम।। मथुरा ते प्रभु गोकुल आयेजी। नन्द भवन में गावत बधायेजी।। कि गोकुल में झूले पलना, बन गये जसुमति के ललना। कंस कौ कीयौ दल मलना।।

(दोहा) – निर्मल जमुना जल कियौ, यासों यम दुहलाय। ब्रजवासिन के भाग्यधन, नित प्रति जमुना न्हाय।। पान करें और ध्यान धरें, ह्रदय में आठों याम।। अति०।। पुरजन ब्रजवासी गोकुल के जी। सेवक स्वामी श्रीबल्लभ कुल के जी।। कि जै जै० श्री गोकुलाधीश, कि सेवक सदाँ नवामें शीश। भक्त को निश्चौ बिश्वे बीस।।

(दोहा) – निश्चौ विश्बे बीस है, साँचे मन को भाव। मंझधार से पार हो भवसागर की नाव।। श्री वल्लभ, श्री वल्लभ, श्री वल्लभ को रटिये नाम। अति० महा प्रभु देवन के देवाजी। कंठी बंध करें सब सेवाजी।। सुभग सुन्दर ठकुरानी घाट, रहें तहाँ विप्र जनन के ठाट। निरख रहे परदेसिन की बाट।।

(दोहा) – ठकुरानी के घाट की, महिमा अपरम्पार। इन्द्रपुरी ते अधिक हैं, कालिन्दी की धार।। रमन रेतियन रास रचायौ, राधावर घनश्याम। अति० सिरी एक सौ आठ गुंसाईजी। धर्म खम्भ इन के सम नाईजी।। बिराज रहे गद्दी सात सरूप, कि इनकी झांकी अधिक अनूप। आज्ञाकारी बड़े–बड़े भूप।।

(दोहा) – श्रीबल्लभ गुरूदेव की धर्म ध्वजा फहराय। कलिकाल की आज दिन,
इन सों नहीं बस्याय।। सेवक स्वामी बल्लभ कुल के द्विजवर 'घासीराम'। अति०।
327 ब्रज कौ बास मिलै वाहीं कूं लिख रह्यौ जाके भाग में।। अधिक सुरपुर ते ब्रज
कौ वास, प्रेम पूरन कर मन विश्वास। रहौ बन हरिदासन के दास, होयगौ पूरन
मन अभिलाष।।

(दोहा) – माया ममता छोड़ कें, तजौ पराई आस। निशि दिन कुँजन में निरख,
प्रिय प्यारी कौ रास।। परम पदारथ पावै प्राणी, तृष्णा त्याग में, ब्रज कौं० तरहटी
गिरिवर की में डोल, सदां सुख राधा कृष्ण बोल। निरख छवि घटके पट कूँ
खोल, पारलौकिक निधि परम अमोल।

(दोहा) – धन्य कन्दरा कुसुम वन, चरें गउन के टोल। कदम करीलन में जहाँ
कर रहे कृष्ण किलोल।। वेद धुनी गये भूल, ब्रह्म बंशी के राग में। ब्रज कौ०
मानसी गंगा कर स्नान, पूज श्री गोवरधन भगवान। लगाऔ परिकम्माघर ध्यान,
कुण्ड–कुण्ड कौ कर ले औ पान।

(दोहा) – प्रेम सहित करते रहौ, गोविन्द के गुण गान। मन की मस्ती में सदाँ,
घोट छान मत मान।। ब्रज तजि कें मत भटकैं, मनुवा काशी प्रयाग में। ब्रज कौ०
गोरधन निज वृन्दावन धाम, भावते भक्ति करैं विश्राम। स्वांस स्वासन पै लै
हरिनाम, रटौ निसि बासर आठों याम।।

(दोहा)–भक्ति भरोसे ते रहे, भजें काम निष्काम। तिन कौ ब्रजवासी सफल, करें
राधिका श्याम।। 'घासीराम' कृपा ते छीतर रहै अनुराम में। ब्रज कौ०
328. राजत जहाँ मानसी गंग, तहाँ मुख श्री गिरिराज कौ।। मानसी गंगा नीर न्हवाय,
दूध धौरी कौ दियौ चढ़ाय। दियौ कुमकुम कौ तिलक लगाय, पुष्प माला दीनी
पहराय।।

(दोहा) – एक रूप गिरिराज कौ, लियौ कृष्ण ने धार। माँग–माँग के खात हैं
भुजा हजार पसार।। एक रूप तें कहें, करौ या पूरन काज कौ।।राजत०।। अूजबे
ब्रज मंडल रह्यौ छाय, भोग सब घर–घर ते लाय। करे परिकम्मा हीरो गाय बोल
रहे जे कारे हरषाय।। (दोहा) – बदरौला घर रह गइ, पहुँच सकी ना आय। बाहू
के धरते लियौ, दीनी भुजा बढ़ाय।। छाय रह्यौ आनन्द बिरज में, सकल समाज

कौ। ।राजत०।। सुनी सुरपति ने कीयौ जोर, घुमड़ के घटा उठी घनघोर। गरज सुन–सुन कें कौहकें मोर, घोर अँधियार भयौ चहुँ ओर।।

(दोहा) – बृजवासी श्री कृष्ण ते, अस्तुति करत निहोर। इन्दर ब्रज कूं छिनक में, देगौ जल में बोर।। तुम बिन और न कोई दीखै, राखन लाज कौ।।राजत०।। कृष्ण ने गिरिवर लियौ उठाय, पहर छप्पन दिन रात बिताय। इन्द्र जल हार गयौ बरसाय, पर्‌यौ चरनन में शीश नवांय।।

(दोहा) – पूजा सुरपति ने करी, सब अभिमान बिहाय। कीयौ जो अपराध सब, लीयौ क्षमा कराय।। 'घासीराम' ध्यान धर छीतर, बृज सरताज को।।राजत०।।

329. साँचे भाव भक्ति की परिकम्मा, श्री गोवरधन की है। प्रथम करौ स्नान मानसी जी, सकल पाप कट जाय आनसी जी प्रेम ते पूजौ श्रीगिरिराज, साज पूजा कौ सकल समाज। करिंगें पूरन मन के काज, सदाँ राखें भक्तन की लाज।।

(दोहा) – गोवरधन कूँ पूज कें उद्धवकुण्ड गये आय। भंग मिरच बादाम लै, बूंटी लई बनाय।। घोट छानके चले निरख छबि गऊ बछरन की है।। साँचे०।। यहाँ ते चल राधाकुण्ड आयेजी, राधा कृष्ण कुण्ड में न्हाये जी। विशाखा ललिताजी के कुण्ड, रहे जहाँ बंगाली मुछमुण्ड। गोप कूआ गोपिन के झुण्ड, चले रामानन्दी तिरपुण्ड।। (दोहा) – बैठक बल्लभदेव की, धरि मेवा कौ भोग। प्रेम सहित झारी भरी, भोग लियौ आरोग।। झाँकी गोविन्द गोपीनाथ, मदन मोहन की है।। साँचे०।। कुसुम सरोवर की छवि न्यारी जी, लतन–पतन फूली फुलवारी जी। निरख झाँकी मन्दिर हनुमान, दियौ उद्धव गोपिन कूं ज्ञान। अगारी नारद कुण्ड अस्थान, सामने ग्वाल पोखरा जान।।

(दोहा) – किलोल कुण्ड अस्थान पै, कीयौ कृष्ण किलोल। हरि गोकुल आवत भये, गिरवर की जै बोल।। बनी छत्तरी राजा की, शोभा सुवरन की है।। साँचे०।। श्री हरिदेव गिरीश उठैया जी, ब्रह्मकुण्ड तट मंसा मैया जी, धर्म रोचन ऋण मोचन पान, दान घाटी पै लीयो दान। तुरत कीयौ आन्यौर पयान, कटोरा दही चिन्ह पहचान।।

(दोहा) – गोविन्द कुण्ड और अप्सरा, नवलकुण्ड विश्राम। लौठा के दरशन करौ, जहाँ पूँछरी गाँम।। सुरभी कुण्ड कदमखण्डी, छैयाँ कदमन की है।। साँचे०।।

अहिरापति हरजी कुण्ड आचमन। जतीपुरा के दरशन परसन।। शिखिर पर प्रगट भये श्रीनाथ, बने हैं चिन्ह नवाऔ माथ। गुफा की थाह अथाह दिखात, जोर लेऔ दूध सिला कूँ हाथ।।

(दोहा) – ठाकुर सात स्वरूप के, कर दरशन धर ध्यान। बैठक भोग धराय कें, आये जान अज्ञान।। बड़े बजार अगार निरख छवि, सखियन वन की है। साँचे० जै लक्ष्मीनारायण जी की रे, दण्डौती उठती सब ही की रे, जसोदा नन्द कृष्ण बलराम, करौ चकलेश्वर कूँ परिनाम। कि दर्शन करौ किशोरी श्याम, लक्ष्मीनारायण सुख धाम।।

(छन्द) – दण्डौत कर गिरिराज की, कर देय बेड़ा पार है। मन की मनोरथ माँग लै, दातार कौ दरबार है। दो रूपते पूजौ पुजायौ, सहस्त्र भुज लई धार कें। गिरिवर उठायौ, ब्रज बचायो, इन्द्र बैठौ हार कें। 'घासीराम' नाम को छीतर, रज चरणन की है।। साँचे०।।

330 भारी परी भगत पै भीर, भरोसो गिरबरधारी कौ।। भँवर में पड़ी नाव मँझधार, न दीखै कोई खेवन हार। दीन की सुन दुःख भरी पुकार, लेऔ डूबत ते मोय उबार।। (दोहा) – नाव पुरानी पड़ गई, भारी भर रह्यौ भार। खेवटिया बनकें प्रभू, दीजै पार उतार।। तुम बिन कोई और न दीखे, दीन दुखारी कौ। भारी० बन्यौ कोई तीरथ व्रत न धाम, न मुख ते जपौ राम कौ नाम। किये सब खोटे काम तमाम, बिताये विरथाँ आठों याम।।

(दोहा) – माया ममता में कहूँ, मिल्यौ नहीं विश्राम। बिना भजन भगवान के, पायौ ना आराम।। झूठौ नातौ देखौ या सब दुनियाँ दारी कौ।भारी० आप निर्धन के धन भगवान, सदाँ सन्तन के जीवन प्रान। दास दीनन के दया निधान,कृपा कर करौ मेरौ कल्यान।।

(दोहा) – ना विद्या ना बाहुबल, निर्बल जान महान। करूणा निधिकरूणा सुनों, मूँद रहे क्यों कान।। तुम बिन कौन आज रखवैया, लाज हमारी की। भारी० भक्त तौ भये एक ते एक, आपनें तारे अधम अनेक। सदाँ भक्तन की राखी टेक, नहीं मेरे हिरदै भक्ति विवेक।।

(दोहा) – तपी न धूनी तन जरी, परी न चतर टेक। ऐसे अधम अबोध की, गढ़ रेख पै मेख।। 'घासीराम' दास छीतरमल, कृष्ण मुरारी कौ।भारी०

331 जै–जै गोवरधन महाराज, नाथ तुम भक्तन हितकारी। दानघाटी बारे गिरिराज, राखियो जन अपने की लाज।। आप हो भक्तन के सरताज।।

(दोहा) – कृपा आपकी ते रहें, अन्न–धन और कुटुम्ब। मुक्ति की मुक्ति करै, धन्य तरहटी भूम।।

(उड़ान)– पूजा लई छुड़ाय इंद्र ने गर्व कियौ भारी। जै जै० बीच में भरी मानसी गंग, लहर की अद्भुत उठे तरंग। करे अस्नान पाप होय भंग।।

(दोहा) – बच्छासुर कूँ कृष्ण नें, मारौ धरन पछार। ताहो केकारण प्रभों, मनसों प्रगटी धार।।

(उड़ान) – कार्तिक बदी अमावस कूँ, होय दीपदान भारी। जै जै० करें जो एक रात जागरण, कभी नहीं होय जनम और मरण।

(दोहा) – परिकम्पा जो कोई करै, कुण्ड–कुण्ड लै पान। जनम सफल है जायगौ, सुनलीजै गुणगान।। जाँय वो श्रीकृष्ण की शरण।।

(उड़ान) – कर दे नैया पार, नाथ वो गिरवर गिरधारी। जै जै० यही है 'घासी' की 'अरदास' सदा दीजौ गोवरधन बास।। रहूँ में सब गुणियों का दास।।

(दोहा) –सब गुणियों का दास हूँ, कीजै माफ कसूर। बार–बार वर माँगिहो, बनिहों ब्रज की धूर।। (उड़ान)–राधेश्याम जुगल जोडी पै, जाऊँ बलिहारी। जै जै०

332. ब्रज को राजा श्रीगिरिराज, मुकुटधर बंशी बारौ है। सुरपति की पूजा छुड़वाई, श्रीगिरिवर की दइयै कराई। एक तन गिरबर कौ धारौ, बन गयौ पुजवावन हारौ। एक नंदलाला कौ न्यारौ।।

(दोहा) – एक रूप ते पुजत हैं, दूजे रहे पुजाय। सहस भुजा फैलाय कें, माँग–माँग के खाय।।

(उड़ान) – माया रची अनेक, रूप एक–एक सों प्यारौ हैं।।1।। नारद ने जब खबर सुनाई, सुरपति कूं अति गुस्सा छाई। मेघमाला बुलाय सब हीं, कहीं ब्रज कूं बहाय देऔ अभी। मेरौ मन ठण्डौ होय तबही।।

(दोहा) – नाम न गिरवर कौ रहै, ब्रज में बचैं न कोय। इधर मेघ दल देख कें, ब्रजवासी रहे रोय।।

(उड़ान) – सुन पुकार ब्रजवासिन की, नख गिरवरौ धारी है।।2।। चक्र सुदर्शन लियौ बुलाई कह्यौ, बैठ गिरि ऊपर जाई, प्यास पानी की आज बुझाय, रह्यौ त्रेता ते प्यासौ आय, पेट भर पीलै खूब अघाय।।

(दोहा) – मूसल धारा जल पर्‌यौ, कियौ सुदर्शन पान। इन्दर बोलौ गर्व सों, देखूँ ब्रज की शान।।

(उड़ान) – पायें मोर कोंहोंक ते, तब सरमायौ भारौ है।।3।। मन में शरणागत की ठानी, भयौ कृष्ण अवतार मैं जानी, गऊ सुरभी लीनी मँगवाय, अश्व लियौ श्यामकर्ण सजवाय। संग अहिरावत लियौ लगाय।।

(दोहा) – थर–थर काँपत गात सो, चलौ गोरधन धाम। चरणन शीश नवाय कें, झुक के करो प्रणाम।।

(उड़ान) – द्विज 'घासी' कथा कहें, क्षम्य अपराध हमारौ है।।4।।

333 श्रीगोवर्धन महाराज, महाराज। तेरे माथे मुकुट बिराज रह्यौ।। तो पै पान चढै, तो पै फूल चढै दूध की धार–हाँ धार, तेरे माथे मुकुट बिराज रह्यौ।। श्री० तेरे कानन कुडंल सोहे रहै, तेरी ठोड़ी पे हीरालाल–हाँ लाल, तेरे माथे मुकुट बिराज रह्यौ।। श्री० तेरे गले में कंठा सोह रह्यौ, तेरी झाँकी बनी विशाल–विशाल, तेरे माथे मुकुट बिराज रह्यौ।। श्री० तेरे सात कोस की परिकम्पा, चकलेश्वर है विश्राम–विश्राम, तेरे माथे मुकुट बिराज रह्यौ।। श्री०

334. अरी तेरे सब संकट कटि जाये, पूजा गोवरधन की करि लै।। टेक।। अड्डे पै भीर बड़ी है। मोटर नाय एक खड़ी है, अरी तू चल दै चालम चाल, पूजा गोवरधन की करि लै।। अरी०।। जा मानसी गंगा नहिओ, गिरिराज कू माथ नवइयो, फिर परकम्भा कू जाय, पूजा गोवरधन की करि लै।। अरी०।। परिकम्पा में मिले भिखारी, दीजो भिक्षा उन कूँ डारी, अरी मिलि कें भजन उठाय, पूजा गोवरधन की करि लै।। अरी०।। मन्दिर जो बीच पडिंगे, पैसा एक–एक चढिंगे, अरी तू दर्शन करतो जाय, पूजा गोवरधन की करि लै।। अरी०।। तोय मिलै पूछरी कौ लौठा, बिन खाय जो पड़ौ सिलौठा, अरी तू चरनन सीस झुकाय, पूजा

गोवरधन की करि लै।। अरी०।। फिर जतीपुरा तू जईयो, वहाँ भोग परसाद लगाइयौ, अरी गिरिराज पै दूध चढाय, पूजा गोवरधन की करिलै।। अरी०।। जब राधा कुण्ड कूं जावै, वहाँ दोनों कुण्ड में न्हावै, अरी तेरे पाप सभी धुल जाय, पूजा गोवरधन की करि लै।। अरी०।। तू लौट गोवरधन आवै, श्रम तेरौ सब हर जावै, अरी जब मानसी गंगा नहाय, पूजा गोवरधन की करि लै।। अरी०।। फिर पूजा कौ थाल सजाइयो, बर्फी कौ भौग लगइयो, अरी गिर्राज पै दूध चढाय, पूजा गोवरधन की करि लै।। अरी०।। गिर्राज से ध्यान लगावै, मनवांछित फल तू पावै, अरी "प्रभुदास" कौ आशिष पाय, पूजा गोवरधन की करि लै।। अरी०।।

335 रसियानाय माने मेरौ मनुआ मैं तो गोवर्धन कूं जाऊं मेरी बीर। नायमानै०। सात सेर की करूं कढैया, अरी मैं पूरी पूआ बनाऊं मेरी बीर। नायमानै०।टोसा बांध बगल में राखूं अरी मन आवै जहाँ खाऊं मेरी बीर। नायमानै०।सात कोस की दे परिकम्मा अरी मैं मानस गंगा न्हाऊं मेरी बीर। नायमानै०।

336 तेरौ जनम सुफल है जाय, लगाय लै रज ब्रज धाम की। काट दें पाप तेरे व्रजराज, लगाय लै परिकम्मा गिरिराज की। बनें सब तेरे बिगड़े काज।।

(दोहा) – काम तेरे बिगड़े सभी, दें बनाय व्रजचंद। करते भव से पार हैं, माधव नंद मुकुंद।। ह्रदय के पट खोल अरे करि झांकी श्याम की। तेरो जनम०।।1।। मानसी गंगा कर स्नान, प्रेम से चरनामृत कर पान। लगा मनसा देवी से ध्यान।

(दोहा) – दरशन कर महादेव के, पूरन करें मुराद। चकलेश्वर महादेवजी, हरें तेरी सब व्याधि।। हरें तेरी सब व्याधि, लगाले लौ हरि नाम की।। तेरो जनम०।।2।। दान घाटी पै दूध चढाय, प्रेम से दे परसाद लगाय। बांट विप्रन को भोग उठाय।

(दोहा) – परिकम्मा कर नेम से, सात बार तू यार। दंडोती कर प्रेम से, हो जाय भव से पार।।है जाय भव से पार, लगा रट राधेश्याम की। तेरो जनम०।।3।। लगाय लै गोता चलती टेम, धार कर हर पूनम को नेम। करियो दर्शन उठिते खेम।

(दोहा) – कीने जितने पाप हैं, धुलें सभी अज्ञान। काम, क्रोध और मोह को, तज मूरख नादान।। कहते 'गेंदालाल' भजन कर, पुतली चाम की। तेरो जनम०।।4।।

दानलीला व माखन चोरी

337 इकली घेरी वन में आय श्याम तैनें कैसी ठाणी रे। श्याम मोय वृंदावन जानों। लोट के बरसाने आनों।। मेरी कर जोरे की मानों। जो कहूँ होय अबार लडे घर ननद–जिठानी रे। इकली घेरी०।।1।। दान दधि को तू दे जा मोय, जभी ग्वालिन जाने दऊं तोय। नहीं तकरार बहुत सी होय। जो तू नांई करे होयगी ऐंचातानी रे। इकली घेरी०।।2।। दान हम कबहु नाय दियौ, रोक मेरो मारग क्यों लीयौ, बहुत सौ ऊधम है कीयौ। आज तलक या ब्रज में कोई भयौ न दानी रे। इकली घेरी०।।3।। ग्वालिन बातें रही बनाय, ग्वाल बालन कूं लऊं बुलाय, तेरौ सब दधि माखन लुट जाय। इठलावै हर बार नार तोय छाय रही जवानी रे। इकली घेरी०।।4।। कंस राजा पै करूं पुकार, मुश्क बंधवाय दिवाऊं मार। तेरी ठकुराई देय निकार। जुलम करै, नहीं डरै हरै तू नार बिरानी रे। इकली घेरी०।।5।। कंस कहा कसम लगै तेरौ, बो तनहा कहा करै मेरौ, काऊ दिन मार करूं केरौ। करूं कंस निरवंश मेट देऊं नाम निशानी रे। इकली घेरी०।।6।। आय गये इतने में सब ग्वाल, पड़े आंखन में डोरा लाल, घूम के चलें अदा की चाल। लुट गई ग्वालिन मारग में, घर गई खिस्यानी रे। इकली घेरी०।।7।। करी लीला श्याम–श्याम, कौन वरनन कर सकै तमाम, करूं बलिहार धन्य ब्रजधाम। कहते 'घासीराम' नंद कौ है सैलानी रे। इकली घेरी०।।8।।

338. चंचल चपल चतुर चंद्रावलि, चालै चटक मटक की चाल। चंद्रावलि दधि बेचल चाली, घेरी गैल छैल बनमाली।। दान दधि जोबन देऊं चुकाय, दहैड़ी कौ नैक दही दै खवाय। कहै यों चंद्रावलि मुसकाय।।

(दोहा) – जो कान्हा पाले परौ, लऔ पतौआ तोर। छोड़ मनसुखा कूं गये, मोहन माखन चोर।। चंद्रावलि गई सटक मार, मनसुख कैं गुलचा गाल।। चंचल० पत्ता तोर श्याम जब घर आये जी, मनसुख लाल रोमते पाये जी। न देखी चंद्रावलि व्रजनार, करन लगे मन सोच–विचार। खिरक में जाय सोये मन मार।।

(दोहा)–ढूंढत–ढूंढत डोलती, घर–घर जसुमति माय। मेरौ बारौ कान्ह कित, कोई देउ बताय।। कहै मनसुखलाल खिरक में सोय रहै नंदलाल।। चंचल० टेरत मात श्याम नाँय बोलै, क्यूं लाला टूट पर्यौ झटोले। कि तो कूं कौने दीनी गार, कि तोकूं आवत ताव बुखार। बताय दे मेरे प्राण आधार।

(दोहा) – ना काहू गारी दई, ताव न आवत मोय। छल कर गई चंद्रावलि, कहा बताऊं तोय।। अपने लाल के चार ब्याह देऊं, घर चल मदन गुपाल।। चंचल० समद बहाऊं मैया चार बौहरिया, मेरे मन बसी चंद्रावलि गुजरिया। कही माता नैंक मो ढिग आउ, तोय छल गई, तूं बांय छलवाउ। चल्यौ तू रीठौरे कूं जाउ।

(दोहा) – इतनों सुनि कें श्याम नें, सखी भेष लियौ धार। लहंगा फरिया पहिर के, कर सोलह श्रृंगार।। चलत कमर बल खाय, बन गई नव नौरंगी बाल।। चंचल० तुरत श्याम बन गये जनाने, जसुदा नैं प्रभु नाँय पहचाने। उराहनौ दैन लगे घनश्याम, सामरी सखी बतायौ नाम। तुम्हारौ छोड़ जाँयगी गाम।

(दोहा) – जसुधा नैं पहचान कैं, लीने कंठ लगाय। माता आज्ञा पाय कै, रीठौरे गये आय।। चंद्रावलि कौ घर पूछत, सखियन तें दीन दयाल।। चंचल० चंद्रावलि घर यही डगरिया, ऊंची अटरिया, जामें लाल किवडिया। पहुंच गये चंद्रावलि के द्वार, खोल बहैना नेक झझन किंवार। द्वार पै कब की रही पुकार।

(दोहा) – चंद्रावलि कहिबे लगी, सुनौं सखी सुकुमार। कहाँ ते आई नाम कहा, सो मुख ते उच्चार।। कहा लगै नाते में आली, कह दे सांचौ हाल।। चंचल० चंद्रावलि सुन सांचे बैना, पीहर तें आई लगूँ तेरी बहना। कहै यूं चंद्रावलि समझाय, खिलाई गोद न जन्मी माय। कहां ते बहिन गई तू आय।

(दोहा) – चंद्रावलि तें सामरी, सखी लगी यों कहन। मामा फूफी की दोऊ, हम तुम लागें बहन।। व्याह तोरे में मोय सासुरे भेज दई तत्काल।। चंचल० मिलत बहन दोऊ भुजा पसारी, चंद्रावलि ने गिरा उचारी। कहत में लगै लाज बानी, लगैं तेरी छाती मरदानी। सामरी सखी कहै स्यानी।

(दोहा) – तेरी बहना निश दिना, करत रहत थी सोच। सोच करत में है गई, छाती मेरी पोच।। तेरे देखे बिना बहन मैंने पायो दुख विकराल।। चंचल० चल री बहन पानी भर लायें, दोनों बहन पानी कूँ जामें। अचंभौ भयौ सखी मोय आज, कहत में आवे मोकूँ लाज। मरदई चलै चाल तूं भाज।

(दोहा) – बालापन में बछरूआ, घेर चराई गाय। वही लकब मो पर रहो, सुन बहना चित्त लाय।। चाल मेरी मरदानी पै, तूं मत कर रो ख्याल।। चंचल० चलरी बहन तोय उबट न्हावाऊं, तेल सुगन्धित इतर लगाऊं। सामरी सखी जोर कर

हाथ, मेरे घर सैड़ सीतला सात। सुनी बुढिया पुरान में बात।

(दोहा) – जो बहना न्हावो मती, भोजन करौ अघाय। सखी सामरी प्रेम तें बड़े–बड़े ग्रासन खाय।। खीर खांड पकवान मिठाई, छके अनेकन माल।। चंचल० कहत सुनत मो शरम लगत है, मरदाने तूं कौर भरत है। सामरी सखी करै अरदास, मेरे घर में लड़हारी सास। देर जो करूं, देय दुख त्रास।।

(दोहा) – भोजन कर बीड़ा दई, अब है आई रैन। पचरंग पलंग बिछाय कै, करौ सेज सुख सैन।। चरन पलोट में पिंडरिन की लगै खरदरी खाल।। चंचल० तेरे विरज को लोग ठठोरा, कहा बूढौ कहा ज्वान छछोरा। बताय दई ऊभट मोकूँ बाट, जहाँ काँपे करील के ठाट। छिलो पिंडली लंहगा गयौ फाट।

(दोहा) – सोलह सिंगार उतार के, पीताम्बर लियो धार। चंद्रावलि चकित भई, करन लगी बलिहार।। मैं तोय लाला जब ही जान गई, पर्यौ लखाई जाल।। चंचल० को तेरी बहिन को बीरा, तूँ गूजर हम जात अहीरा। दधि कूँ तू छलि आई मोय, छली वा कारन मैंने तोय। परस्पर बदलो जग में होय।

(दोहा) – चंद्रावलि लीला करी, प्रेम भरी घनश्याम। गोवर्धन दसविसे में द्विजवर 'घासीराम'।। घासीराम जुगल छबि निरखत, भये निहाल–निहाल।। चंचल०

339. हँस के माँगे चंद्रावल्नि हमारी दे देओ आरसी। मनसुख ने मुख देखन लीनी। हाथन में चलती कर दीनी। करी कछु ऐसी वाने चाल, कि देखत रह गई सब ब्रजवाल। लाय के दीनी तुम्हें गुपाल।।

(दोहा) – दीनी तुम को लाय के, दीजै हमें गहाय। बिना आरसी जाउंगी, घर में सास रिसाय।। घर में सास रिसाय होत दीखै तकरार सी। हँस के माँगे०।। तोय तो ग्वालिन चढ़ रही सेखी। नांहि आरसी मैंने देखी। चोर मनमुख ने कब कर लई। लाय के मो कूं कब उन दई। आरसी दार अनोखी भई।।

(दोहा) – तुही अनोखी आरसी, बृज में पहिरन हार। जीवन ज्वानी जोर में, व्है रही तू सरसार।। व्है रही तू सरसार नार खिल रही अनार सी। हँस के माँगे०।। तुम औढो लाला कम्बल कारो। कहाँ आरसी को परखन हारो। मुकुट मुरली कुण्डल को मोल। मेरी आरसी बनी अनमोल। बोलते क्यों बढ़–बढ़ के बोल।।

(दोहा) – बढ़–बढ़ के बोल मति, जनम चराये ढोर। घर में तें जाय–जाय कें,

खायो माखन चोर।। खायो माखन चांर लाल तुम बड़े बनारसी।। हँस के माँगे०।। चंद्रावलि चतुराई दिखावै। आप शाह मोय चोर बतावै। जाति गूजर दधि बेचनहार। आपनी रही बड़ाई मार। आरसी दऊं मानले हार।

(दोहा) – हार मान के कहेगी, मुख ते जब ब्रजनार। धमकी ते देनों नही, चाहे तु कहे हजार।। चाहे कहे हजार बौल तेरौ कौन सिपारसी। हँसके माँगे०।। चन्द्रावलि मन में मुसिक्याई। तुरत श्याम आरसी गहाई। आरसी दे दीनी नंदनन्द, ग्वालिनी चली मान आनन्द। कृष्ण को बुरी प्रीत को फंद।।

(दोहा) – बुरो प्रीत को फंद, साँचे मन से प्रेंम। प्रेम के बस में होय के, बिसर जाय सब नेम।। "घासीराम" जीत गये मोहन ग्वालिन हारसी। हँस के माँगे चन्द्रावलि हमारी दे–देऔ आरसी।।

340. जमुना किनारे मेरौ गाँव सांवरे आ जइयो। टेक। जमुना किनारे मेरी ऊँची हवेली मैं ब्रज की गोपिका नवेली। राधा रंगीली मेरौ नाम कि बंशी बजाय जइयो।।2।। मल–मल के स्नान कराऊं घिस–घिस चन्दन और लगाउं पूजा करूंगी सुबह–शाम कि माखन खा जाइयो।।3।। खस–खस कौ बंगला बनवाऊं चुन–चुन कलियां सेज बिछाऊं धीरे– धीरे दाबूं मैं पांम प्रेम रस प्याय जइयो।।4।। देखत रहूँगी वाट तुम्हारी जल्दी अइयो कृष्ण मुरारी। झांकी करेगी ब्रजवाम के हँसि के मुस्काय जइयो।।5।। तुम तो फँस रहौ प्रेम हमारौ, खिच्वी कह रहौ आटे बारौ। बाबू खलौफा मेरौ काम नेंक करवाय जइयो।।6।।

341. ग्वालिन करि दै मोल दही कौ मोकू माखन तनक चखाय। सुन गोरी बरसाने बारी, नेंक चखाइ दै माखन प्यारी। आज मानले बात हमारी, मटकी के दर्शन करवायदे, क्यों राखी दुबकाय।।1।। नाय तौ आज समझले मन में, काऊ दिन हाथ परैगी बन में, कसर निकारूं छिन में। लकुटि मार फोरि दउं मटकी। लउंगो दान चुकाय।।2।। साँच समझलै नाहैं धोखौ, जा दिन मेरो लग जाय मोखौ, दही तेरो बिकवाय दऊं चोखौ, चोरी करें आज तेरे घर पहले दऊं जताय।।3।। पनघट पे भरवे जाय पानी, मोय तेरी गागरि लुढकानी। यही हमारी रीति पुरानी, अबहुँ समझि कृष्ण समझावै, फिर पाछें पछताय।।4।।

342. मैंया जब मैं घर से चलूं बुलामें घर में ग्वालिन मोय। अचक हाथ को झालौ देके मीठी बोलें देवर कहि कें। निधरक हैं जाय सांकर देकें।

(दोहा) – झपूट उतारें काछनी, मुरली लेंय छिनाय। मैं बालक ये धींगरी मेरी कहा बसाय। आपहुँ नाचैं मोय नचावैं कहा बताउं तोय।।1।। मैं भोरौ ये चतुर गुजरिया। एक दिन ले गई पकरि उंगरिया। फूटी सी याकी राम कुटरिया।

(दोहा) – धरी मटुकिया मो निकट, माखन की तत्काल। माखन दूंगी घनौ सौ, चींटी बीनौ लाल।। मैंने याकी चींटी बीनीं, ये पति संग गई सोय।।2।। एक दिना पनघट पै मैया, मैं बैठो एक द्रुम को छैया, ढिंग बैठ्यौ बलदाऊ भैया।

(दोहा) – लै पहुँची वहाँ गागरी, रिपटी याको पाम। मेरे गोहन पड़ गई, धक्का दीनो श्याम।। गुलचा देदे लाल गाल किये मैं ठाड़ौ रह्यौ रोय।।3।। तेरे मुंह पै करे बडाई, बाहर निकसते करें बुराई। ऐसी ब्रज की ढीट लुगाई।

(दोहा) – इन कौ पतियारौ करे, मैं झूठौ ये शाह। चोर नाम मेरौ धरौ, हो न दैंगी व्याह।। मोते इन नें ऐसी कीनी जैसी कहै न कोय।।4।।

343. अरे माखन की चोरी छोड़ कन्हैया मैं समझाऊँ तोय। बरसाने तेरी आई सगाई नित नई चरचा होय। बड़े घरन की राजदुलारी नाम धरैगी तोय।। अरे माखन की चोरी० मोते कहें मैं जाऊँ गइयन पै रहौ खिरक मैं सोय। काउ ग्वालिन की नजर लगी या दई कमरिया खोय।। अरे माखन की चोरी० माखन मिश्री लै खाने कूं क्यों है सुस्ती तोय। या तो बंशी नई मंगाय दऊँ कहि दै कान्हा मोय।। अरे माखन की चोरी० नौलख धेनु नंद बाबा के नित नयौ माखन होय। फिर भी चोरी करत श्याम तैने लाज शरम दई खोय।। अरे माखन की चोरी० व्रजवासी तेरी हंसी उड़ावें घर–घर चर्चा होय। तनक दही के कारन लाला लाज न आवै तोय।। अरे माखन की चोरी०

344. ग्वालिन मत पकरे तू बैंया। मेरी दुखै नरम कलैया, मैने तेरौ माखन नहीं खायौ, अपने घर के धोके आयो, मटुकी तै नाँय हाथ लगायौ। आज छोड़ी दे सौगन्ध खाऊँ, तेरी लऊँ बलैयां।।1।। ग्वालिन० खोली किबरिया तू गई पानी, भूली भई

अब क्यों पछतानी। मोते कर रही ऐंचातानी, झूँठो दोष लावे मेरौ। तेरी घर में घुसी बिलैयां।।2।। ग्वालिन० आज छोड़ी दे सौगन्ध खाऊँ फेरी न तेरे घर में आऊँ। नित्य तेरी गागर उचवाऊँ। बेगी छोड़ी दे देर है रही बोल रह्यौ बलभैया।।3।। ग्वालिन० तोकूं नैक दया न आवै, मो सुधे को दोष लगावे। घर बुलाय के चोर बनावै। वाट देखते होंय सखा सब, दूर निकसि गई गैया।।4।। ग्वालिन०

345. हरि ने चन्द्रावलि छलिवे को मोहिनी रूप बनायौ है। नैनन सुरमा हरि लगायौ, मुख भरी के ताम्बुल चबायौ करी सोलह श्रृंगार रति कौ रूप लजायौ है।। हरि ने०।। मात जसोदा के ढिंग आये, मीठे–मीठे वचन सुनाए, तेरौ लाल करै ठिठोली, कह बतरायौ है।। हरि ने०।। तू गुजरी मस्तानी डोले, झूठ वचन मुख ते क्यों बोले, मेरौ लाल उमर को बारो, तोऐ यौवन छायो है।। हरि ने० हँस गये कान्हा मात बलिहारी, मैया मेरी भोरी भारी चन्द्राबलि छलि गई छलन हित मन हुलसायौ है।। हरि ने०। बरसाने मन मोहन आयो, चन्द्रावलि घर पतौ लगायौ, "घासीराम" उस्ताद जाहिं तैरे घर लायौ है।। हरि ने०।

मिश्रित पद

346. खातिर कर लै नई गुजरिया, रसिया ठाड़ौ तेरे द्वार। ये रसिया तेरे नित्य न आवे, प्रेम होय जब दर्शन पावै, अधरामृत कौ भोग लगावै। करी महमानी अब मत चूके, समय न बारम्बार।। खातिर करलै ० हिरदै की चौकी करि हेली, नेह कौ चन्दन चरचि नवेली, दीक्षा लै बनी जैयौ चेलौ। पुतरिन पलंग बिछाय पलक की कर लै बन्द किवार।। खातिर करलै० जो कछु रसिया कहै सौ करियौ, सास ननद को डर परिहरियो, सोलह कर बत्तीस पहरियौ दे–दे दाम सूम की सम्पत्ति, जीवन है दिन चार।। खातिर करलै० सब ते तोरी नेह की डोरी, जमना पार उतर चल गौरी। निरधक खेल्यौ करियौ होरी। "श्याम" रंग चढ़ी जाए जा दिना, है जाय बेड़ा पार।।खातिर करलै०

347. नव हि अंग श्रृंगार के होरी चोरी दान। छलय करन रति बन–गमन बिरह मिलन अरू मान।।

होरी (फाग) – गृह को ने जातन रह्यो परे अगोने पांव।
नित होरी के खेल में, चित्त–चोरी को चाव।।1।।
बरसाने नंद गांव अति। उमंग दल दूहू ओर।
समर खेत संकेत में, आज फाग जुध जोर।।2।।
ढोलक ढोल मृदंग बाजे, मुरली ढप सहनाय।
गहगड गान धमार सुनि, रह्यो कुलाहल छाय।।3।।
उड गुलाल आंधी पहल डफ गरजन अभिराम।
रंग धार बरसन लगी गौर घट और श्याम।।4।।
मची दुहुन में फाग इत, राधे उत नंद लाल।
जमुना घर, गिर तरू लता, खग मृग भरे गुलाल।।5।।
लाल भई सब देखियत घुमड़्यो गगन गुलाल।
मनु दम्पति अनुराग को डार्यो ब्रज पर जाल।।6।।
रोकत घूघंट ओट सों, मुरि तिय पिचकी धार।
यह बचावनि देख उत, बचत नहीं रिझवार।।7।।
पट छूटत, छूटत नहिं, रहे खेल रस भोय।
हार टूट पायन परत, हार न मानत कोय।।8।।
"नागरिया" गति रीझ की, क्यूं हू जात कही न।
दम्पति फाग बिहार रस, भयो लीन मन मीन।।9।।
सुध बुध सब ही हर लई, मन मोहन मुस्काय।
ए दइया कैसी बनी, लागी बिरह बलाय।।10।।

रसिया नागनाथ लीला

348 निर्मल जमुना जल करिबै कूँ, प्रभु ने नाथों काली नाग।। ग्वाल बाल सब सखा बुलाये, नाँनाँ भाँतिन ख्याल रचाये।। गेंद में मारी टोल घुमाय, उछर जमना में पहुँची जाय। सखा श्रीदामा गयौ रिस्याय।।

(दोहा) – श्रीदामा रिसियाय कें, कही कृष्ण ते आय। जमुना में ते जायकें, दीजे गेंद गहाय।। यों मत जानें बिना गेंद दिये, घर को जाऊँ भाग ।। निर्मल०।। छोड़ फेंट श्रीदामा मेरी, घर चल गेंद दिवाय दऊँ तेरी। कहें यों श्रीदामा

झुँझलाय, मेरी तो वही गेंद दै लाय। ठाडौ क्यों बातें रह्यौ बनाय।।

(दोहा) – इतनी सुनकै श्याम नें, नटवर भेष बनाय। लै भैया मैं जात हूँ, घर मत कहियो जाय।। ठाड़े रहियों जमुना तट पै, मत जइयो मोय त्याग।। निर्मल०।। दह में कूदे कृष्ण मुरारी, सोवै नाग सहस फन धारी।। कही नागिन ने यों समझाय, गयौ तू बालक कहाँ ते आय।। खबर मेरे पति कूँ पर जाय।।

(छन्द) – आयौ, कहाँ ते, जाय कहाँ, यह भेद मोय बताइयै। कहा नाम और कहा गाँम है, को मात तोकूं जाइयै। बोले हैं बोल कुबोल तौते, कै घर नार रिस्याइयै। डस जायगौ जागत पति, या सौं बगद घर जाइयै।।

(दोहा) – जा तू बालक बगद के, मैं समझाऊँ तोय।। सूरत तेरी देख के, दया लगै है मोय।।जो डस जावै नाग, तेरे घर को बुझ जाय चिराग।। निर्मल० कृष्ण कहै सुन नागिन प्यारी, जगा नाग अपनों बलधारी। कहा धमकी सो रही, दिखाय, नाग कूँ क्यों ना देत जगाय। रही जा के ऊपर गरवाय।।

(छन्द) – देश पूरव गाँम गोकुल, नाम मम नन्दलाल है। बालक मती जाने मुझे, तेरे नाग को अतिकाल है। बोले न बोल कुबोल, मोते ना लड़ी घर बाल है। झूलें हिंडोला राधिका, तेरी नाग डोरी डाल है।

(दोहा) – डोरी डारू नाग की वृन्दावन के माँहि। नाथूँ काली नाग कूं अब भगवे को नाँहि।। अब भगवे को नाँहि, भगूँ तौ, कुल कूँ लग जाय दाग।। निर्मल०।। नागिन ने जब नाग जगायौ, दई फुंफकार क्रोध करधायौ। लपेटा तन में दै लीनों, कृष्ण कूं उछरन नाँय दीनों। सोच सब ग्वाल बाल कीनों।।

(दोहा) – ग्वाल बाल रोवन लगे, चले नन्द पे धाय। तेरौ लाला सामरौ, दह में कूदौ जाय।। कहा सौवै सुख की नींद रे बाबा, जाग जाग उठ जाग।। निर्मल०।। नन्द जसोदा रोवन लागे, गोकुल तज जमुनाजी कूं भागे। सकल ब्रज धाय रह्यौ जमुना तीर द्रगन ते बहै सबन के नीर। कृष्ण बिन धरे न मन में धीर।।

(दोहा) – जमुना में कूदे परें, ग्वाल रहे समझाय। उतमें अपनी कृष्णनें, दीनी देह बढ़ाय। खुलन लपेटा लगे वदन के, उठन लगे जल झाग।।निर्मल०।। नाग नाथ जल ऊपर आये, कमल पुष्प कंसा कूं लाये। दरश ब्रजवासिन कूं दीनों, नृत्य

फन–फन ऊपर कीनों। देख नागिन दुर्लभ जीनों।

(दोहा) – दुर्लभ जीनों देख कें, अस्तुति करें बनाय। प्रान दान याहिं दीजिये, कहूँ वचन सिर नाय।। क्षमा करौ अपराध पति कौ, राखौ मेरौ सुहाग।। निर्मल ०।। कृष्णचन्द्र नागिन समझाई, ब्रज कूं छोड़ अनत रहौ जाई। नाग कहै सुनों गरीब निवाज, गरूड से बैर परौ महाराज। छोड़ ब्रज कहाँ कूँ जावें आज।।

(दोहा) – गरूड़ बैर तोते तजौ, निर्भय जाओ देश। चरण चिन्ह् तेरे पर्यौ, मिट गये सकल कलेश।। "घासीराम" देवतन के मन, बढ़ी अधिक अनुराग। निर्मल जमुना जल करिबे कूँ, प्रभु नें नाथौ कालीनाग।।

चीरहरण लीला

349 कोई लै गयौ चीर हमारे, जुलम कर डारे। अपने–अपने वस्त्र खोलकें, पारन पर हम धर दीने। सब गोपिन नें जुरमिल कें, धस जमुना में गोता लीने।। उछरत चीर लखे नहीं गोपी, जमुना तीर किनारे ।।जुलम०।। देखत चारों और गोपिका, कोई नजर नहीं आयौ। होकर नागिन खड़ीं जमुना में, निज मन सोच बहुत छायौ।। नहीं कोई मनुष्य नहीं कोई बन्दर, कौनें बादर फारे। जुलम०। मन्द–मन्द मुस्काय कदम पै, बैठ देख रहे बनवारी। ताही समै बजाई बंशी चोंक पड़ी सब ब्रजनारी। देखौ सखी कदम पै, तौकूँ धन्य मोहना प्यारे।।जुलम०।। धन्य–धन्य महाराज आप कूँ, धन्य–धन्य बंशी धुन कूँ।। दीजै चीर गहाय, नहीं गुन बसे जाँय तुम्हारे।।जुलम०।। मदमाती तुम भई गुजरियां, क्यों इलजाम लगावत हौ।। यह तो फूल्यौ कदम हमारौ, या कूँ चीर बतावत हो।। कैसे चीर नाँय हम देखे, धौरे पीरे कारे ।।जुलम०।। चोर चोर कें लूट–लूटकें, खायौ दही बिरानों है। ताहू पै तेरौ पेट भरौ ना, सीखौ चीर चुरानों है।। मात जसोदा पिता नन्द के, कैसे नाम निकारे।।जुलम०।। तुम्हें नाम ते कहा सखीरी, वस्त्र अपने लै जाऔ। जलाते होय के न्यारी प्यारी, एक–एक मो ढिंग आऔ।। गिन–गिन कें दऊं चीर तुम्हें, जब आऔ बदन उघारे।।जुलम०।। नगिन स्त्री–पुरूष न देखें, वेद–शास्त्र सब यह गाई। कहें कंस ते जाय अभी हम, निकर जाय जब ठकुराई।। मारन नाँ निकरन दे मोहन, पनघट गैल गिरारे।।जुलम०।। कौन शास्त्र तुम पढ़ीं नगिन है कें जल में न्हाई प्यारी। जल कौ राजा वरूण देव हैं, दोष लग्यौ है अति

भारी।। कंस बिचारे से मैंने कितने, तहस नहस कर डारे।। जुलम०।। हैकें अति आधीन सखी सब, जलते बाहर चल दीनी। और उपाय भयौ नहीं कोई, ओट भुजन की कर लीनी।। दासी बनकें चीर माँगती, दीजै नन्द दुलारे।।जुलम०।। एक बात में कहूँ री सखी री, राखियों याद अपने मन में। शरद रैन के मध्य करूँ, लीला निज बृंदाबन में।। चीर हरन लीला कहें "घासीराम" गोरधन बारे।।जुलम०।।

गौचारण लीला

350. जसुदा मैया खोल किबरिया, लाला आयौ गाय चराय। जसुदा मैया करत, आरती, फूली नांय समाय। हँस–हँस लेत बलैया मैया, बार–बार बलि जाय।। जसुदा० खिरक खोल गैया कर दीनीं, बछरा रहीं चुखाय। कारी कमर धौरी घूमर कौ रहे दूध दुहाय।। जसुदा० दूध दुहाय कहें मनमोहन, मांखन दै मेरी माय। सदलौनी यौ होय सबेरें, खाओ खूब अघाय।। जसुदा० इतने में एक सखी सामरी, टेरत पहुंची आय। तुम बिन देत न दूध हमारी गैया रही रम्हाय।। जसुदा० सखी सांमरी की मोहन नें जाय दुहाई गाय। आधौ दध काढ़ धौनी में, आधेऐ गये चढाय।। जसुदा० देख दूध धौनी को मन में सखी गई मुस्काय। "घासीराम" घनश्याम लालानें लीयौ भोग लगाय।। जसुदा०

351. कर लै, धरम धार लै धीरज, सब धन धर्‌यौ धरन रह जायगौ। पियौ नहीं प्रेम सुधा–रस छान, कियौ नहीं साधुन कौ सनमान।। दियौ नहीं विप्र जनन कूँ दान।। (दोहा) – दान न विप्रन कूँ दियौ, सौ धन धूर समान। वा घर कूँ ऐसै गिनों, जैसे भूत समान।। जैसे भूत समान, अन्त में नीच वरण रह जायगौ। करौ तुम गोविन्द को गुणगान, धरौ तुम राधाकृष्ण कौ ध्यान।। परौ तुम परमारथ में आन।।

(दोहा) – परमारथ की प्रीति कूं, परम पदारथ मान। हरि के हेत लगाय धन, सो सच्चौ धनवान।। सो सच्चौ धनवान, जगत में नाम करन रह जायगौ। क़रलै० धर्म ते मिलै जो धन संतान, कर्म से मिलें मोक्ष कल्यान। नर्म सो मिलै नमो नारान।

(दोहा) – नमो नारायण मिलेगें, निश्चय करके जान। धर के ध्यान निहार लै, भक्तन बस भगवान।। भक्तन बस भगवान, सुयश कौ परम नाम रह जायगौ।

करलै०। भयौ मतिमन्द मूढ़ नादान।।

(दोहा) – नादानी कूँ छोड़ि कें, कर प्रभु ते पहिचान। छूटै आवागमन सों, पावे पद निर्वान।। 'घासीराम' कृष्ण के छीतर चरन शरन रह जायगौ। करलै०

मोर ध्वज लीला

352. अर्जुन और कृष्ण मुरारी, तपसी कौ भेष लियौ धारी। दो संत बने हैं आला, शिर जटा गले में माला।। कमण्डल हाथ, बगल मृगछाला, संग में केहर मतवाला।।

(झड़) – गये भूप के धाम, कह्यौ सियाराम, भूख हम लागी। हम सूने मोरध्वज, भूप भक्त बड़भागी।। दरबारी ते कही, खबर राजा ते करौ हमारी।। तपसी० सुन टेर चल्यौ दरबारी, बोल्यौ राजा ते बानी। दो संत खड़े निरवानी, संग में केहर अगवानी।।

(झड़) – चलौ आप सरकार, छोड़ दरबार, याद तुम्हें करते। तुम चल कें दर्शन करौ, संत हैं रमते। सुनकें आतुर चाल्यौ, आप राजा ने अरज गुजारी।। तपसी० सुन भूप ह्रदय हरषायौ, महलन तें दौड़ौ आयौ। आसन जल्दी बिछवायौ, फिर ऐसे वचन सुनायौ।

(झड़) – जो कछु होय दरकार, करूँ सत्कार आप फरमाऔ। जो इच्छा के अनुसार, कहौ सोई पाऔ।। कहर कूं भोजन मंगवाऊँ, इच्छा होय तिहारी।। तपसी० क्षुधा नें हमें सतायौ, दिन तीन अन्न नहिं खायौ। केहरि ने अति दुख पायौ, बिन अहार ये घबरायौ।।

(झड़) – चीरौ रतन कुमार, करौ दो फार, सिंह जब पावै। रानी ते पूछौ जाय, क्यों देर लगावै।। हम हैं रमते राम हमें जानौ है बहुत अगारी।। तपसी० सुन भूप महल में आये, रानी कूं बचन सुनाये। दो संत द्वार पे आये, तिन ऐसे बचन सुनाये।।

(झड़) – चीरौ राजकुमार, करौ दो फार, सिंह जब पावै। सुत चीरत में इक न आंसू, गिरन न पावै।। धर्म तुम्हारे साथ, सोच तुम मन में लेओ विचारी।। तपसी० अपनौ मन करकें गाढौ, कियौ बीच कुँवर कूँ ठाड़ौ। रानी राजा लियौ आरौ, सुत कर दियौ न्यारौ–न्यारौ।।

(झड़) – चीरौ रतन कुमार, करी दो फार, हियौ जब फाटौ। रानी इक आँसू गिरौ

डटो नहीं डाटौ। बैठे आसन मार, सन्त रानी की दशा निहारी।। तपसी० सुन राजा वचन हमारौ, इक फार सिंह कूँ डारौ। दूजे कूँ आप सम्हारौ, ढ़क देऔ रहै न उघारौ।

(झड़) – धरौ महल में जाय, हूँ समझाय, बात सुन लीजै। अब पत्तर लाऔ पाँच की पंगत कीजे।। घर ठाकुर को भोग, फेर भोजन की करौ तैयारी।। तपसी० मेरे संदेह यही है, राजा कर जोर कही है। स्वामी कहौ सही सही है, पाँचई पत्तर किस की है।।

(झड़) – कुँवर महल रह्यौ सोय, नींद में मोय कि हेला मारौ। पाँचई पत्तर पै आवै कुँवर तिहारौ।। भूप दई आवाज महल ते आयौ कुँवर हजारी।। तपसी० धन–धन प्रभु भाग्य हमारे, महलन में आप पधारे। भये लोचन सफल हमारे, नारायण नैन निहारे।

(झड़) – गोवर्द्धन शुभ धाम, व "घासीराम" नाम है मेरौ। तुम जानों बड़ौ बजार मुहल्ला खेरौ।। रखी भूप की लाज कि भैया राधेश्याम बिहारी।। तपसी०

353 मेरे बारौ सौ कन्हैया काली दह पै खेलन आयौ री। ग्वाल बाल सब सखा संग में गेंद कौ खेल रचायौ री।।1।। काहे की पट गेंद बनाई और काहे कौ डण्डा लायौ री।।2।। रेशम की पट गेंद बनाई और चंदन डण्डा लायौ री।।3।। मारी टोल गेंद गई दह में, अरे गेंद के संगई धायौ री।।4।। नागिन जब ऐसे उठि बोली, क्यों तू दह में आयौ री।।5।। कै तू लाला गैलि भूल गयौ, कै काहूने बहकायौ री।।6।। कैसे लाला तू यहाँ आयौ, के काहूने भिजवायौ री।।7।। नागिन नाग जगाय लै अपनौ, वाही की खातिर आयौ री।।8।। नाय जगाये तो फिर कह दे, ठोकर मारि जगायौ री।।9।। हुआ युद्ध दोनों में भारी, अंत में नाग हरायौ री।।10।। रमणदीप को नाग भेज दियौ, फन पै चिन्ह लगायौ री।।11।। "घासीराम" ने रसिया रचि कै, भर दंगल में गायौ री।।

मणिहारी व अन्य लीला

354 बन गये नंदलाल लिलहारी, लीला गुदवाय लेऊ प्यारी। लहंगा पहर ओढ़ सिर सारी जी। अंगिया पहरी जापै जड़ी किनारीजी। शीश पै शीसफूल बैना, लगाय लियौ काजर दोऊ नैना। पहर लियौ नख शिख सो गहना।

(दोहा) – नख शिख गहनों पहरकें, कर सोलह सिंगार। बलिहारी नंद–नंद की, बन गये नर सों नार।। शीश पै लिख दै श्रीगिरधारी जी। माथे पै लिख मदन मुरारीजी। द्रगन पै लिख दै दीनदयाल, नासिका पै लिख दै नंदलाल। कपोलन पै लिख कृष्णगुपाल।।

(दोहा) – श्रबणन पै लिख सांवरो, अधरने आनन्द कन्द। ठोड़ी पै ठाकुर लिखौ, गल गोकुलचन्द। छाती पै लिख छैल, दोऊ बाहन पै लिखौ बिहारी। बन गये० हस्तन पै हलधर जी को भैयाजी। अंगुरिन में आनन्द करैया जी। पेट पै लिख दै परमानन्द, नाभि पै लिख दै तू नंद–नंदन, जाँघ पै लिख दै जे गोविन्द।

(दोहा) – घोंटुन में घनश्याम लिख, पिंडरिन में प्रतिपाल। चरनन में चितचोर लिख, जगपति जै गुपाल।। रोंम–रोंम में लिखौ रमापति, राधावर बनवारी। बन गये० लीला गोद प्रेम जस आयौजी। तन मन कौ सब हौश गंवायौजी। खबर झोली झंडा की नाँय, द्यरन पै चरन नाँय ठहराय, सखी सब देखत ही रह जांय।

(छन्द) – देखत सखी सब रह गईं, झगड़ो निरख कर फंद कौ। बीसों बिसे दीखैं सखी, छलिया है ढोटा नन्द कौ। अंगिया में बंशी छिप रही, श्रीराधे ने लई निकारकें। हे प्यारे हे प्यारी कही भैटे हैं भुजा पसार कें।। "घासीराम" जुगल जोड़ो पै, बार–बार बलिहारी। बन गये नंदलाल लिलहारी, लीला गुदवाय लेउ प्यारी।।

355. ढोटा, नन्दनन्दन ब्रजचन्द्र, भेष धर लियौ सुनारी कौ। नख सिख सों बन गये जनाने। पहुँचे जाय तुरत बरसाने, लेऊ कोई बिछुआ ब्रज की नार, सुनें प्रीतम इन की झनकार। खैंच कै मनकूँ लेय निकार, भरौ है ऐसौ जंत्र अपार।।

(दोहा) – जंत्र भरे बिछुआन की रही बढ़ाई मार। पनघट मारग कौन ले, बेचौं हाट बजार।। गैल गिरारे नाँय कोई गाहक, वस्तु तुम्हारा कौ। ढोटा०।। सब गहनों मेरौ रतन जड़ाऊ। हाट बजारन नाय बिकाऊ।। कौन जानें गहने की सार, परख कोई करें, राज दरबार। सखी एक बोली सोच विचार, चपल चंचल तू सामल नार।

(दोहा) – कारेन की परतीत ना, कारौ नन्द कुमार। वाही की तू मिलनिया, वाही की उनहार। कबहू ना विश्वास करें, कारे नर नारी कौ। ढोटा०।। चली सुनारी

संग सखियन में। पहुँची प्यारी के महलन में।। पाँव लग बैठ गई हरषाय, कहि राधे जु नें समझाय। कहा लाई सो हमें दिखाय, तेरौ सब माल मता बिक जाय। (दोहा) — डिब्बा को खोलन लगौ, प्रेम प्रभाव सुभाव। प्यारी जी तुम पहरिये, गहने रतन जड़ाव।। सुनकें आई नाम, दूर ते राधा प्यारी कौ।। ढोटा०।। शीश फूल बेंदनी धराई। श्रवण झूमका नथ पहराई।। नार हँसली हमेल हिय हार। बरा बाजूबन्द देत बहार। ककनियाँ गजरे पहोंची डार, आरसी मुदली छल्ला चार।। (दोहा) — कड़े छड़े लच्छे पड़े, जड़े श्याम पुखराज। बिछुआ पहरे बाजने, कोट काम गये लाज।। सब गुन खिलौ सुहाग, श्रीवृषभानु दुलारी कौ। ढोटा०।। लै दरपन राधा मुसुक्याई। ललिता कूँ ऐसे समझाई। ये गहने लाई रूचिर बनाय, होय सब सौदा लेऔ मुल्याय। जो माँगे सो तुम देऔ गहाय, लई गठारी ललिता खुलवाय।।

(दोहा) — गठरी के गहनेन में, बंशी पर गई हाथ। नाँय सुनारी ये भटू, ढोटा गोकुल नाथ।। देखौरी देखौ बहना, छल छैल बिहारी कौ।। ढोटा० कोई लियौ चीर कौई लई चोली। कोई मुख गुलचा दै हँस बोली।। काउनें फेंटा दियौ बँघाय, कोई पीताम्बर रही कछाय। छटी जब पुजी जसोदा माय, महूरत कौन घड़ी गयौ आय।।

(दोहा) — भादों की कारी निशा, जन्मे नन्द किशोर। गोरस चोरी छोड़ि कें, अब भये रस के चोर।। सखियन करौ खिलौना, छौना जसुमति दारी कौ।। ढोटा०।। पर गए श्याम सखिन के वश में, प्रेम रसीले है रहे रस में।। प्रेम कौ पायो गरम प्रसाद, प्रेम परसाद में बड़े–बड़े स्वाद। प्रेम में टूट जाय मरियाद, प्रेम चलि आयौ आदि अनादि।।

(दोहा) — प्रेम परीक्षा में गयी, बासर बीत तमाम। मिले परस्पर प्रेमते, भुज भर श्यामा श्याम।। “घासीराम” नाम रट छीतर श्री गिरधारी कौ।। ढोटा०।।

रंगरेजन लीला

356 बन गये श्याम सुघड़ रंगरेजन चुंदर रंगवाय लेऔ प्यारी। पहुँच गए प्यारी की पौरी जी। ललिता खबर करन कूँ दौरी जी।। तुरत रंगरेजन लाई बुलाय, पांय लग बैठ गई हरषाय। (दोहा) — चुंदर चटकीली रंगौ, रंगरेजन सुकुमार। बीच

छबरिया रंगभर, कौने अजब किनार।। खोलपिटारी घरी अगारी, रंगत न्यारी न्यारी। बन गये० स्याह सोसनी सब्ज सिन्दुरी। असमानी अधकट अंगूरी।। कपासी, कन्नेरी, केलई, कपूरी केसरिया कत्थई। पिरोजई प्याजू और पिस्तई।।

(दोहा) – नारंगी और नीबुआ जामिन और जंगाल। खसखासी और खाकिया धानी तूती लाल।। कुसुमरंग कासनी किसमिसी, अगरई अन्नारी।। बन गये० गुलैनार गेरूआ गुलाबी। हारसिंगार अगरजा आबी। सिदली स्वेत सुर्ख जरदई, सबज स्याही सरबति सुरमई। चन्दनी चमकदार चम्पई।।

(दोहा) – बादामी और बैजनी, और बसन्ती रंग। मलागिरी और मोतिया, पचरंगीन प्रसंग।। तोतई जौजई जरद मूँगिया, करदई कोर किनारी।। बन गये० चटकीली चुंदर रंग दीनी। बिहसि राधिकानें धारण कीनी। रूप दरपन में रहा निहार, सखी सब करन लगी बलिहार। बड़ी रंगरेजन अजब हुशियार।।

(छन्द) – चूँदर रंगाई की बड़ाई, मुख करी ना जायगी। दै देऔ न्योंछावर–सखी, बैठी उमर भर खायगौ। मुस्क्याय मनमोहन गए, राधे के लख कें रूप कूँ। पहिचान सखियाँ सब गई, सावल स्वरूप अनूप कूँ।। "घासीराम" जुगल जोड़ी पै, "छीतरमल" बलिहारी। बन गये०

मालिन लीला

357 बन गये मालिन मदन मुरारी, छलबे कूँ राधा प्यारी। नख–शिख श्रृंगार बनायौ, लखि कामदेव सरमायौ।। फूलन को डला सजायौ, बरसाने ते ध्यान लगायौ।। फूलन कौ डला सजायौ, बरसाने ते ध्यान लगायौ।।

(झड़) – नाना भाँतिन के फूल, चुने चिल्लूल, महँक कलियन में। कोई फूल लैऔ री फूल कहत गलियन में।। लै गई सखी लिवाय, जाय कें आदर ते बैठारी।। छलवे कूँ० तू कौन गाम ते आई, को पिता कौन है माई। अपनौ दे नाम बताई, तू सुन मालिन की जाई।।

(झड़) – मम अचल पिता है नाम, है गोकुल गाँम, भक्ति है माता। सामरी सखी मोय कहें, सुनो अन्नदाता।। सुन के तेरो नाम श्रीराधेजी, आई पौर तिहारी।। छलवे कूँ० कहाँ गोकुल मथुरा जानों, कहाँ नंद गाँव बरसानों। तोय का विधि लग्यौ ठिकानों, कैसे भयौ तेरौ आनों।

(झड़) – तिहारे पितृ नृपति वृषभान, सुयश की खान और ठकुराई। राधा कौ नाम रह्यौ है तीन लोक छाई। ऐसे नाम ग्राम की बेटी, जानें सब संसारी।। छलवे कूँ० जानी तेरी चतुराई, तू कहा कहा सौदा लाई। नेक दै तू हम कूँ दिखलाई, तेरी लैंगे वस्तु मुल्याई।।

(झड़) – फूलन के गजरा हार, बने छविदार, गुथाई कीनी। बन्दनी झूमका, कली–कली चुन दीनी।। जो रूचि हो सो लेऔ, मोय आये भई बहुत अबारी।। छलवे कूँ० तू मत कह देरी–देरी, अब सुन लै मालिन मेरी। देहों तोय द्रव्य घनेरी, इच्छा होय पूरन तेरी।।

(झड़) – मैं बड़े घरन की नार, सुनों सुकुमार, लोभ नहीं धन कौ। सौदा मेरौ तुम समझौ, प्रेम रतन कौ। प्रेम प्रभाव चाव को, बनी फिरूँ ब्यौपारी।। छलवे कूँ० फूलन को करै बिकाई, क्यों हमते करत बढ़ाई। तू कहा अधिक इतराई, तेरी सेखी नांय समाई।।

(झड़) – सब सुर नर मुनि लख रहे, बैठ थक रहे, ध्यान में लामें। प्यारी जी ऐसे फूल उन्हें नहीं पामें। वा मोहन कौ बाग बडो है, फूल रही फुलवारी।। छलवे कूँ० मोहन कौ बाग बतायौ, राधा मनमोद बढ़ायौ। महलन में पलंग बिछायौ, आदर कियौ मन भायौ।।

(झड़) – अब आई रैन, करौ सुख सैन, चैन सों रहियै। बतरावें मन की बात, प्रातः उठ जइयै।। भये प्रेम बिबश बनवारी, घर ध्यान लगा गये तारी। लखि गई वृषभान दुलारी, ये छलिया छैल बिहारी।।

(झड़)–जब भेठे भुजा पसार, परस्पर प्यार, मगन भये मन में। मन मोहन मदन मुरार, मिले महलन में। 'घासीराम' नाम के ऊपर छीतरमल बलिहारी।। छलवे कूँ०

जोगिन लीला

358 कान्हा ने जोगिन भेष बनायौ, बरसाने में अलख जगायौ। बरसाने० सिर जटा जूट छबिछाई, श्रवणन मुद्रिका सुहाई। सब अंग भभूत रमाई, मृगछाला बगल दबाई।

(झड़)–गाती कौ गेरूआ रंग, झलक रह्यौ अंग, डार गलसेली। चितचोर चपल बन गये जोगिन अलबेली।। अलख–अलख कहें खोल पलक, फिर सिंगीनाद

बजायौ। बरसाने० राधा की दृष्टि परे है, कर जोर प्रणाम करी है। तू और ही प्रेम भरी है, तेरी सुधि बुधि कौन हरी है।

(झड़) – तू बड़े भूप की कुमर, हे बारी उमर, रूप रंग बरसै। क्यों जोग लियौ, अनुराग दृगन में दर सै। चलरी चल लै चलूं तोय घर, देख हियो हरसायौ। बरसाने० मुख आवै वही बखानों नहीं, जोग जुगति पहिचानो। तपसिन कौ अंत न पानों, मत जोग खिलौना जानों।

(झड़) – हम तन साधें मन मार, करे आहार बीन के बनफल। संसार छोड़ क्यों बसें, गृह स्थिन घर चल। काम क्रोध मद लोभ मोह, इन पाँचन कूं बिसरायौ। बरसाने० है ज्ञान सुघन बलिहारी, हम जोग जगत ब्यौपारी। हे अलख पुरूष आधारी, गिरि बन की बिचरन हारी।।

(झड़) – हम भोजन भूखे नहीं, कहैं हम सही, न इच्छा कोई। बिरमें जहाँ प्रीति, प्रभाव सु आदर होई।। बिना प्रीति आदर के मनुआं, बिरमें ना बिरमायौ। बरसाने० आदर हम करें तुम्हारौ, गहबर बन आप पधारौ। है प्रेम कौ भाव हमारौ, ब्रज में बसि होय निस्तारौ।

(झड़) – हम यहीं करे अरदास, रहौ तुम पास निकट बरसानों। भानोखर न्हानों, सन्तन के मन मानों।। बड़े भाग्य ब्रजवास मिलै जानें लिलार लिखवायौ। बरसाने० रहें ग्राम निकट संसारी, हम वन खण्ड के तपधारी। नित कर्म–धर्म आहारी, हम बसें न पौर तिहारी।।

(झड़) – हम जोग रचें वनखण्ड, है ज्योति अंखड, झलाझल झलके, खड़े सप्तद्वीप नवखंड, जोग तप बलके।। हम हैं रमते राम, ग्राम ग्रेहिन के लिये बतायौ। बरसाने० पृथ्वी सिर शेष सुनी है, सब बस रहें बेश दुनी है। कोई सुनों न ऋषि मुनि हैं, तू तो पर निपुण गुनी है।

(झड़) – तू करै अकहनी बात, नहीं सकुचात, सत्य नहीं बोलै। मन को नहीं खोलै, जोगिन बनकें डोलै।। सामल गात बात तेरी मोय, सुन–सुन अचरज आया। बरसाने० तुमें प्रीति प्रतीत नहीं है, अति अनुचित बात कही है। कहते कछु और रही है, लघु उमर सुता अब ही है।

(झड़) – तुम बैठो घर में जाय, कहूँ समझाय, मिलौ भोगिन सों। प्यारी जी तुम

कूँ काम कहा जोगिन सों।। करौ ज्ञान की बात ध्यान धर, क्यों गुमान सौ छायौ। बरसाने० तन में नाँय दुर्बलताई, मन में न उदासी छाई। तेरी देख चपल चतुराई, सबकौ मन जाय लुभाई।

(झड़) – तेरे चंचल द्रग चितचोर, चले चहूँ ओर, ये मीत परखो। तप लक्षण मैंने एक न तोमें देखौ।। सील स्वभाव सदां संतोषी, साधू बही कहायौ। बरसाने० हम जानत हैं गोपिन की, परख तुम्हें गोधन की। कहा जानों जोगी जनकी, मनकी ओर तप लक्षण की।।

(झड़) – तुम किन गुन करो निदान, नहीं पहिचान, संत की आवै। है दुर्लभ पद निर्वान सहज नहीं पावै।। जोगिन के घर दूर बड़े है पार न किनहूं पायौ। बरसाने० प्यारी नें भुज भर लीनी, बैठार भवन में दीनी। मोय पलिंग देऊ रंग भीनी, मन मिलनी चतुर प्रवीनी।।

(झड़) – करें भूमि पर सैन, संत दिन रैन, यही है रीति। तप मारग तज कें करै, मती अनरीति।। भोगिन है जोगिन बाने कौ कैसौ रूप सजायौ। बरसाने० है बिरज तुम्हारी हीयौ, मैंने अच्छी आदर कीयौ। तुम ज्ञान संत कूँ दीयौ, अवतार कलु ने लीयौ।।

(झड़) – प्यारी ने भुज फिर गही, बात यह करी, खेद मत लाऔ। तुम करौ रैन भर सैन, कहीं न चित लाऔ।।

(छंद) – भई प्रेम बस जोगिन विकल, बैठी जो गहकर मौन है। देखौ सखी पहिचानियों, ये श्याम सूरत कौन है।। पूरन परीक्षा कर लई, लक्षण दिखाई दै गये। सिंगार बदलौ श्याम नें, जोगिन ते जोगी है गये।। "घासीराम" नाम कौ यश कछु छीतरमल नें गायौ। बरसाने०

मनिहारी लीला

359 बन गये नवलनार घनश्याम कि चुरियां पहरौरी प्यारी। लहंगा पहर औढ़ शिर सारी, हिय चौलो अरू पटिया पारी। लट लटकें नागिन सी कारी।।

(दोहा) – नैनन अंजन सारके, बेंदी लई लगाय। सब आभूषण पहरके, चित कूँ रहे चुराय।। बधै रूप मनिहारी को झोली धर लई गिरधारी। बनगये० बादामो हरी लाल गुलजार, सुनहरा दाखी है छबिदार। जडैमा नग दै रहीं बहार।।

(दोहा) – नई–नई चुरियाँ मेरी, लाई हूँ अनमोल। यहाँ कोई गाहक नहीं आई सब ब्रज डोल।। कहै विशाखा राधा सों, इक आई मनिहारी। बनगये० कहीं राधा ने लाऔ बुलाय, सखी इक चल दीनी हरषाय। संग लै आई तुरत लिवाय।।

(दोहा) – राधे नें कही हे सखी, कहा तोपै है माल। सुन सुन्दरी मनिहारी कौ, कर दऊँ तोय निहाल।। सुने प्रेम के वचन खोल, झोली धर दई अगारी। बनगये० पकर कर दाबौ मनिहारी, पीर प्यारी के भई भारी। कहें श्रीराधे बनवारी।।

(दोहा) – राधे ने कही हे सखी, लाल गये मुसक्याय। मिले परस्पर प्रेम सों, लीने कण्ठ लगाय।। "द्विज घासी" कहा कहें, जाऊँ मैं इन पै बलिहारी।। बनगये०।।

बांकडे बिहारी

360 "भजन" बांकडे बिहारी, किनी होरी को तैयारी, उत आयो बृजनारी, इत मदन गोपाल। लाल बृज बाल लाल, ओढ़ रहे श्याम लाल, नँदजी के बाल लाल, उडते गुलाल। आयौ महनो फाग जिनहोने रंग राज, बड़े सखियों के भाग। भगवान संग प्रीत, गोपी अपार कर आयी श्रृंगार, वस्त्र पहनें जरीदार, कोई श्वेत कोई पीत। राधा सुख राशी, संग ललिता विशाखा, चित्र चंपक कलासी, रंग देवी समीप, भाभा सखी आयी, तुम विद्या को ले आयी, चन्द्र लेखा के मन भायी, राग गावत धमार।।

(दोहा) – अष्ट सखिन बिच मध्य किशोरी, खेलन चली श्याम संग होरी। कोई साँवरी कोई अति गौरी कोई अति चंचल कोऊ अति भोरी।। ब्रज बरसानों धाम, जाकि सखी तमाम, आयी नंदजी के धाम, चल करत मलाल। लाल बृज लाल। इत बृजनारी उत नंद को कुमार। रंग किये सब त्यार, सखा लिये बुलाय। मधु मंगल अमानो, मनसुखा मस्तानों, तन सुख दिवानों, श्रीदामा गये आय। नंद को किशोर बड़ो, माखन को चोर, ताक रहो चहूँ ओर, लीनी सैन मिलाय। करत किलोल, बाजन लगे ढ़प ढ़ोल, बोल–बोल मृदुबोल, राग रंग रह्यो छाय।

(दोहा) – शीश मुकुट कर लकुट विराजे, मुख मुरली अधरन पर राजे। कटि करधनी पटुका छबि छाजे, निरखत बदन मदन तन बाजे।। लकुटि को धर, पिचकारी लीनी कर, तामें रंग भर–भर मारी प्यारीजी के भाल। लाल बृज लाल० इत पिचकारी, उत कोडा मारे भारी, पिचकारी भयी भारी, चले रंग के फँवार।

डगर के बीच मची केशर की कीच, सखी रही चक भीज, बाङ्यौ रंग अपार। राधे देई टेर, लेवो मोहन को घेर, सखियाँ भई सब शेर, गहे नंद के कुमार, मुरली छिनाय। वस्त्र दिये पहराय, सखी सांवरी बनाय, सब किये श्रृंगार।

दोहा–मगन महेश शेष गुण गावें, सुर नर मुनि दर्शन को आवें। सनकादिक जाको पार न पावें, जय–जय करत सुमन बरसावे। ब्रह्मा, शिव ध्यावे, जाको पार न हावे। वाको गोपियाँ नचावें दे दे गुलचा गाल।। लाल बृज लाल।।

.361 बोली सखी सब, फगुवा लेगी तोसे अब, घर जाने देगी तब, सच सुनलें तू कान। नन्द को दुलारो बोल्यो प्यारी जी सुप्यारी, हूँ तो रजियाँ तीहारो, सब सखियाँ सुजान। प्रेम के बस नहीं सके निकस, बेद पुराणों में जस, नव रस भगवान, मिट गये द्वन्द, गावे होरी के ये छन्द, लीला किनी बृजचन्द, राखे सखियों का मान।

(दोहा) – श्रीकृष्ण की लीला वरणे, सब सखियाँ गयी तेरे शरणै, भेरी मृदंग झाँझ डफ बजने तेरो निजदास, दिये बृंदाबन को बास, श्रीकृष्णजी की आस, बन रहो इनके दास।। लाल बृज लाल०।।

आचार्य चरण द्वारा ग्रन्थ – प्रणयण

श्री मदाचार्य चरणों ने पृथ्वी परिक्रमा के समय भक्ति और वैष्णचार के उपदेशक अनेक ग्रन्थों की रचना की। आपने वेद–भगवद्गीता – ब्रह्मसूत्र और श्रीमद्भागवतादि प्रमाणों के आधार पर साकार ब्रह्मवाद के सिध्दांतो का प्रकाशन भाष्य ग्रन्थों में किया और श्रीमद्भागवत पर सुबोधिनी नामक सुमधुर गंभीर व्याख्या प्रकट की। काशी के हनुमानघाट पर सं. १५८७ के अषाढ़ सुद ३ को आपने आसुर–व्यामोह लीला की। आपश्री गंगाजी में प्रविष्ट हुए और सभी के देखते देखते एक तेजों पुंज सूर्य में समा गये।

षोडशग्रन्थ

१ यमुनाष्टकम्
२ बालबोध
३ सिध्दांतमुक्तावलि
४ पुष्टिप्रवाहमर्यादा
५ सिध्दांतरहस्य
६ नवरत्न
७ अंतकरणप्रबोध
८ विवेकधैर्याश्रय
९ कृष्णाश्रय
१० चतु:श्लोकी
११ भक्तिवर्धिनी
१२ जेलभेद
१३ पंचपद्यानि
१४ सन्यास निर्णय
१५ निरोधलक्षण
१६ सेवाफल

तत्वार्थदीपनिबंध

१७ शास्त्रर्थप्रकरण
१८ सर्वनिर्णयप्रकरण
१९ भागवतार्थप्रकरण

श्रीमद्भागवत

२० सूक्ष्मटीका
२१ सुबोधिनी
२२ त्रिविधनामावलि
२३ पुरूषोत्तमनाम सहस्त्रम्
१४ दशमस्कन्धानुक्रमणिका
२५ एकादशस्कन्धानुक्रमणिका
२६ श्रृतिगीता

भाष्यत्रयी

२७ पूर्वमीमांसा भाष्य
२८ ब्रह्मसूत्राणुभाष्य
२९ गायत्रीभाष्यं
३० पत्रावलम्बनम्
३१ नन्दकुमारष्टकम्
३२ गिरीराजधार्याष्टकम्
३३ परिवृढाष्टकम्
३४ मधुराष्टकम्
३५ शिक्षाश्लोकी

-: विशेष :-

अष्ट सखा के 2500 कीर्तनों का सेट अनुवाद सहित तैयार है।

सम्पर्क करे - **भवदीय-विद्यारत्न व्यास** सदैन्य सादर
'जयश्रीकृष्ण एवं भगवत स्मरण' बृज-सौरव, आनन्द नगर,
कोठारिया रोड़, लाल बाग, नाथद्वारा जिला राजसमन्द
(राजस्थान) मो.नं. 08875321699

श्री महाप्रभुजी की 84 बैठके

1	श्रीमद् गोकुल-1	03958706171 09675613532
2	श्रीमद् गोकुल-2	09758097493
3	श्रीमद् गोकुल-3	09719281752
4	श्री वृंदावन	05651-6528028 09897979326
5	श्री मथुरा	09837016642
6	श्री मधुवन	09927484460 09319991231
7	श्री कमोदवन	
8	श्री बहुलावन	09837621850 09837626969
9	श्री राधाकृष्णकुंड	09897407556
10	श्री मानसी गंगा	09758194827
11	श्री परासोली	
12	श्री अन्योर	0565-2815547 0565-2815059 09456661810 09897849382
13	श्री गोविंद कुंड	0565-2815731 09259581794 09784316829
14	श्री सुन्दरशीला	
15	श्री गीरीराज	
16	श्री कामवन	0564-220038
17	श्री गहवर वन	09917492855
18	श्री संकेतवन	0566-2325260 09358330843
19	श्री नन्दगाम	09358758750 09917755788
20	श्री कोकीलावन	09358175274
21	श्री भांडीरवन	09719225640 09761087285
22	श्री मानसरावेन	09759182798
23	श्री सोरमघाट गंगातीर	
24	श्री चित्रकूट	09424740162 09451753530
25	श्री अयोध्या	05278232033 09415460280
26	श्री नैमिषारण्य	09935800215 09935636464
27	श्री काशी	09335485457 0933591969
28	श्री काशी हनुमान घाट	0542-2277925 09936182535 09794113411
29	श्री हरिहर क्षेत्र	0624267224 09955007128
30	श्री जनकपुर	09471484730 09905651680
31	श्री गंगा सागर	0900229684
32	श्री चंपारण्य-1	0771-2777137 0771-2777211 0771-2777121
33	श्री चंपारण्य-2	0771-2777219
34	श्री जगन्नाथपुरी	0675-2226553 09668216970
35	श्री पंढरपुर	09850157795 09422653623 09422027660
36	श्री पंचवटी नासिक	025325175 0982251588 02532514109
37	श्री पन्ना नरसिंह जी	

38	श्री लक्ष्मण बालाजी	08772277317
39	श्री रंगजी	09443949277
40	श्री विष्णुकाशी	04427269023 09894057605
41	श्री रामेश्वर	04573221685 623526
42	श्री मलयाचल	
43	श्री लोहगढ़	08322364856 09370306575
44	श्री ताम्रपर्णा नदी	
45	श्री कृष्णा नदी	
46	श्री पंपा सरोवर	
47	श्री पद्मनाभ	
48	श्री जनार्दन	9645541522 9447881224
49	श्री विद्यानगर	
50	श्री त्रिलोक भानजी	
51	श्री तोताद्री पर्वत	
52	श्री ध्रुवसेनजी	
53	श्री सूरत तापी नदी	0261-2547968 09825341025
54	श्री भरूच नमदा	02642-264660 099045223
55	श्री मोरबी	02822-240335
56	श्री जामनगर नावमती नदी	0288-2570671 0288-5545265
57	श्री खंभालिया	02833-234966
58	श्री द्वारका पिंड तारक	09426027371 09427242801
59	श्री मूल गोमती	02892-202116 09998688688
60	श्री द्वारका	02892-234825
61	श्रीर गोपी तलैया	02892-269170 09426233511
62	श्री बेट शंखोद्वार	09426027356 09974841500
63	श्री नारायण सरोवर	09925640008 02839-266631
64	श्री जुनागढ	0285-2624108 0285-2655555
65	श्री प्रभास क्षेत्र	02876-232334
66	श्री माधवपुर	0286-2272344 09898206766
67	श्री गुप्त प्रयाग	02875-269364 09824164996
68	श्री धुंधका	02713-232521 02713-232522 09825034528
69	श्री नरोडा	079-22813444 09825022187
70	श्री गोधरा	0267-240442 09898493893 09426044611
71	श्री खेलालु	02761-230130
72	श्री सिध्धपुर	09879079705 09904021415
73	श्री उज्जैन	0734-2560240
74	श्री पुष्करजी	0145-2772493 09829805457
75	श्री कुरूक्षेत्र	09813208404 09728942964
76	श्री हरिद्वार	09368231677 09897138599 09412942550
77	श्री बद्रिकाश्रम	09412155023 09411506505
78	श्री केदारनाथ	
79	श्री व्यासाश्रम	
80	श्री हिमालय	
81	श्री व्यासगंगा	
82	श्री मन्द्राचल	
83	श्री अडेल	0532-2666108 09335134029 09333736202 09616332666
84	श्री चरणाट	05443-290342 09336958097

"OK" की भाव वन्दना

आज के युग में छोटे, बड़े एवं पढ़े या बिना पढ़े सभी ओ.के. शब्द का प्रयोग करते है। अर्थ सकारात्मक प्रभु से जोड़ने वाला है। ओ.के. के अर्थ पर प्रकाश डाला गया है जिससे जीवन में आनन्द ही आनन्द होवे।

O = Only, K = कृष्ण - केवल कृष्ण से जुडना अर्थात क्रियाशील होना और क्रिया शीलता जीवन में आनन्द देती है।

O = Our, K = कृष्ण - जब कृष्ण हमारा हो जावे तो जीवन में कुछ अभाव नहीं होगा। जीवन सुखमय निश्चित रूप से हो जायेगा।

O=औंकार मय, K=कृष्ण -जब शिव याने कल्याण ही प्रभु कृष्ण से जुड जावे तो विशेष आनन्द जीवन में होगा। ओम का रंग बहुत ही विलक्षण है। सकल विश्व ही सुख मय बनेगा।

O = Online, K = कृष्ण -यदि आपका हृदय उस कृष्ण प्रभु से जुड जाता है तो ठीक जिस तरह से मोबाइल का सम्पर्क टॉवर से जुडते ही वह मोबाइल सम्पूर्ण विश्व से जुड जाता है। उसे 'वसुधैव कुटुकम्' कहा गया है। बिना आन लाइन विश्व नहीं चलता।

(1) **Our** - हमारे कृष्ण सारे विश्व के है
(2) **Operator** - (विष्णु) हैं सम्पूर्ण देवी देवताओं में
(3) **Only**- सर्व श्रेष्ठ योगेश्वर कृष्ण तो
(4) **One**-(एक) ये एक ही देव 16 कलाओं से युक्त जो कि हमेशा-हमेशा सदा आनन्द देते रहते है।
(5) **One Line** - (ब्रह्म स्वरूप कृष्ण) विश्व को चलाते है। ये
(6) **Over Lord Krishna** - हमारे स्वामी है। ये ही हमारे
(7) **Over Other Krishna** - जो हमारे पूजनीय है
(8) **Over Wership Krishna** - जो हमारे पूजनीय है
(9) **On Ward**-कृष्ण-ये देव हमारे आत्मिक शक्ति को आगे की ओर अग्रगामी बनाते है।
(10) **Ogle** - त्रिभंगीलाल भी कहा गया है।
(11) **Orphie** - सुरीला एवं मुग्ध करने वाला यंत्र
(12) **Oboe**-बाँसुरी, जब कृष्ण बजाते है तो सारे विश्व को मोहित करते है, और हम भक्ति जगत के जीव
(13) **Obtain**- प्रवृत्त होते भक्ति मार्ग का आनंद लेने हेतु।
(14) **Owe**- (ओ) कर्जदार होना - प्रभु का दिया हुआ जीवन है अतः प्रभु के हम कर्जदार है सो श्रेष्ठ जीवन जीते हुए उसी की महिमा के रंग में डूब जावे।
(15) **Offer**- कृष्ण भगवान ने हमे-ज्ञान, कर्म एवं भक्ति प्रदान की है उसे हम जीवन में उतारे।

दो शब्द

नाहं विप्रो न च नरपतिर्नापि वैश्यो न शुद्रों, नाहं वर्णी न च गृहपतिर्नो वनस्थो यतिवा।
किन्तु प्रोद्यन्निखिल परमानंद पूर्णामृताब्धे, गोंपीभर्तु : पदकमलयोर्दास दासानुदासः ।।

अर्थ : मैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, ब्रह्मचारी, गृहस्थी या सन्यासी नहीं, पर, अति उज्जवल संपूर्ण परमानंद, पूर्ण रसामृत सागर श्रीगोपीजन-वल्लभ-चरण-कमल के, दासों का दास हूँ, और नित्य लीला के भावों के लिये हूँ ।

श्रीमद्वल्लभाचार्य चरण ने वैष्णव समाज को **'प्रेम लक्षणा'** भक्ति का दान दिया है आपश्री की आज्ञा है **'सर्वदा सर्व भावेन, भजनीयो व्रजाधिपः'**, निरन्तर सब भावों से श्रीकृष्ण की सेवा करो । सेवा की व्याख्या आपश्री ने की है- **'चेतयस्तत - प्रवणता सेवा'**। चित्त को भगवान् में पिरो देना ही सेवा है। जिस की सिद्धि, तनु-वित्तजा सेवा से होती है। इस का अर्थ है कि, क्षण मात्र के लिये, श्रीकृष्ण को नहीं भूलना है। कारोबार करते समय श्रीअष्टाक्षर मंत्र (**श्रीकृष्णः शरणं मम**) का मन में उच्चारण चलता रहना चाहिये। इस आज्ञा को कार्यान्वित करने के लिये **भगवत्सेवा कीर्तन** सहित रखी है। उसी आधार पर श्रीगुसाईजी के घरानों में जो रीति देखने में आई है, का संक्षिप्त वर्णन, इस ग्रन्थ में सचयन किया गया है।

विशेषः सभी भगवत् लीलाएँ अप्राकृत, दिव्य और अलौकिक हैं। गोपिजनों में लौकिक काम की गंध भी नहीं थी । श्रृंगार-रस एवं खंडिता के पदों की शब्दावली, लौकिक काम-क्रीड़ा के समान हे। किन्तु इन में अलौकिक परलौकिक काम है। गोपिजनों में लौकिक काम का अभाव था।

आभार

''कुछ ऐसे ज्ञात या अज्ञात है जिन्हें हृदय निरन्तर याद करता है''

ग्रंथ के प्रकाशन में बहुत से महानुभावों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग रहा है। तन-मन-धन से जिन महान् पुरुषों ने मुझे चाहा, उन्हीं को इस कार्य सिद्धी का श्रेय मिलता है। छत्र की तरह जिन की कृपा मुझ पर रही, मैं उन महान् पुरुषों का हृदय से आभारी हूँ।

विद्यारत्न व्यास

प्रतिमा विद्यारत्न व्यास

हम सपरिवार बहुत बहुत आभारी है । हमारे परिवार की तरफ से
सभी वैष्णवों को सदैन्य भगवत् स्मरण एवं दण्डवत विनती होवे।

प.पू.तिलकायत महाराज द्वारा सम्मानित

लेखक की आत्मजा **सुश्री आशिता दाधीच** को जन्माष्टमी के उपलक्षय में प्रवचन देने उपरान्त **(प्रथम स्थान)** प्राप्त होने के कारण उन्हें पुरस्कार से सम्मानित किया गया दिनांक 04.09.2007

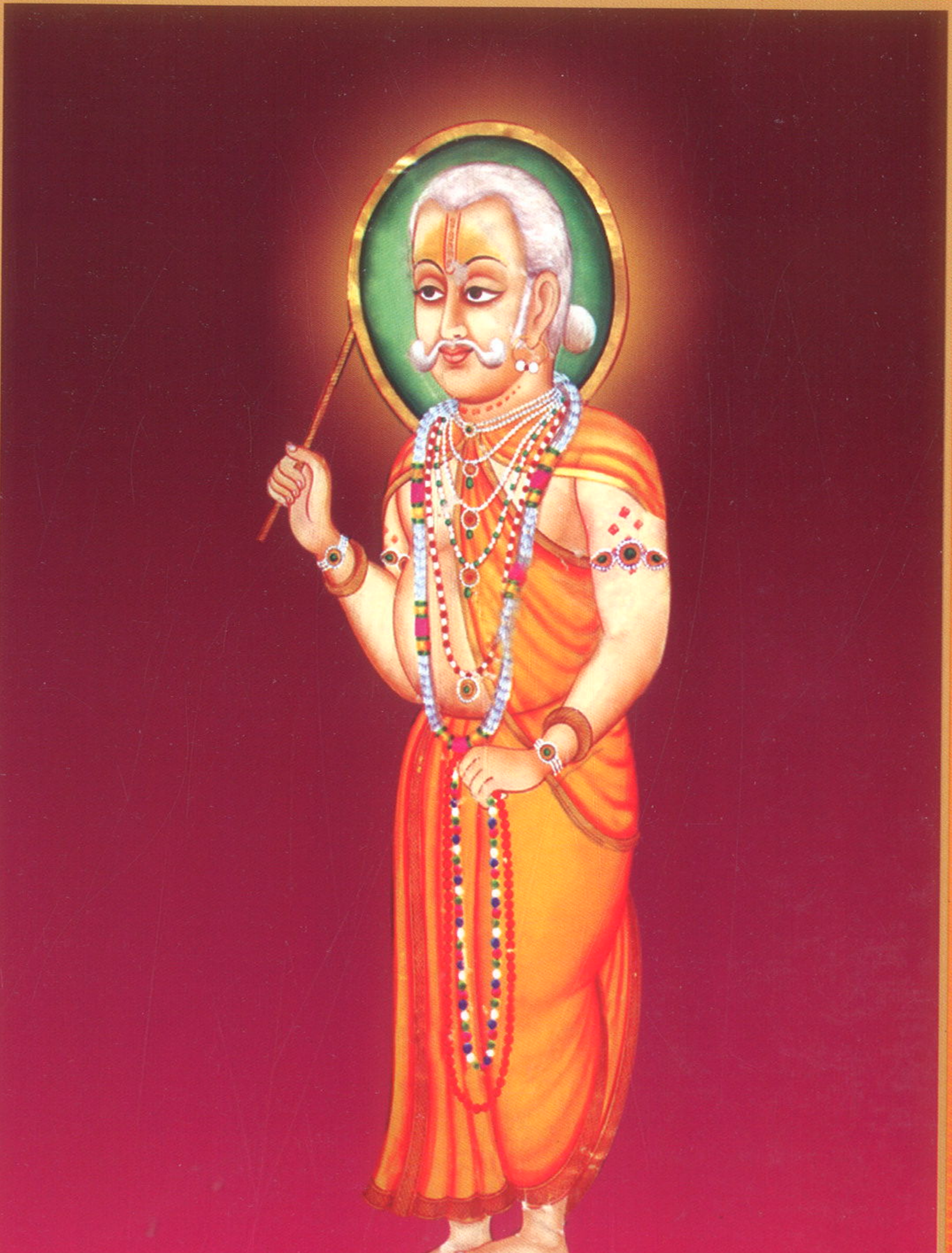

परमदयाल गोस्वामी श्री श्री 108 गुसांईजी

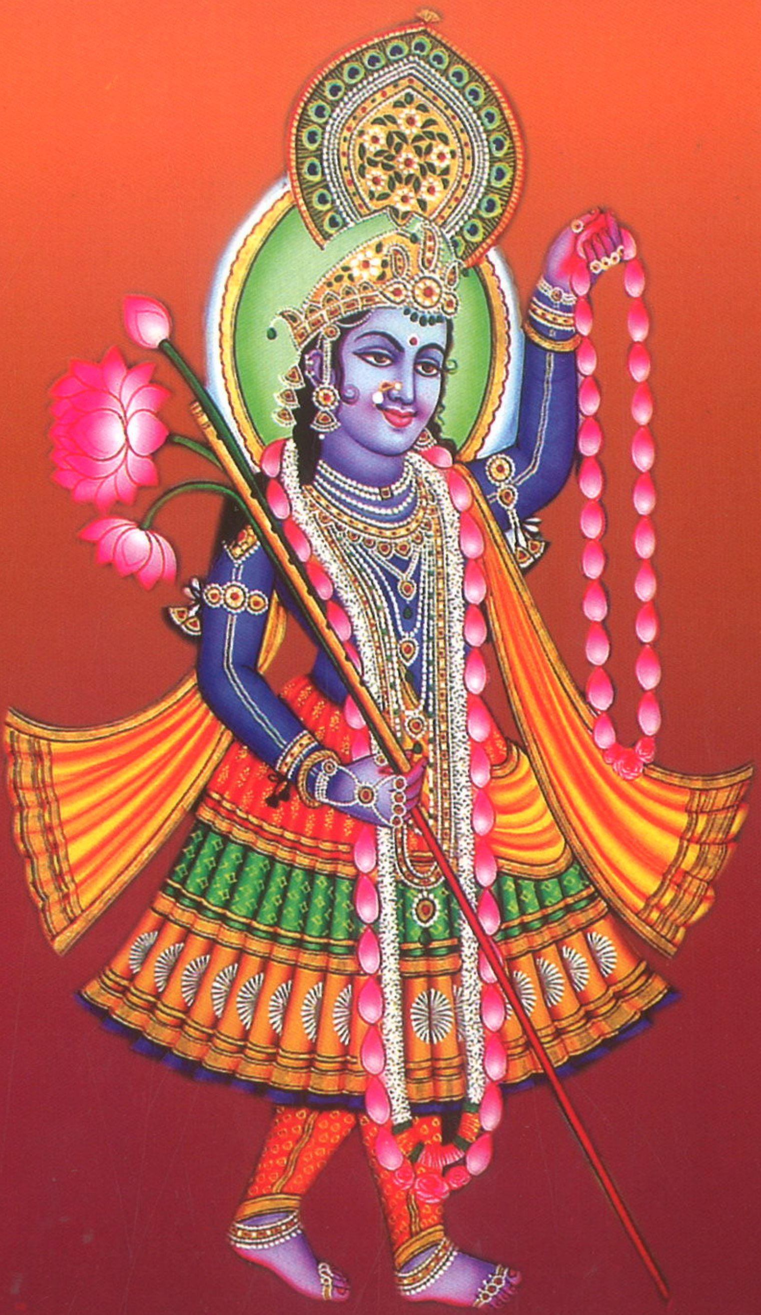

श्रीयमुना महारानी जी